www.thearyasamaj.org

।।ओ३म्।।

पाक्षिक

परोपकारी

• वर्ष ५९ • अंक ५ • मूल्य ₹१५ महर्षि दयानन्द की स्थानापन्न परोपकारिणी सभा का मुखपत्र • मार्च (प्रथम) २०१७

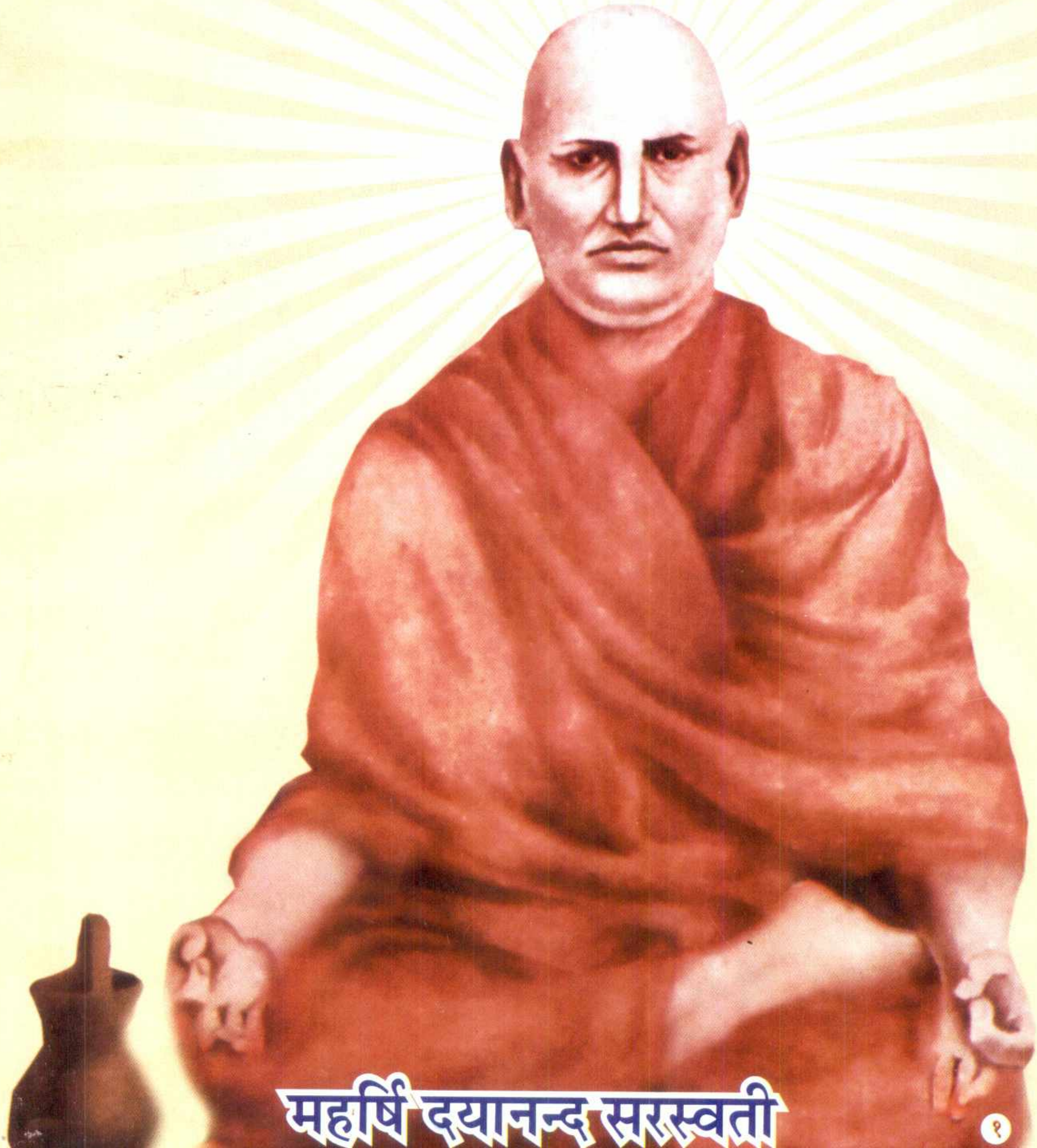

महर्षि दयानन्द सरस्वती

www.thearyasamaj.org

ब्र. रामप्रकाश आर्य को 'श्री ब्रह्मदत्त शर्मा एवं श्रीमती शकुन्तला देवी आर्ष छात्रवृत्ति' (११,००० रुपये) से सम्मानित करते हुए श्री ओममुनि वानप्रस्थी (मंत्री–परोपकारिणी सभा) एवं प्रो. राजेन्द्र 'जिज्ञासु'

ब्र. भूदेव आर्य द्वारा गुरुकुल विषय पर प्रस्तुति

www.thearyasamaj.org

महर्षि दयानन्द सरस्वती की
उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा
का मुख पत्र

वर्ष : ५९ **अंक** : ०५

दयानन्दाब्द: १९२

विक्रम संवत्: फाल्गुन शुक्ल २०७३

कलि संवत्: ५११७

सृष्टि संवत्: १,९६,०८,५३,११७

सम्पादक

डॉ. दिनेशचन्द्र शर्मा

प्रकाशक-परोपकारिणी सभा,
केसरगंज, अजमेर- ३०५००१
दूरभाष: ०१४५-२४६०१६४

मुद्रक-श्री मोहनलाल तँवर
वैदिक यन्त्रालय, अजमेर।
दूरभाष : ०१४५-२४६०८३१

-परोपकारी का शुल्क-

भारत में

वार्षिक-२०० रु., **द्विवार्षिक**-३९० रु.,
त्रिवार्षिक-५८० रु.,
आजीवन-(=१५ वर्ष)-२००० रु.।
एक प्रति - १५/- रु.

विदेश में

वार्षिक-५० यू.के. पाउण्ड/८० यू.एस.डालर
द्विवार्षिक-९५ पा./१५२ डा.,
त्रिवार्षिक-१४० पा./२२५ डा.,
आजीवन-(=१५वर्ष)-५००पा./८०० डा.
एक प्रति - ३ पाउण्ड
एक प्रति - ४ डालर

वैदिक पुस्तकालय : ०१४५-२४६०१२०
ऋषि उद्यान : ०१४५-२६२१२७०

ओ३म्

विद्याविलासमनसो धृतशीलशिक्षा:,
सत्यव्रता रहितमानमलापहारा:।
संसारदु:खदलनेन सुभूषिता ये,
धन्या नरा विहितकर्म परोपकारा:।।

RNI. No. ३९५९/५९

परोपकारी

मार्च प्रथम २०१७

अनुक्रम

०१. महर्षि दयानन्द का राष्ट्र-चिन्तन	सम्पादकीय	०४
०२. वो बात ही क्या?	सोमेश पाठक	०५
०३. कुछ तड़प-कुछ झड़प	राजेन्द्र जिज्ञासु	०६
०४. परमेश्वर का मुख्य नाम 'ओ३म्'...	आचार्य धर्मवीर	१२
०५. सत्यार्थप्रकाश प्रचार-प्रसार की भव्य योजना		१५
०६. जिज्ञासा समाधान-१२८	आचार्य सोमदेव	१६
०७. वैदिक पुस्तकालय के नये संस्करण		१८
०८. वर्तमान के परिप्रेक्ष्य में आर्यसमाज...	स्वामी सत्यप्रकाश	१९
०९. अविद्या को दूर करना ही देशोन्नति...	सत्यवीर शास्त्री	२३
१०. संस्था-समाचार	लेखराम आर्य	३०
११. आर्यसमाज - समस्या और समाधान	आचार्य धर्मवीर	३३
१२. राष्ट्र निर्माता : स्वामी दयानन्द....	हरिकिशोर	३५
१३. आर्यसमाज की आवश्यकता	उत्तमचन्द शरर	३८
१४. आर्यजगत् के समाचार		४१

www.paropkarinisabha.com
email : psabhaa@gmail.com
- उपनिषद्, दर्शन, प्रवचन आदि सुनने हेतु बटन दबाएं -
www.paropkarinisabha.com →

लेख में प्रकट किए विचारों के लिए सम्पादक उत्तरदायी नहीं है। किसी भी विवाद की परिस्थिति में न्यायक्षेत्र अजमेर ही होगा।

www.thearyasamaj.org

महर्षि दयानन्द का राष्ट्र-चिन्तन

१९ वीं शताब्दी के पुनर्जागरण आन्दोलन में महर्षि दयानन्द सरस्वती का राष्ट्र चिन्तन परवर्ती भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन के चिन्तन की आधारशिला बना। महर्षि दयानन्द के राष्ट्र-चिन्तन का आधार वेद था, जिन्हें महर्षि ने सभी सत्यविद्याओं की पुस्तक घोषित किया। किसी भी विषय के व्यापक विचार-विमर्श के बाद ही उसके क्रियान्वयन और उसके परिणाम की अभिव्यक्ति होती है और यही चिन्तन अन्त:वैश्वीकरण के रूप में युगानुरूप राष्ट्रीय आन्दोलन की बहुआयामी प्रवृत्तियों को अभिव्यक्त करता रहा है। महर्षि दयानन्द सरस्वती के समक्ष विभिन्न प्रकार की चुनौतियाँ थीं। एक ओर ब्रिटिश साम्राज्य की आधीनता, तो दूसरी ओर भारतीय समाज में आई सामाजिक और धार्मिक विकृतियाँ। महर्षि दयानन्द सरस्वती को दुधारी तलवार से सामना करना था। यह कार्य निश्चय ही एक ओर अधार्मिक, अमानवीय और अंधविश्वासी परम्पराओं को ध्वस्त करना था तो दूसरी ओर नवनिर्माण की आधारशिला पर विश्वग्राम की आधारशिला की संकल्पना को पूर्ण करना था।

महर्षि दयानन्द सरस्वती की राष्ट्रदृष्टि कालजयी तथा सकारात्मक सोच के साथ प्रतिरोध-प्रतिकार के बाद भी नवसंरचना की बुनियाद पर टिकी थी, यही कारण था कि १८७५ में आर्य समाज की स्थापना के बाद महर्षि दयानन्द ने स्वराज्य, स्वदेश और स्वभाषा का शंखनाद किया था। यद्यपि काँग्रेस की स्थापना उपर्युक्त तीनों मान्यताओं के लिए नहीं हुई थी, तथापि १९०५ में गोपाल कृष्ण गोखले ने काँग्रेस के प्रस्ताव में स्वदेशी को स्वीकार किया और १९०६ में स्वराज्य दादा भाई नौरोजी की अध्यक्षता में स्वीकार किया गया। 'स्वभाषा' (आर्य भाषा या हिन्दी) को महात्मा गाँधी ने कालांतर में काँग्रेस के प्रस्ताव में स्वीकार किया। महर्षि दयानन्द सरस्वती का यह कथन स्वदेश के प्रति उनकी तीव्र उत्कंठा को स्पष्ट करता है कि 'छ: पैसे का चाकू वही काम करता है तो सवा रुपये का विदेशी चाकू क्यों खरीदा जाये' यह कथन परवर्ती भारतीय राष्ट्रीय एवं स्वदेशी आन्दोलन का प्रबल उद्घोष बना।

महर्षि दयानन्द सरस्वती का राष्ट्र-चिन्तन आज भी उतना ही प्रासंगिक है, क्योंकि यह धर्म या सम्प्रदाय का नहीं है अपितु यह वेदों से नि:सृत मानव कल्याण का राष्ट्रशास्त्र है। जिसमें मतवाद का दुराग्रह नहीं है। जातिवाद का विध्वंसकारी मतवाद नहीं है, अपितु यह लोकतंत्र की स्वत: उद्भुत विचार-पद्धति है, जिसके विमर्श की आज महती आवश्यकता है।

आर्यसमाज के सभासदों, संन्यासियों, गुरुकुल के आचार्यों, छात्रों सभी ने राष्ट्रयज्ञ में सक्रिय भाग लिया। उन्होंने जहाँ एक ओर क्रान्तिकारी आन्दोलनों में भाग लिया, वहीं दूसरी ओर गाँधी के नेतृत्व में उनके सभी आन्दोलनों में भाग लिया।

आर्यसमाज स्वतन्त्रता से पूर्व जिन उद्देश्यों के लिए समर्पित था, स्वतन्त्रता के बाद भी उनकी महत्त्वपूर्ण आवश्यकता थी। आर्यसमाज एक सशक्त राजनैतिक संगठन के रूप में अन्य राजनैतिक दलों की तरह भले ही प्रस्तुत ना हुआ हो, लेकिन देश के विभिन्न क्षेत्रों में आर्यजन अपनी उल्लेखनीय कार्यक्षमता का परिचय दे रहे हैं।

परन्तु वर्तमान में चुनावों के समय महर्षि दयानन्द सरस्वती का राष्ट्र-चिन्तन, जिसका उल्लेख 'सत्यार्थप्रकाश' जैसी कालजयी रचना में किया गया है, के अनुरूप ही आर्यजनों को मताधिकार का प्रयोग करना चाहिये। धर्म, जाति, समुदाय या भाषा के आधार पर मत ना देने का प्रावधान जनप्रतिनिधित्व कानून की धारा १०३ (३) में दिया गया है। यदि इनके आधार पर मत देने का आग्रह किया जाता है तो उसे भ्रष्ट आचरण में रखा जाता है। अभी हाल ही में पांच राज्यों पंजाब, गोवा, उत्तरप्रदेश,

उत्तराखण्ड और मणिपुर के चुनावों के संदर्भ में सर्वोच्च न्यायालय की संविधान पीठ ने चुनाव को पंथनिर्पेक्ष प्रक्रिया मानते हुए धर्म, जाति, भाषा, क्षेत्रवाद इत्यादि के आधार पर मत देने को भ्रष्ट आचरण घोषित किया और उसे छ: वर्ष तक चुनाव लड़ने के अयोग्य करार देने का फैसला दिया गया।

महर्षि दयानन्द सरस्वती का राष्ट्र-चिन्तन हमारे मत देने के मौलिक अधिकारों को पुष्ट करता है, जिसमें वेद, भारतीय संस्कृति, भाषा, जातिविहीन समाज-व्यवस्था, छुआछूत का विरोध, भ्रष्टाचार, वंशवाद के विरुद्ध जिस राजनैतिक दल की निष्ठायें हैं, उसी दल को आर्यजन स्वविवेक से अपना मतदान करते हैं। महर्षि दयानन्द सरस्वती राजधर्म को एकांगी नहीं मानते थे अपितु उन्होंने संस्कृति के संरक्षणीय मूल्यों के परिप्रेक्ष्य में राजनीति को विवेचित किया है। पृथ्वी और स्वयं को उसका पुत्र भाव रूपी राष्ट्रधर्म की व्याख्या अथर्ववेद के शब्दों में निम्न प्रकार की गई:-

माता भूमि:पुत्रोऽहं पृथिव्या:।
पर्जन्य: पिता स उ न: पिपर्तु।

– (१२/१/१२)

सांस्कृतिक उत्थान अक्षत राष्ट्रवाद के मूल में ही संरक्षित एवं पल्लवित होता है। यही आज आर्यजनों को अभीष्ट है।

– दिनेश

वो बात ही क्या?

'धीरत्व' कर्म का आभूषण जिस क्षण बनने को आतुर हो,
वह कर्म सफलता की चोटी को तत्क्षण ही पा जाता है।
'वीरत्व' धर्म की वेदी पर जिस क्षण बढ़ने को आतुर हो,
फिर धर्म-कर्म बन जाता है और कर्म-धर्म बन जाता है।।
संसार समरभूमि है और है युद्धक्षेत्र रणवीरों का,
है कुछ रण के रणधीरों का और कुछ है **धर्म के वीरों** का।
यहाँ कुरुक्षेत्र है धर्मक्षेत्र और कर्मक्षेत्र भी धर्मक्षेत्र,
- -
है कर्मक्षेत्र यहाँ धीरों का और धर्मक्षेत्र यहाँ वीरों का।।
वो बात ही क्या जिस बात में कोई बात न हो और बात हो वो,
हर बात महज एक बात ही है गर बात में कोई बात हो तो।
इन धर्म-कर्म की बातों में एक बात छिपी है ऐसी भी,
कुछ बात हो फिर उस बात की भी
इस बात की गर कुछ बात हो तो

- सोमेश पाठक

आचार्य धर्मवीर जी के प्रति उद्‌गार

वही ऋष्युद्यान है, वही बगीचे, वही पक्षियों की चहचहाहट...

वही गगनचुंबी यज्ञशाला, वही सवेरा, वही वेद मन्त्रों की ध्वनियाँ...

वही रास्ते हैं और रास्तों पर चलने वाले भी।

वही हवाओं के झोंके, वही पेड़ों की सरसराहट और मन्द-मन्द खुशबुएँ......पर न जाने क्यूँ ये नीरस से हो गये हैं।

वही कतार में खड़े भवन कि जैसे मजबूर हैं स्थिर रहने को।

और आनासागर भी शान्त... कि जैसे रूठ गया हो और कह रहा हो कि वो आवाज कहाँ है?

जिसकी तरंग मुझमें उमंग लाती थी।

आह! सब कुछ तो वही है पर कोई है.....जो अब नहीं है।

- सोमेश पाठक

जो विद्वान् लोग परोपकार बुद्धि से विद्या का विस्तार करने, सुगन्धि, पुष्टि, मधुरता रोगनाशक गुणयुक्त पदार्थों का यथायोग्य मेल अग्नि के बीच में उनका होम कर शुद्ध वायु वर्षा का जल वा ओषधियों का सेवन करके शरीर को आरोग्य करते हैं वे इस संसार में अत्यन्त प्रशंसा के योग्य होते हैं।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.५८

www.thearyasamaj.org

कुछ तड़प-कुछ झड़प

– राजेन्द्र 'जिज्ञासु'

महर्षि दयानन्द ने एक कसौटी दे दी:- एक युवा आर्य अध्यापक ने कुछ दिन पूर्व महाभारत से जुड़ा किसी की उत्पत्ति विषयक प्रश्न चलभाष पर पूछा तो मैंने उसके प्रश्न का स्वागत करते हुए कहा कि इस शंका से आपकी सूझबूझ का परिचय मिल गया। मेरा उत्तर है कि यह कथन सृष्टि नियम विरुद्ध होने से गप्प है। यह प्रक्षेप है। यह भी बताया कि कुछ ही समय पूर्व आदरणीय सोमदेव जी ने जिज्ञासा समाधान में एक ऐसे ही प्रश्न का उत्तर दिया था। उस आर्यवीर ने पुन: वैसा ही एक और प्रश्न पूछ लिया। मैंने उसे कहा कि देहलवी जी कहा करते थे कि यदि कोई पूछे-वेद तुम्हारा धर्म ग्रन्थ है तो आप कहिये-वेद अनादि ईश्वर का अनादि ज्ञान है। ऋषि ने धर्म को समझने के लिये हमें एक और सूत्र दिया है, ईश्वर के गुण, कर्म व स्वभाव के विरुद्ध हमें कुछ भी मान्य नहीं है। किसी भी ताले को खोलना हो तो इस चाबी को लगाकर देख लो।

सन्ध्या में आता है-'यथापूर्वमकल्पयत्' अर्थात् अनादि काल से ईश्वर के सृष्टि नियम वही अनादि, नित्य व सार्वभौमिक (Eternal or Universal) हैं। इसी मन्त्र में 'विश्वस्य मिषतोवशी'-यह सारा विश्व उस ईश्वर के वश में है। उस प्रभु के ही नियम चलते हैं। किसी बाबा के, किसी पैगम्बर के बस की बात नहीं है कि भूकम्प लावे या सूर्योदय होने से रोक सके। इस चाबी से सृष्टि नियम विरुद्ध कहानियों के ताले खोला करें। इनकी व्याख्या व समाधान के लिये किसी ग्रन्थ के प्रमाण की क्या आवश्यकता?

उस आर्यवीर ने ऐसे कई प्रश्न और भी पूछे। मैंने उसे कहा कि मैं जब छठी-सातवीं कक्षा में पढ़ता था, तभी असम्भव, सृष्टि नियम विरुद्ध सब चमत्कारों का ऐसे ही प्रतिवाद किया करता था। आप इस पर विचार करें, फिर भी कोई प्रश्न है तो मार्च मास में मुझे अजमेर मिलकर आमने-सामने शंका-समाधान कर लेना।

उस सुयोग्य, लगनशील,उच्चशिक्षित आर्यवीर को बताया कि परोपकारिणी सभा 'वैदिक इस्लाम' नाम की मेरी एक पुस्तक प्रकाशित कर रही है। उसमें पढ़ लेना कि चमत्कारों पर टिका हुआ इस्लाम अब वैदिक धर्म की चौखट पर आकर खड़ा है। इस्लाम के नामी विद्वान् विचारक पं. लेखराम, पं. चमूपति से सद्ज्ञान का अमृत पान करके धर्म को, ईश्वरीय ज्ञान को, ईश्वरीय विधान को अटल मानकर चमत्कारों से इस्लाम का पिण्ड छुड़ा चुके हैं। आर्यो! जब आप सभा के इस प्रकाशन को पढ़ेंगे, पढ़ायेंगे तो ऋषि के व ऋषि की शिष्य परम्परा के उपकारों व दिग्विजय का विचार करके अभिमान से आपका सिर ऊँचा होगा। आत्मविश्वास से आपकी छाती फूलेगी।

पंकज शाह एक अथक मिशनरी:- परोपकारिणी सभा 'विश्वकीर्ति आर्य युवक पुरस्कार' से कई कर्मठ मेधावी युवकों को सम्मानित कर चुकी है। ऐसे दीवाने आर्यवीरों में विदर्भ का एक पुरुषार्थी आर्यवीर पंकज शाह है। 'कुछ तड़प कुछ झड़प' कहीं से पढ़कर आप आर्यसमाजी बन गये। दो वर्ष तक दूरभाष तक मुझे शंका-समाधान वार्तालाप करते रहे। वहाँ जाकर आर्यसमाज स्थापित किया। सभी के संरक्षण में वह पूरा वर्ष नये-नये कार्यक्रम करता ही रहता है। एक के बाद दूसरा शिविर लगाकर ग्रामों में, वनवासी भाइयों में पूरा वर्ष धर्म प्रचार करता व करवाता है।

ऐसा अद्वितीय मिशनरी आर्यसमाज का भूषण है। मान्य धर्मवीर जी भी वहाँ प्रचारार्थ गये। उसका कार्य उसकी दृष्टि देखकर उनका मार्गव्यय तो लौटाया ही, साथ ही एक सहस्र रुपये अपनी जेब से उन्हें भेंट करके उनको प्रोत्साहन दिया। मान्य सोमदेव जी ने एक शिविर के लिये अपने पास से बहुत बड़ी राशि दी। पूरा वर्ष में भी यदा-कदा आर्थिक सहयोग करता रहता हूँ। अभी हमारे श्रद्धानन्द सेवा केन्द्र ने अपने वनवासी भाइयों में एक शिविर का आयोजन किया। उसमें ७५ युवकों व कुमारों ने भाग लिया। विधर्मी बालकों ने भी सोत्साह इसमें भाग लिया। कई बार विधर्मी मातायें पंकज जी से आग्रहपूर्वक कहती हैं, "हमारे बच्चों को भी ले जाकर कुछ सिखाया करें।"

www.thearyasamaj.org

सभा-मन्त्री जी वर्ष में एक बार तो श्री भूपेन्द्र जी की भजनमण्डली को भी उनके पास भेजा करते हैं। मैं कई बार कहा करता हूँ कि पंकज शाह हमारे मन्त्री ओममुनि जी का मानस पुत्र है। अभी-अभी जो शिविर वहाँ लगाया गया, उसमें भाग लेने वाले ३० युवकों को स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज के जन्म दिवस पर पुरस्कृत करने के लिये मैं सेवा केन्द्र को उपहार स्वरूप पर्याप्त साहित्य भेज रहा हूँ। महाराष्ट्र में स्वामी श्रद्धानन्द जी (हरिश्चन्द्र गुरुजी) के पश्चात् मैंने तो यह दूसरा अथक धर्मरक्षक, धर्मवीर और धर्मप्रचारक देखा है। ऐसा दूसरा समाज और समाजी और कहाँ है?

स्वामी श्रद्धानन्द संन्यास-दीक्षा शताब्दी पर्वः- २०१७ का वर्ष हम स्वामी श्रद्धानन्द संन्यास-दीक्षा शताब्दी वर्ष के रूप में मनायेंगे। इस वर्ष को स्मरणीय बनाने के लिये परोपकारिणी सभा कार्यक्रम बना रही है। श्री धर्मवीर जी ने मेरा एक सुझाव स्वीकार कर एक प्रचार-यात्रा निकालने का निश्चय कर लिया था। मुझे कहा गया-तड़प-झड़प में इसकी घोषणा कर दो। मैंने कहा-घोषणा पहले आप या मन्त्री जी ही करें, फिर मैं कुछ लिखूँगा। अब मार्च मास में अजमेर जाकर सभा के न्यासियों के साथ विचार-विमर्श करके कोई ठोस कार्यक्रम बनाया जायेगा। यात्रा कहाँ-कहाँ की निकाली जायेगी, कितने व्यक्ति होंगे-यह सब विचार कर आर्य जनता को सूचित किया जायेगा।

दक्षिण दिशा को चल पड़ोः- हमारे परमोत्साही आर्य विद्वान् और पूज्य पं. नरेन्द्र जी के मानस पुत्र पं. प्रियदत्त जी शास्त्री ने मुझे हैदराबाद आने का निमन्त्रण दिया है। पं. नरेन्द्र जी द्वारा संग्रहीत हैदराबाद सभा के विशाल पुस्तक भण्डार को खंगाल कर अलभ्य स्रोतों व उर्दू साहित्य को देखकर-जाँचकर उसकी सुरक्षा व आर्य जाति को लाभान्वित करना है।

हैदराबाद कब जाना है-यह कुछ समय में निर्णय हो जावेगा। कर्नाटक के अमर हुतात्मा धर्मप्रकाश जी के बलिदान को ८० वर्ष होने वाले हैं। कल्याणी का समाज या कर्नाटक के आर्य कुछ करते हैं या नहीं, हम क्यों न हैदराबाद जाते हुये या हैदराबाद से कल्याणी पहुँचकर रक्तसाक्षी धर्मप्रकाश स्मृति महासम्मेलन कर दें। समाज वहाँ साथ दे तो ठीक, न दे तो चौक में समारोह हो सकता है। कल्याणी के पास ही जानावाड़ी ग्राम में हमारा शोलापुर का एक शिष्य पण्डरीनाथ एक प्रतिष्ठित नागरिक व दृढ़ आर्य है। कभी जानावाड़ी को केन्द्र बनाकर पं. गोपाल देव जी शास्त्री आर्यसमाजी नेता यहाँ 'नरेन्द्र निकेतन' की स्थापना करके क्रान्ति का शंख फूँकते रहे। जानावाड़ी में कार्यक्रम रखवाया जा सकता है। हुतात्मा धर्मप्रकाश जी तथा स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज का स्मरण करते हुए ठण्डी रगों में जमे हुए लहू को गरमाकर गति दी जा सकती है। यदि परोपकारिणी सभा आगे बढ़कर महाराष्ट्र सभा को व कर्नाटक सभा को प्रेरणा करे तो यह यात्रा स्मरणीय होगी। स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने जब अस्पृश्यता के उन्मूलन का आन्दोलन छेड़ा था, तब वे केरल, तमिलनाडु, कर्नाटक, हैदराबाद सब प्रदेशों में घूमे थे। बेलगाम में आपने जाति-रक्षा के लिए एक शिविर भी लगाया था। मैंने संकेत दे दिया है। देखें, अब हम क्या कर पाते हैं। मैं तो अपने जीवन के ८७ वें वर्ष इस यात्रा पर निकलूँगा ही। आर्यसमाज मेरी सेवाओं का लाभ उठाना चाहे तो............

आर्य पुरुषो! हुतात्मा भीमराव पटेल का हुपला ग्राम तथा घोड़ेवाड़ी ग्राम-जहाँ देश की अखण्डता के लिए हमारे वीर गोविन्द राव जीवित जलाये गये, ये स्थान भी कर्नाटक में हैं। कलंक का टीका भी आपको धोना है कि उनके सम्मान व स्मृति में वहाँ एक बार तो कुछ कार्यक्रम रखा जावे। मैं तो पहले भी इन स्थानों की फेरी डाल चुका हूँ। यह अवसर मिला है। चूको मत! चूको मत!

स्वामी श्रद्धानन्द जी पर एक अभूतपूर्व ग्रन्थः- स्वामी श्रद्धानन्द संन्यास दीक्षा शताब्दी पर चामधेड़ा समाज के उत्साही परमार्थी आर्यवीर 'शूरता की शान स्वामी श्रद्धानन्द' प्रकाशित करके आर्य जनता को भेंट करेंगे। इस ग्रन्थ का लेखन कार्य निरन्तर हो रहा है। श्री स्वामी जी पर इतना बड़ा ग्रन्थ अब तक किसी ने नहीं लिखा। इसके लेखन की प्रबल प्रेरणा श्री क्षितीशकुमार जी वेदालङ्कार ने बहुत वर्ष पूर्व लेखक को दी थी। उन्होंने स्वामी जी पर मुझसे एक लेख माँगा। 'जब महात्मा मुँशीराम को फाँसी पर लटकाया गया' लेख उन्हें भेजा। शीर्षक पढ़कर वे कुछ चौंके। फिर पूरा लेख पढ़कर झूम उठे। सब पाठकों

www.thearyasamaj.org

व विद्वानों को वह लेख बहुत अच्छा लगा। अत्यन्त प्रेरणाप्रद था। इसके कुछ दिन पश्चात् उन्हें मिलने गया तो आपने बहुत भावुक होकर कहा, ''अब तक जिन्होंने स्वामी जी के बड़े-छोटे पठनीय जीवन चरित्र लिखे हैं, उनमें से कोई भी उर्दू नहीं जानता था। तब आर्यसमाज के बड़े-बड़े पत्र उर्दू में छपते थे। उर्दू में साहित्य भी बहुत छपा। सद्धर्म प्रचारक, तेज, प्रकाश, प्रताप सब उर्दू में थे। हिन्दी लेखकों की उन तक पहुँच नहीं थी, अतः स्वामी जी के जीवन चरित्र से पूरा न्याय न हो सका। अब आपके पश्चात् उन पत्रों तक किसी की पहुँच नहीं है।''

इस करणीय कार्य को कर दीजिये, नहीं तो रहता रह जायेगा। 'सद्धर्म प्रचारक' के पहले अंक से अन्तिम अंक तब सब मेरी पहुँच में हैं। तेज आदि उस युग के कई पत्रों के उसी समय छपे बलिदान अंक तथा उस युग का स्वामी जी विषयक पर्याप्त साहित्य व अलभ्य स्रोत मेरे पास है। स्वामी जी के जीवन के अनेक प्रसंग जिनको किसी ने आज पर्यन्त छुआ ही नहीं, उनको पाठक इस ग्रन्थ में पढ़ेंगे। स्वामी जी महाराज के साथ कार्य करने वाले सैकड़ों विद्वानों, नेताओं व महात्माओं के मुख से जो कुछ सुनता रहा वह सब कुछ मुझे याद है। भूमण्डल प्रचारक मेहता जैमिनि जी चलते-फिरते इतिहास थे। उनके संस्मरणों को इस ग्रन्थ में पिरोया जायेगा। ला. सलामतराय जी, महात्मा बद्रीनाथ जी, महाशय रौनक सिंह जी, पूज्य देहलवी जी, महाशय कृष्ण जी, पं. भगवत्दत्त जी आदि सबके चरणों में बैठने का लेखक को सौभाग्य प्राप्त रहा। स्वामी जी महाराज की अन्तिम पंजाब यात्रा में उनके अन्तिम भाषण के एक श्रोता पं. रामचन्द्र (स्वामी सर्वानन्द जी महाराज) के मुख से जो कुछ सुना, अलभ्य स्रोतों से जो कुछ जाना, उसका पूरा लाभ आर्य जाति को मिलेगा।

स्वामी जी के जीवन पर लिखने व बोलने वाले चार-पाँच घटनाओं पर ही केन्द्रित रहते हैं, यथा-जामा मस्जिद की घटना, चाँदनी चौक का घण्टा घर, गाँधी जी को महात्मा बनाया, गुरुकुल की स्थापना व जलियाँवाला बाग काण्ड के बाद अमृतसर काँग्रेस का अधिवेशन, बस। स्वामी जी का अटल ईश्वर-विश्वास, श्रद्धा-भक्ति, आध्यात्मिक जीवन, कुरीति निवारण और पटियाला की अग्नि-परीक्षा पर किसी ने खुलकर लिखने पर कमर कसी क्या? प्रतीक्षा कीजिये, संन्यास-दीक्षा शताब्दी पर यह अभूतपूर्व ग्रन्थ दस्तावेज़ी प्रमाणों सहित आर्य जाति को भेंट किया जायेगा। समर्पण के शब्द भी पठनीय व विचारणीय होंगे।

आर्यनेता कृष्णचन्द्र चल बसे:- महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा के एक पूर्व प्रधान श्री कृष्णचन्द्र जी आर्य चल बसे। मेरा उनसे ५३ वर्ष से निकट का सम्बन्ध था। गुजरात यात्रा में उनसे अन्तिम भेंट के समय चरण स्पर्श करके उनका अभिवादन किया। वह कथनी करनी के धनी थे। महान् पिता श्री वेढ़ाराम जी आर्य का महान् सपूत सच्चा वेदभक्त, ऋषि का समर्पित सेनानी अपनी मीठी यादें छोड़कर हमें बिलखता छोड़ गया है। वे सिद्धान्तनिष्ठ, कर्मठ, मधुरभाषी, व्यवहार कुशल तथा दूरदर्शी आर्यनेता थे। आपने तन, मन, धन से सत्तर वर्ष समाज सेवा की। पूना में आर्यसमाज का अस्तित्व कहाँ था? श्री वेढ़ाराम जी, कृष्णचन्द्र जी सिंध से आये तो पूना वालों को आर्यसमाज के अस्तित्व का पता लगा।

दीनानगर की जगदंबा:- सृष्टिकर्त्ता एक है। वह कण-कण में है। वह हर मन में है। वह जन-जन में है। वह प्रभु जगत् के भीतर-बाहर व्यापक है। वह अखण्ड एकरस है-यह वेद, उपनिषद् सब शास्त्र बताते हैं। सब मत-पंथ कहने को यही कहते हैं कि परमात्मा एक है और कण-कण में है। ब्रह्माकुमारी जैसे कई मत इसका अपवाद हो सकते हैं। ब्रह्माकुमारी मत परमात्मा को सर्वत्र नहीं मानता।

आश्चर्य है कि फिर भी संसार में विशेष रूप से भारत में भगवानों की संख्या बढ़ रही है। मुर्दों की और मर्दों की पूजा भी बढ़ रही है। परमात्मा भोग देता है। कर्मफल का देने वाला वही तो है, फिर भी अज्ञानी मूर्ख यह मानकर अंधविश्वास फैला रहे हैं कि नदियों में स्नान से, तीर्थ यात्रा से, पाप के फल से हम बच जाते हैं। परमात्मा ने कर्मफल का अपना अधिकार नदी, नालों, समाधियों और तीर्थों को दे दिया है। विचित्र कहानियाँ सुनी-सुनाई जाती हैं। दीनानगर (पंजाब) में एक मन्दिर से हिन्दुओं की जगदम्बा की मूर्ति काजी गुलाम मुहम्मद ने उठा ली। माता ने न तो शोर

www.thearyasamaj.org

मचाया और न थाने में जाँच में सहयोग किया। काज़ी उसी मूर्ति से अपनी रसोई में मसाला पीसता रहा। जाँच करते-करते पुलिस ने उसे धर दबोचा। चालान हुआ। काज़ी पर केस चला। मनोविकार (पागल-सा) होने की आड़ में गुलाम मुहम्मद दण्ड से बच गया। यह घटना सन् १८९० के एक पत्र में छपी मिलती है, फिर भी अन्धविश्वासी हिन्दू की आँखें नहीं खुलीं। भगवानों की चोरी कौन रोके?

गीता को समझो तो:- महाराष्ट्र से किसी सुपठित युवक की एक शंका का उत्तर माँगा गया है। पहली बार ही किसी ने यह प्रश्न उठाया है। गीता में श्री महात्मा कृष्ण जी के मुख से कहा गया एक वचन है कि मैं वेदों में सामवेद हूँ। इस श्लोक को ठीक-ठीक न समझकर यह कहा गया है कि इससे तो यह सिद्ध हुआ कि शेष तीन वेदों में आस्तिक्य विचार अथवा ईश्वर का कोई महत्त्व नहीं। अन्य तीन वेदों को गौण माना गया है। वेदों का ऐसा अवमूल्यन करना दुर्भाग्यपूर्ण है। हिन्दू समाज का यह दोष है कि यह वेद पर श्रम करने से भागता है।

इसी श्लोक में तो यह भी कहा गया है कि मैं इन्द्रियों में मन हूँ तो क्या आँख, कान, वाणी, हाथ, पैर आदि ज्ञान व कर्मेन्द्रियाँ सब निरर्थक हैं? श्री कृष्ण योगी थे। योगी उपासना को विशेष रूप से महत्त्व देता है। सामवेद का मुख्य विषय उपासना होने से इस श्लोक में ''वेदों में सामवेद हूँ'' यह कहा गया है।

महाभारत युद्ध के पश्चात् यज्ञ रचाया गया तो यज्ञ का अधिष्ठाता कौन हो? इस पर वहाँ यह कहा गया है कि इस समय श्री कृष्ण के सदृश वेद-शास्त्र का मर्मज्ञ विद्वान् कोई धरती तल पर नहीं, सो उन्हीं के मार्गदर्शन में यज्ञ होना चाहिये। वे चारों वेदों के प्रकाण्ड विद्वान् तथा जानने मानने वाले थे, अत: भ्रामक विचारों से बचना चाहिये।

उसी की ही उपासना करनी योग्य है:- इस समय भारत में विशेष रूप से और पूरे विश्व में आर्यसमाज के लिए एक मुख्य कार्य एकेश्वरवाद का तथा उसकी ही उपासना का प्रचार करना है। हिन्दू पेड़, पौधों, सागर, नदियों, पशुओं, जड़ मूर्तियों सबकी उपासना करता है। ईश्वर की पूजा भी मानता है। ऋषि जी की विलक्षणता यही है कि वे ईश्वर की ही उपासना पर बल देते हैं। ईश्वर की भी उपासना करना मूर्खता व पाप तथा वेद-शास्त्र विरुद्ध है। ईश्वरेतर पूजा नास्तिकता है, अंधविश्वास व पतन है। The Art of Life in Bhagwadgeeta के विद्वान् लेखक श्री दवे ने लिखा है कि वेद-उपनिषद्काल में मूर्तिपूजा कतई नहीं थी। साने गुरुजी मूर्तियों को भोग लगना व्यर्थ मानते हैं। कबीर जी का मत सब जानते हैं। ऋषि मुनि सच्चिदानन्द के उपासक थे। अब तो देशभर में राष्ट्रीयता के नाम पर मूर्तिपूजा को बढ़ावा दिया जा रहा है। प्रभु हमारा रक्षक व पालक है। हमें उसका पालन व रक्षा करनी पड़ रही है।

जैसे वेद के वेत्ता विद्वान् लोग वेदानुकूल मार्ग से परमेश्वर को जानकर उत्तम ज्ञान से उसका सेवन करते हैं वैसे ही जगदीश्वर सब को उपासनीय अर्थात् सेवन करने के योग्य है, वैसे ज्ञान के विना ईश्वर की उपासना कभी नहीं हो सकती क्योंकि विज्ञान ही उसकी अवधि है।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.४

जो विद्या की वृद्धि के लिए पठन-पाठन रूप यज्ञकर्म्म करने वाला मनुष्य है वह अपने यज्ञ के अनुष्ठान से सब की पुष्टि तथा संतोष करने वाला होता है इस से ऐसा प्रयत्न सब मनुष्यों को करना उचित है।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ७.२७

मनुष्यों को चाहिये कि सदा यज्ञ का आरम्भ और समाप्ति को करें और संसार के जीव को अत्यन्त सुख पहुँचावें।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.६२

जब तक मनुष्य सुख-दु:ख, हानि और लाभ की व्यवस्था में परस्पर अपने आत्मा के तुल्य दूसरे को न जानते तब तक पूर्ण सुख को प्राप्त नहीं होते, इससे मनुष्य लोग श्रेष्ठ व्यवहार ही किया करें।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ५.४०

www.thearyasamaj.org

(परोपकारिणी सभा द्वारा संचालित)

योग—साधना शिविर

दिनांक : १८ से २५ जून, २०१७

आज समाज के अनेक क्षेत्रों में अनेक प्रकार से लोग साधना के लिए प्रयासरत हो रहे हैं। अनेक प्रशिक्षकों द्वारा इस विषयक ज्ञान-विज्ञान भी प्रदान किया जा रहा है। फिर भी साधकों को साधना की सन्तुष्टिदायक स्थिति प्राप्त नहीं हो पा रही है। इसका कारण है कि साधना के विषय **साध्य, साधन, साधक व अन्य साधकों-बाधकों** के ज्ञान का वैदिक परम्परा से दूर होना। इस योग-साधना शिविर में इन्हीं विषयों का वैदिक-दर्शनों के द्वारा ज्ञान करवाया जायेगा, उससे सम्बन्धित जिज्ञासाओं का समाधान व आत्मनिरीक्षण के द्वारा अपनी उन्नति का मापदण्ड बताया जायेगा। यह शिविर अवश्य ही आपकी साधना की उन्नति में विशेष साधन बनेगा, जिससे कि मानव जीवन के मुख्य व चरम लक्ष्य की प्राप्ति उत्तरोत्तर काल में आप अपने निकट अनुभव करने लगेंगे।

प्रार्थियों हेतु नियम व अनुशासन

१. प्रत्येक प्रार्थी के लिए पूर्ण मौन अनिवार्य होगा।

२. शिविर के काल में किसी साधक के द्वारा नियम व अनुशासन भंग करने पर उसे शिविर के मध्य में ही शिविर छोड़ने के लिए बाध्य किया जा सकता है।

३. पूरे शिविर में साधक के द्वारा किसी भी माध्यम से बाह्य-सम्पर्क करना निषिद्ध रहेगा।

४. शिविर काल में किसी भी साधक को ऋषि उद्यान परिसर से बाहर जाने की अनुमति नहीं होगी।

५. साधकों की मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति ऋषि-उद्यान परिसर में ही की जायेगी।

६. बाह्य-वृत्ति उत्पादक साधनों जैसे- समाचार-पत्र पढ़ना, आकाशवाणी श्रवण व दूरदर्शन देखने आदि पर पूर्ण प्रतिबन्ध रहेगा।

७. किसी प्रकार का शारीरिक रोग यथा- सर्दी, खाँसी, जुकाम अथवा अन्य कोई ध्वनि उत्पादक रोग वाले को प्रवेश नहीं दिया जायेगा।

८. बच्चों को साथ लाये जाने पर प्रार्थी को शिविर में प्रवेश नहीं दिया जाएगा।

९. किसी भी मादक द्रव्य, चाय-कॉफी आदि का सेवन निषिद्ध होगा।

१०. शिविर के प्रारम्भ दिन से लेकर समापन-सत्र पर्यन्त पूर्ण रूप से शिविर में भाग लेना अनिवार्य होगा।

११. नियम व अनुशासन के पालन को आवेदन में ही लिखित स्वीकार करना होगा।

उपरिलिखित किसी भी नियम व अनुशासन का पालन करने में असमर्थ व अयोग्य प्रार्थी को शिविर में प्रवेश नहीं दिया जायेगा।

प्रार्थियों के लिए सूचनाएँ-मन्त्री परोपकारिणी सभा, केसरगंज, अजमेर (राज.) से संपर्क कर शिविर से पूर्व शुल्क जमा करवा कर अपने नाम का पंजीयन करा लें। शिविर में माता-बहिनें भी भाग ले सकती हैं। पुरुषों एवं महिलाओं के आवास की सामूहिक व्यवस्था पृथक्-पृथक् की जाती है। पृथक् कक्ष चाहने वालों को अतिरिक्त शुल्क १००० से २००० रु. देय होता है। पृथक् कक्ष की व्यवस्था पूर्व सूचना व उपलब्धता के अनुसार की जाती है।

ऋषि उद्यान में दरी, गद्दे, तकिए एवं बर्तन उपलब्ध हैं, शेष दैनिक उपयोग की वस्तुएँ यथा मंजन, ब्रश, साबुन, तेल, दवाएँ, बिछाने-ओढ़ने की चादरें, लिखने के लिए संचिका (नोटबुक), लेखनी, करदीप (टार्च) आदि को साधक अपने साथ लाएँ। वस्त्र सादगी एवं शिष्टाचार के अनुकूल हों, आभूषणों एवं सुगन्धित द्रव्यों का उपयोग न हो। आपके पास योगदर्शन हो तो साथ लाएँ। सतर्कता की दृष्टि से कीमती वस्तुएँ साथ न लायें। यदि आपको कोई संक्रामक रोग, तेज खांसी, दमा, मिर्गी आदि मानसिक रोग, वायु विकार या अन्य गंभीर रोग हो, तो कृपया शिविर में आना स्थगित रखें। यदि अपने कार्य स्वयं न कर सकते हों तो सहायक साथ में लायें। अजमेर या निकटवर्ती स्थल (पुष्कर) देखना चाहें, तो शिविर से पूर्व या पश्चात् अतिरिक्त समय निकाल कर आयें। लौटने का रेल-आरक्षण शिविर में आने से पूर्व करवा लें। अजमेर पहुँचने की सूचना घर पर देनी हो तो शिविर स्थल में प्रवेश से पहले दे देवें। खाने पीने की वस्तुएँ साथ न लावें।

यह शिविर परोपकारिणी सभा, अजमेर के सौजन्य से आयोजित किया जा रहा है। शिविर शुल्क १००० रु. मात्र जमा करना होगा। शिविर में भाग लेने वालों को शिविर के प्रारंभ दिनांक को सायं चार बजे तक शिविर स्थल ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर में पहुँच जाना आवश्यक है क्योंकि इसी दिन शाम को शिविर के अनुशासन एवं विभिन्न व्यवस्थाओं संबन्धी महत्त्वपूर्ण सूचनाएँ दी जाएँगी। शिविर का समापन अन्तिम दिन दोपहर एक बजे तक होगा। शिविर समाप्ति से पूर्व जाने की अनुमति नहीं दी जायेगी।

शिविर से आपका जीवन श्रेष्ठतर व पवित्रतर बने, इन्हीं शुभकामनाओं के साथ।

मन्त्री, परोपकारिणी सभा, केसरगंज, अजमेर दूरभाष : ०१४५-२४६०१६४

: मार्ग :

ऋषि उद्यान शिविर स्थल पर पहुंचने के लिए फॉयसागर की ओर जाने वाली सिटी बस या ऑटो-रिक्शा, रेल्वे स्टेशन व बस स्टेण्ड से (वाया-आगरा गेट/फव्वारा चौराहा) सर्वदा सुलभ रहते हैं।

email:psabhaa@gmail.com

-संयोजक

लेखकों से निवेदन

परोपकारी में उन लेखों, कविताओं, रचनाओं को दिया जाता है, जो **मौलिक व अप्रकाशित** हों। अत: सभी लेखकों से निवेदन है कि वे अपनी उन्हीं रचनाओं को भेजें जो मौलिक व अप्रकाशित हों।

अनेक लेखक मौलिक व अप्रकाशित रचना तो भेजते हैं, किन्तु उसे एक साथ **अनेक पत्रिकाओं को भेजते हैं।** अत: लेखकों से यह भी निवेदन है कि वे कृपया परोपकारी को वे ही रचना भेजें, जो अन्य पत्रिकाओं के लिए न भेजी हो। परोपकारी में छपने के बाद यदि अन्यत्र भेजना चाहें तो यह उनकी इच्छा पर निर्भर करता है।

कृपया लेख के अन्त में अपना **पूरा पता व चल-दूरभाष संख्या अवश्य लिखें।** लेख के स्वीकृत-अस्वीकृत होने की सूचना चल-दूरभाष पर संक्षिप्त संदेश द्वारा प्रेषित कर दी जायेगी। **परोपकारिणी सभा द्वारा रचनाओं के लिए किसी प्रकार का भुगतान नहीं किया जाता है।**

रचयिता अपनी रचना की एक प्रति कृपया अपने पास रखकर भेजें, क्योंकि **अस्वीकृत रचनायें डाक द्वारा लौटाई नहीं जाती हैं।** स्वीकृत रचना परोपकारी के किसी आगामी अङ्क में देखी जा सकती है। रचना के प्रकाशन में छ: माह या अधिक समय भी लग सकता है, अत: कृपया तब तक रचना को अन्यत्र न भेजें।

-संपादक

सब व्यवहार करने वालों को चाहिये कि जो मनुष्य जिस काम में चतुर हो उसको उसी काम में प्रवृत्त करें।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.२०

www.thearyasamaj.org

परमेश्वर का मुख्य नाम 'ओ३म्' ही क्यों?

यह लेख आचार्य धर्मवीर जी द्वारा बिलासपुर (छत्तीसगढ़) में दि. २६/०६/२००१ को दिया गया व्याख्यान है, इस व्याख्यान में ईश्वर के स्वरूप और उसके नाम ओ३म् का विवेचन बड़ी ही दार्शनिक शैली से किया गया है।

-सम्पादक

ओ३म् भूर्भुवः स्वः। तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्।।

आज हम परमेश्वर के मुख्य नाम '**ओ३म्**' पर चर्चा करेंगे। बड़ा ही प्रसिद्ध नाम है। गायत्री-मन्त्र बोलते समय सबसे पहले '**ओ३म्**' शब्द आता है, पहले हम '**ओ३म्**' का स्मरण करते हैं। स्वामी जी इसका अर्थ करते हुए लिखते हैं कि ''यह परमेश्वर का मुख्य और निज नाम है।'' इसमें तीन चीजें ध्यान देने योग्य हैं- एक तो मुख्य, दूसरा निज और तीसरा है नाम। ये कोई विशेषण नहीं हैं।

सामान्यत: हम किसी से प्रश्न करते हैं कि आप कहाँ गये थे? वह कहता है कि भगवान् के दर्शन करने, लेकिन भगवान् तो कोई नाम नहीं होता, क्योंकि जो सबके साथ लगता है, वह नाम नहीं होता, सर्वनाम होता है। हम भगवान् राम कहते हैं, भगवान् कृष्ण कहते हैं, भगवती दुर्गा कहते हैं, भगवान् दयानन्द या भगवान् हनुमान कहते हैं। इस दृष्टि से देखा जाये तो सभी भगवान् हैं। समझ में नहीं आता कि आप कौन-से भगवान् की बात कर रहे हैं? आग्रहपूर्वक पूछने से पता लगा कि आप भगवान् राम की बात कर रहे हैं। जब हम राम की बात करते हैं तो राम का एक स्वरूप हमारे सामने आता है। राम की एक मूर्ति हमारे सामने आती है। उसमें एक धनुष होता है, एक ओर लक्ष्मण होता है, एक ओर सीता होती है। हमको पता चलता है कि यह राम है। बहुत सारे शब्दों के बहुत सारे अर्थ होते हैं, उन शब्दों का प्रयोग हम जब किसी प्रसंग में करते हैं, तब हमें उसका अर्थ मालूम पड़ता है। उदाहरण के लिए हम कहें कि ''खाली है''। अब बर्तन भी खाली होता है और दिमाग भी खाली होता है, लेकिन खाली होने में हमें कोई संदेह नहीं होता कि इस खाली का यहाँ पर अर्थ क्या होगा। ऐसा क्यों होता है? ऐसा इसलिए होता है कि जिस भाषा पर हमारा अधिकार है, जिस भाषा का हम अच्छी तरह प्रयोग करते हैं, जो भाषा हमें अच्छी तरह आती है, उसमें संदेह नहीं होता। लेकिन हम यदि अंग्रेजी या संस्कृत पढ़ रहे हों और उसे अच्छी तरह नहीं जानते हों तो उस शब्द का कोष में अर्थ देखना पड़ता है और जब कोष में अर्थ देखते हैं तो हमारी संगति नहीं बैठती। उदाहरण के लिए अग्नि शब्द का अर्थ स्वामी जी भगवान् करते हैं, वह हमें कुछ जमता नहीं, जँचता नहीं। कोष देखते हैं तो वहाँ पर अग्नि का अर्थ आग या फायर लिखा मिलता है। अब भगवान् अर्थ कहाँ से आ गया, यह हमारी समझ से परे है। हमें संदेह होता है कि कहीं गलती है समझने-समझाने में। इसका मुख्य कारण यह है कि हमारा भाषा पर अधिकार नहीं है, इसलिए हमारे मस्तिष्क में कोष के अर्थ आते हैं, प्रसंग के अर्थ, उस पर घटित होने वाले अर्थ नहीं आते। जब किसी शब्द के अर्थ का निर्णय करना हो तो उसके आस-पास का प्रसंग देखना पड़ता है।

जब हम यह कहते हैं कि हम राम के दर्शन करने गये थे तो राम कहने के साथ उसका चित्र हमारे मन में उभरता है, निश्चित रूप से उभरता है। जिसका चित्र उभरता है, हम उसी के दर्शन करने गये थे। उसी के बारे में हम जानते हैं कि उसका पिता दशरथ है, उसकी माता कौशल्या है, उसका भाई लक्ष्मण है, उसकी पत्नी सीता है, वह अयोध्या का राजा है, उसका रावण के साथ युद्ध हुआ था। इसके अतिरिक्त और कोई बात हमारे ध्यान में नहीं आती। हाँ, राम नाम के बहुत से लोग हैं, वह याद आ सकते हैं, जैसे- परशुराम इत्यादि, किन्तु यदि हम केवल राम कहते हैं या दशरथ, सीता, अयोध्या से सम्बन्धित राम कहते हैं तो हमें केवल एक ही राम याद आता है। राम भगवान् है, इसमें कोई दो राय नहीं हैं, किन्तु हम जिस अर्थ में मानते हैं, केवल उस अर्थ में। जब हम भगवान् कहते हैं तो उसका अर्थ उस चित्र में घटना चाहिए।

हम भगवान् को ऐसा मानते हैं कि वह सब जगह है, सबका है लेकिन राम कहने पर ऐसा होता नहीं है। भगवान्

www.thearyasamaj.org

कहने से जो रूप सामने आता है, राम कहने से उससे भिन्न रूप सामने आता है, हरि कहने से उससे भिन्न रूप ध्यान में आता है। दुनिया में जितने भी व्यक्ति हुए हैं, उनका कोई नाम अवश्य है। हमें एक बात और ध्यान में रखनी चाहिए कि बिना नाम के हमारा व्यवहार नहीं चल सकता। दुनिया में कुछ भी हो, सभी का कुछ न कुछ नाम अवश्य है। दुनिया की किसी भी वस्तु का, चाहे वह वास्तविक हो या काल्पनिक, भूत हो या भविष्य, जड़ हो या चेतन, हमें उसका नाम रखना ही पड़ता है। नामकरण करने के बाद उसे हम व्यवहार में ला सकते हैं और नाम क्योंकि आरोपित है, अर्थात् हमने अपनी मर्जी से चस्पा कर रखा है, जैसे कोर्ट का आदेश किसी दुकान में चस्पा रहता है तो पता चलता है कि इसकी नीलामी होने वाली है, इससे पहले मालूम नहीं पड़ता। वैसे ही हम किसी पर नाम चस्पा करते हैं, यदि ऐसा नहीं होता तो हमारे पैदा होने के साथ हमारा कुछ नाम अवश्य होता। नाम हमारी मर्जी का होता है। गरीब का हम अमीरदास नाम रख सकते हैं, करोड़पति का गरीबदास नाम रख सकते हैं, क्योंकि यह हमारी मर्जी से चलता है। तो नाम हमारे द्वारा दिया गया है और हमारी मर्जी से चलता है, लेकिन यदि हम परमेश्वर को नाम दें तो क्या हो? क्योंकि अक्सर यह देखा गया है कि नाम देने वाला पहले होता है, जिसका नाम रखा जाता है, वह बाद में होता है। अब कल्पना करें कि राम को किसी ने नाम दिया, किसने दिया? दशरथ ने दिया, विश्वामित्र ने दिया, वशिष्ठ ने दिया और ये राम से पहले हुए, राम इनके बाद है। इससे साफ है कि जिसका नाम रखा, वह बाद में हुआ और जिसने नाम रखा, वह पहले हुआ। क्या भगवान् ऐसा है? **ओ३म्** नाम क्या हमने रखा है? इसका उत्तर स्वामी जी ने दिया कि यह निज नाम है, उसका अपना नाम है, क्योंकि वह हमारे बाद में नहीं हुआ है, बल्कि हम बाद में हुए हैं। निज उसका अपना है और वह पहले से है। जब कभी हम एक दूसरे को मिलते हैं तो नाम बतलाना पड़ता है, क्योंकि बिना बतलाए तो समझ में नहीं आता है, तो परमेश्वर को भी अपना नाम बतलाना होगा और वह नाम कहाँ बतलाया है? उसके तो बतलाने का एक ही शास्त्र है, वह है वेद। **''ओ३म् खं ब्रह्म।'' ''ओ३म् क्रतोस्मर।''** ऐसा कई जगह बतलाया है। वेद में आया है कि उसका नाम ओ३म् है और ओ३म् नाम केवल उसका है, क्योंकि ओ३म् कहते ही हमें राम की तरह, हनुमान की तरह कोई मूर्ति ध्यान में नहीं आती। आ सकती है, बशर्ते कि हम किसी मूर्ति के ऊपर ओ३म् लिखकर चिपका दें और हम उसके दर्शन करते रहें तो हमें शायद यह भ्रम हो जाये कि यह ओ३म् है, लेकिन इतिहास में ऐसा अब तक हुआ नहीं है। एक बात हमारे समझने की है कि राम कहने से एक चित्र ध्यान में आया, शिव कहने से दूसरी घटना ध्यान में आई अर्थात् दुनिया के जितने देवी देवता हैं, जिन्हें हम भगवान् मानते हैं, उन सबका एक विशेष चित्र है और वह दूसरे से भिन्न हैं। दोनों का स्टेटस, दोनों की स्थिति, दोनों की शक्ति, सामर्थ्य, योग्यता यदि एक है, तो उनके अलग-अलग चित्र क्यों हैं?

अलग-अलग चित्र हैं, अलग-अलग इतिहास है, अलग-अलग स्थान है। इसका मतलब उनकी अलग अलग सत्ता है तो यह अलग-अलग होना जो है, वह हमारी समस्या का हल नहीं है। उनका कभी होना और कभी नहीं होना, यह समस्या का हल नहीं करता। वकील मुझे सुलभ है, डॉक्टर मुझे सुलभ है तो वह मेरे काम आता है। मैं बीमार हूँ, मेरा डॉक्टर बाहर गया है तो मेरे काम नहीं आता है। मेरी पेशी है, मेरा वकील छुट्टी पर है तो मेरा काम नहीं चलता है। भगवान् ऐसा चाहिए जो कभी मेरे से दूर न हो, मेरे से अलग न हो, मेरे से ओझल न हो, लेकिन ये जितने देव हैं, जितने भगवान् हैं, जितने मान्यता के पुरुष हैं, ये सब किसी समय में रहे हैं, उनसे पहले नहीं थे और उनके बाद नहीं हैं। उन सबकी मृत्यु कैसे हुई, कब हुई, उसका एक इतिहास हम पढ़ते, सुनते, जानते हैं, इसलिए उसका नाम शिव है। वह भगवान् विशेषण के साथ तो भगवान् है, किन्तु शिव अपने-आपमें भगवान् नहीं है। राम विशेषण के साथ तो भगवान् है, लेकिन राम रूप में भगवान् नहीं है, इसलिए यह बात बड़ी सीधी-सी है। फिर ओ३म् का इससे क्या अंतर है, यह सोचने की बात है। इसके आगे स्वामी जी कहते हैं कि यह मुख्य नाम है। यदि बहुत सारे हों, तब उनमें से किसी को मुख्य किसी को गौण, किसी को आम, किसी को खास कह सकते हैं। यदि एक

www.thearyasamaj.org

ही हो तो खास नहीं कह सकते। किसी के एक से ज्यादा नाम हो भी सकते हैं, ऐसा देखने में भी आता है।

हम घर में बच्चे को किसी नाम से पुकारते है, स्कूल में दूसरे नाम से पुकारते हैं। उन नामों को हम परिस्थिति से, गुणों से, सम्बन्धों से रखते हैं, लेकिन जब उसका नाम पूछा जाता है तो वह यह नहीं कहता कि मेरा नाम मामा जी है या चाचा जी है। वह बोलता है कि मेरा नाम अमुक है, जो उसका रजिस्टर में है, जो उसका स्कूल में है, जो निर्वाचन की नामावली में है, जो उसका सरकारी कागजों में है, उसको हम नाम कहते है, तो परमेश्वर के भी बहुत सारे नाम हो सकते हैं और इतने सारे हो सकते हैं कि हम परमेश्वर को कभी जड़ बना लेते हैं, कभी चेतन भी बना लेते हैं, कभी मूर्ति भी बना लेते हैं। जब कभी हम बहुत भक्ति के आवेश में होते हैं, तो एक श्लोक पढ़ा करते हैं - **त्वमेव माता च पिता त्वमेव, त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव। त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव, त्वमेव सर्वं मम देव देव।** उसे माँ भी कहते हैं, उसे पिता भी कहते हैं, उसे बन्धु, सखा सभी कहते हैं, अर्थात् जितने सहायता के कारण हैं उनसे उसे पुकारते हैं, इसलिए यह कहना पड़ा कि परमेश्वर का मुख्य नाम ओ३म् है। स्वामी जी ने सत्यार्थ प्रकाश में लगभग १०८ नामों की चर्चा की है और उन्होंने यह कहा है कि यह तो समुद्र में बूँद जैसा है, अर्थात् जितनी वस्तुएँ इस दुनिया में हैं, उनके जितने गुण-धर्म हो सकते हैं, उनकी योग्यता, उसका स्वरूप हो सकता है, वह सबके सब परमेश्वर में हैं, इसलिए वह सारे शब्द परमेश्वर के वाचक हो सकते हैं, लेकिन उसका मुख्य नाम ये सब नहीं हो सकते। राम उसका नाम हो सकता है, गणेश उसका नाम हो सकता है, लेकिन उसका मुख्य नाम और एक ही नाम यदि कोई हो सकता है तो वह ओ३म् ही हो सकता है। इसका पहला प्रमाण हमें वेद से मिलता है, दूसरा प्रमाण हमें वेद के बाद के ग्रन्थों से मिलेगा। वेद के बाद के ग्रन्थ को हम शास्त्र कहते हैं, उपनिषद् कहते हैं, दर्शन कहते हैं, आरण्यक कहते हैं। सभी उपनिषदों में इसकी पर्याप्त चर्चा है।

कठोपनिषद् में इसकी विशेष चर्चा है। कठोपनिषद् में जो चर्चा है, उसमें मुख्य बात यह है कि नाम के साथ उसका रूप भी घटना चाहिए। हमारे नाम और रूप, गुण इत्यादि में सम्बन्ध नहीं होता, लेकिन परमेश्वर में एक विशेष बात है- उसका नाम, जो उसने स्वयं रखा है, वह हमारी तरह अवैज्ञानिक नहीं होगा, अनपढ़ों जैसा नहीं होगा, अनुचित-सा नहीं होगा अर्थात् बहुत अच्छा होगा। नाम के बारे में एक बार किसी ने शोध किया कि आर्यसमाज से पहले कैसे नाम रखे जाते थे और बाद में कैसे रखे जाते गये, उदाहरण के लिए मिर्चूमल, पंजमल, कोट्टूमल इत्यादि, किन्तु ऐसे लोगों का जब आर्यसमाज के साथ सम्बन्ध बना तो ये लोग वेदप्रकाश, धर्मप्रकाश इत्यादि नाम लिखने लगे।

स्वामी जी ने एक जगह लिखा है कि हम गुणों से भ्रष्ट हो गये तो कोई बात नहीं, किन्तु नाम से तो न हों। परमेश्वर के नाम में यह विशेषता होनी चाहिए कि वह और उसके गुण समान हों।

मनुस्मृति में लिखा है कि इस दुनिया में सबसे अन्त में मनुष्य पैदा हुआ, क्योंकि मनुष्य सबसे मुख्य है। जो मुख्य होता है, वह सबसे अन्त में आता है। किसी समारोह में मुख्य अतिथि पहले नहीं आता है, यदि आ जाता है तो गड़बड़ हो जाती है। एक समारोह में मुख्य अतिथि पहले आ गये तो मंत्री जी बोले- यह तो गड़बड़ हो गया, आप ऐसे कैसे आ गये? वह बोले- आ गये तो आ गये। मंत्री बोले-ऐसे नहीं होगा, हमारे जुलूस का क्या होगा? हम आपको फिर दोबारा लेकर आयेंगे।

मनुष्य इस संसार में सबसे बाद में आया है, सबसे मुख्य है, और क्योंकि मुख्य है, इसलिए उसका संसार से मुख्यता का सम्बन्ध है। एक प्रकार से सारा संसार उसके लिए ही है। इसे हम यदि ध्यान में रखेंगे तो हमें सारा विचार, सारा दर्शन समझ में आ जायेगा।

शेष भाग अगले अंक में.....

अग्नि और जल संसार के सब व्यवहारों के कारण हैं, इस से गृहस्थजन विशेष कर अग्नि और जल के गुणों को जानें और गृहस्थ के सब काम सत्य व्यवहार से करें। - महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.२४

वैचारिक क्रान्ति हेतु सत्यार्थप्रकाश व ऋषि जीवन-चरित्र प्रचार-प्रसार की भव्य योजना

विचार किसी भी देश, समाज व जाति की अमूल्य निधि (सम्पत्ति) है। जिसके पास में ठोस श्रेष्ठ विचार नहीं या फिर विचार को फैलाने के साधन नहीं हैं या फिर जो व्यक्ति, समाज व राष्ट्र अपने विचारों की अवहेलना करते रहते हैं, उनका अस्तित्त्व भी एक दिन समाप्त प्राय: हो जाता है। आज हर सम्प्रदाय, समाज, समूह व देश अपने विचारों का प्रचार-प्रसार बड़ी प्रबलता से हर क्षेत्र में व हर साधन से कर रहा है, लेकिन काफी समय से आर्यसमाज में वैचारिक शिथिलता देखी जा रही है। इस शिथिलता को दूर करने का मात्र एक ही उपाय है कि हम सभी आर्य जन ऋषि दयानन्द सरस्वती कृत **अमर ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश व ऋषि जीवन चरित्र का प्रचार नये शिक्षित लोगों में करें।** इन्हीं तथ्यों को ध्यान में रखकर सभा के माध्यम से अन्तर्राष्ट्रीय पुस्तक मेला दिल्ली में वर्ष २०१४ से लगातार इन ग्रन्थों का नि:शुल्क वितरण किया जा रहा है। प्रचार-प्रसार की योजना तैयार की गयी है।

सत्यार्थप्रकाश ही क्यों?-१. यदि कोई व्यक्ति, समाज, समूह, संस्था या राष्ट्र एक ग्रन्थ (पुस्तक) पढ़कर विस्तृत ज्ञान प्राप्त करना चाहे तो यह सत्यार्थप्रकाश से ही सम्भव है। २. आज के दूषित वातावरण में वैदिक वाङ्मय को ठीक-ठीक जानने हेतु, पढ़ने-पढ़ाने हेतु प्रथम सत्यार्थप्रकाश और महर्षि के अन्य ग्रन्थों का पढ़ना-जानना अत्यन्त आवश्यक है। ३. दर्शनशास्त्र, इतिहास, भारतीय परम्परा, कर्त्तव्य, धर्म-अधर्म, उचित-अनुचित, न्याय-अन्याय, सत्य-असत्य तथा मानवता आदि क्या हैं? - यह सारी जानकारी सत्यार्थप्रकाश से प्राप्त होती है व होगी। ४. पाखण्ड, मक्कारी, कुरीतियों व बुराइयों का नाश भी सत्यार्थप्रकाश से सम्भव है। ५. सत्यार्थप्रकाश व ऋषि के अन्य ग्रन्थों की उपस्थिति में कोई विधर्मी अपनी शेखी नहीं मार सकता तथा किसी भी हिन्दू को बहकाकर विधर्मी नहीं बना सकता। ६. सत्यार्थप्रकाश के प्रभाव ने न जाने कितनों का जीवन ही बदल डाला। सत्यार्थप्रकाश के जोड़ की दूसरी पुस्तक दुर्लभ है, जिसमें ज्ञान का अमूल्य खजाना भरा पड़ा है। इसलिए इसका प्रचार-प्रसार अनिवार्य है, जरूरी है। **योजना का विवरण निम्न प्रकार का होगा**-१. सत्यार्थप्रकाश हिन्दी में आकार लगभग ६०० पृष्ठ व साईज डिमाई आकार में होगा। लागत मूल्य १००/- रुपये प्रति पुस्तक। २. ऋषि जीवन चरित्र हिन्दी में लगभग १६४ पृष्ठ व साईज डमई आकार में। लागत मूल्य ६०/- रुपये प्रति पुस्तक। ३. महर्षि द्वारा रचित पुस्तक आर्याभिविनय हिन्दी में ६४ पृष्ठ व साइज डिमाई आकार में, लागत मूल्य ३०/- रु. प्रति पुस्तक।

नोट-यह साहित्य वैचारिक क्रान्ति के लिए व वैदिक धर्म प्रचार-प्रसार के लिए गैर आर्यसमाजी सज्जनों व संस्थानों आदि को नि:शुल्क या अल्प मूल्य में वितरित किया जायेगा। साहित्य का ठीक-ठीक उपयोग हो व योग्य शिक्षित विचारवान् व्यक्तियों तथा संस्थानों तक पहुँचे इसके लिए अच्छी वितरण व्यवस्था की जाएगी। योग्य प्रशिक्षित कार्यकर्ताओं का चयन कर कार्य में नियुक्त किया जायेगा। प्रत्येक व्यक्ति, संस्था आदि से एक फार्म भरवाया जायेगा, जिसमें उनका पूर्ण पता सम्पर्क आदि हो, जिससे भविष्य में परिणाम का मूल्यांकन किया जा सके। ग्रन्थों की प्रामाणिकता, शुद्धता व साज-सज्जा सुन्दरता का विशेष ध्यान रखा जायेगा। इस प्रचार-प्रसार योजना का उद्देश्य सत्यार्थप्रकाश व महर्षि के जीवन-चरित्र के प्रचार-प्रसार के माध्यम से मानव मात्र का कल्याण करना है। यह प्रचार-प्रसार मुख्य रूप से शिक्षित गैर आर्यसमाजी लोगों के लिए होगा। यह कार्य पूर्णरूप से महर्षि के मन्तव्यों के अनुरूप हो इसका विशेष ध्यान रखा जायेगा। इस कार्य की सफलता के लिए सभी आर्यजनों से, समाजों से व संस्थानों से निवेदन है कि इस महान् कार्य में तन-मन-धन से अपना सहयोग करने व अपने इष्ट मित्रों को भी सहयोग करने की प्रेरणा करें।

नोट-अपना आर्थिक सहयोग आप परोपकारिणी सभा अजमेर के नाम प्रेषित करते समय **सत्यार्थप्रकाश प्रचार-प्रसार शीर्षक** अवश्य लिखें। धन प्रेषित करने हेतु आप चैक, ड्राफ्ट व सीधे राशि सभा के बैंक खाते में जमा करवाकर जमा पर्ची की प्रतिलिपि प्रेषित कर देवें या फिर ईमेल, दूरभाष द्वारा सूचित कर सकते हैं। धन्यवाद।

खाता धारक का नाम-**परोपकारिणी सभा, अजमेर।**
१. बैंक का नाम-**भारतीय स्टैट बैंक,** डिग्गी बाजार, अजमेर।
बैंक खाता संख्या-**10158172715**
IFSC-SBIN0007959

२. बैंक का नाम-**आई.डी.बी.आइ,** पावर हाऊस के सामने, जयपुर रोड, अजमेर।
बैंक खाता संख्या-**091104000057530**
IFSC-IBKL0000091
email : psabhaa@gmail.com

नोट : इस योजना हेतु दिया गया दान आयकर की धारा ८० जी के अन्तर्गत कर मुक्त होगा।

सम्पर्क : मन्त्री, परोपकारिणी सभा, अजमेर

www.thearyasamaj.org

जिज्ञासा समाधान - १२८

- आचार्य सोमदेव

जिज्ञासा १- ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका में लिखा है कि सृष्टि के प्रारम्भ में हजारों-लाखों मनुष्य परमात्मा ने अमैथुन से पैदा किये थे। यही सत्यार्थ प्रकाश में भी माना है। उन लाखों मनुष्यों में चार ऋषि भी पैदा हुये जो अग्नि, वायु, आदित्य और अंगिरा थे। उनको परमात्मा ने एक-एक वेद का ज्ञान दिया था। उस काल में स्त्रियाँ भी पैदा हुई होंगी, परन्तु परमात्मा ने एक या दो स्त्रियों को भी वेद का ज्ञान क्यों नहीं दिया? क्या परमात्मा के घर से भी स्त्रियों के साथ पक्षपात हुआ? इसका समाधान करें।

(२) दूसरा प्रश्न है कि परमात्मा का गौणिक नाम ब्रह्मा क्यों है? क्योंकि ब्रह्म शब्द बहुवाचक है, जबकि ईश्वर एक है और ऋषि का नाम भी ब्रह्मा आया है, वह भी एक ही मनुष्य था। अग्नि, वायु, आदित्य और अंगिरा ऋषियों को ब्रह्मा नाम देने में क्या दोष है, क्योंकि वे सबसे महान् भी थे और यथार्थ में एक से अधिक भी थे।

-रामप्रसाद आर्य, ग्राम राजवाड़ा, तहसील मुण्डावर, जिला अलवर, राज.।

समाधान-(क) वेद परमात्मा का पवित्र ज्ञान है। यह वेदरूपी पवित्र ज्ञान मनुष्य मात्र के लिए है। वेद मनुष्य मात्र का धर्मग्रन्थ है। सृष्टि के आदि में परमेश्वर ने सभी मनुष्यों के लिए यह ज्ञान दिया। वेद का ज्ञान परमात्मा ने ऋषियों के हृदयों में दिया। चार वेद चार ऋषियों के हृदय में प्रेरणा कर के दिये। ऋग्वेद अग्नि ऋषि को, यजुर्वेद वायु नामक ऋषि को, सामवेद आदित्य ऋषि को और अथर्ववेद अंगिरा ऋषि को प्रदान किया। आपकी जिज्ञासा है कि वेद का ज्ञान ऋषियों (पुरुषों) को ही क्यों दिया, एक-दो स्त्री को क्यों नहीं दिया? इसका उत्तर महर्षि दयानन्द ने जो लिखा वह यहाँ लिखते हैं-''**प्र.**- ईश्वर न्यायकारी है वा पक्षपाती? **उत्तर**- न्यायकारी। **प्र.**- जब परमेश्वर न्यायकारी है, तो सब के हृदयों में वेदों का प्रकाश क्यों नहीं किया? क्योंकि चारों के हृदय में प्रकाश करने से ईश्वर में पक्षपात आता है।

उत्तर- इससे ईश्वर में पक्षपात का लेश (भी) कदापि नहीं आता, किन्तु उस न्यायकारी परमात्मा का साक्षात् न्याय ही प्रकाशित होता है, क्योंकि 'न्याय' उसको कहते हैं कि जो जैसा कर्म करे, उसको वैसा ही फल दिया जाये। अब जानना चाहिए कि उन्हीं चार पुरुषों का ऐसा पूर्व पुण्य था कि उनके हृदय में वेदों का प्रकाश किया गया।'' - ऋ.भा.भू.

''**प्रश्न**-उन चारों ही में वेदों का प्रकाश किया, अन्य में नहीं, इससे ईश्वर पक्षपाती होता है।

उत्तर-वे ही चार सब जीवों से अधिक पवित्रात्मा थे। अन्य उनके सदृश नहीं थे, इसलिए पवित्र विद्या का प्रकाश उन्हीं में किया।'' - स.प्र. ७

महर्षि के वचनों से स्पष्ट हो रहा है कि परमात्मा पक्षपाती नहीं, अपितु इन चारों को वेद का ज्ञान देने से परमेश्वर का न्याय ही द्योतित हो रहा है। यदि इन चार ऋषियों जैसी पुण्य-पवित्रता किसी स्त्री में होती तो परमात्मा स्त्री को भी वेद का ज्ञान दे देता। परमात्मा तो योग्यता के अनुसार ही फल देता है। पक्षपात कभी नहीं करता। जिस आत्मा के पुरुष शरीर प्राप्त करने के कर्म हैं, उसको पुरुष और जिसके स्त्री बनने के कर्म हैं उसको स्त्री का शरीर देता है।

वेदों का ज्ञान ऋषियों को दिया, स्त्रियों को नहीं- इससे यह बात भी ज्ञात हो रही है कि स्त्री का शरीर पुरुष शरीर की अपेक्षा कुछ कम पुण्यों का फल है। अर्थात् अधिक पुण्यों का फल पुरुष शरीर और उससे कुछ हीन पुण्यों का फल स्त्री शरीर। परमेश्वर की दृष्टि में सब आत्मा एक जैसी हैं, आत्मा-आत्मा में परमेश्वर कोई भेद नहीं करता, किन्तु कर्मों के आधार पर तो भेद दृष्टि रखता है।

स्त्री-पुरुष दोनों बराबर हैं, बराबर का अधिकार होना चाहिए। यह इस रूप में उचित है कि दोनों अपनी उन्नति करने में स्वतन्त्र हैं, मुक्ति के अधिकारी दोनों बराबर है, ज्ञान प्राप्त करने में दोनों समान रूप से अधिकारी हैं, दोनों

www.thearyasamaj.org

काम करने में स्वतन्त्र हैं। परमेश्वर ने यह सब दोनों को समान रूप से दे रखा है, किन्तु शरीर की दृष्टि से तो भेद है ही। संसार में भी पुरुष के शरीर में अधिक सामर्थ्य देखने को मिलता है, स्त्री शरीर में कम (किसी अपवाद को छोड़कर)। पुरुष को अधिक स्वतन्त्रता है, स्त्री को कम स्वतन्त्रता है। मनुष्य समाज ने अन्यायपूर्वक स्त्रियों पर जो बन्धन लगा रखे हैं, उस परतन्त्रता को यहाँ हम नहीं कह रहे। जो परतन्त्रता प्रकृति प्रदत्त है, वह स्त्रियों में अधिक है पुरुष में कम। यह प्रकृति प्रदत्त स्वतन्त्रता-परतन्त्रता हमारे कर्मों का ही फल है, पुण्यों का फल है। जिसके जितने अधिक पुण्य होते हैं, परमात्मा उसको ज्ञान, बल, सामर्थ्य, साधन सम्पन्नता अधिक देता है और जिसके पुण्य न्यून होते हैं, उसको ये सब भी कम होते चले जायेंगे।

ज्ञान का मिलना भी हमारे पुण्यों का फल है, इसलिए वेदरूपी पवित्र ज्ञान पक्षपात रहित न्यायकारी परमात्मा ने आदि सृष्टि में उत्पन्न हुए सबसे पुण्यात्मा पवित्र चार ऋषियों को ही दिया अन्यों को नहीं।

(ख) आपकी यह दूसरी जिज्ञासा भाषा को न जानने के कारण है। यदि संस्कृत भाषा को ठीक जान रहे होते तो ऐसी जिज्ञासा न करते। 'ब्रह्मा' शब्द एक वचन में ही है, बहुवचन में नहीं। ब्रह्म शब्द नपुंसक व पुलिंग दोनों में होता है। नपुंसक लिंग में ब्रह्म और पुलिंग में ब्रह्मा शब्द है। यह ब्रह्मा प्रथमा विभक्ति एक वचन का है। मूल शब्द ब्रह्मन् है, राजन् के तुल्य। ब्रह्मन् शब्द का बहुवचन ब्रह्मण: बनेगा, इसलिए ब्रह्मा शब्द को जो आप बहुवचन में देख रहे हैं सो ठीक नहीं। परमात्मा एक है, इसलिए उसका गौणिक नाम ब्रह्मा एक वचन में ही है। जब यह शब्द एक वचन में ही है तो इससे अग्नि, आदित्य आदि बहुतों का ग्रहण भी नहीं होगा। यदि ग्रहण करेंगे तो दोष ही लगेगा। और यदि ''ब्रह्म शब्द बहुवाचक है'' इससे आपका यह अभिप्राय है कि ब्रह्म शब्द 'बहुत' अर्थ को कहने वाला है और चूँकि परमात्मा एक है, अत: उसके लिए ब्रह्म शब्द का प्रयोग उचित नहीं है, तो यह कहना भी आपका ठीक नहीं है, क्योंकि ब्रह्म शब्द 'बहुत' अर्थ का वाचक नहीं है। ब्रह्म का अर्थ तो 'बड़ा' होता है। परमात्मा सबसे बड़ा है, अत: उसे ब्रह्म कहा जाता है। 'सर्वेभ्यो बृहत्वात् ब्रह्म, अर्थात् सबसे बड़ा होने से ईश्वर का नाम ब्रह्म है।'

- स.प्र. १

ऐसे ही ब्रह्मा नाम के ऋषि सकल विद्याओं के वेत्ता होने के कारण ज्ञान की दृष्टि से सबसे बड़े थे, अत: उन्हें ब्रह्मा कहा गया। और ब्रह्मा परमात्मा का नाम इसलिए है-

योऽखिलं जगन्निर्माणेन बर्हति (बृंहति) वर्द्धयति स ब्रह्मा

जो सम्पूर्ण जगत् को रच के बढ़ाता है, उस परमेश्वर का नाम ब्रह्मा है। - स.प्र. १

परोपकारिणी सभा द्वारा आयोजित आगामी कार्यक्रम

१. १४ से २१ मई, २०१७ **आर्यवीर शिविर,** सम्पर्क- ०९४६००१६५९०

२. २८ मई से ०४ जून, २०१७ **आर्य वीराङ्गना शिविर,** सम्पर्क- ०८८२३९४५९५६

३. १८ से २५ जून, २०१७- **योग-साधना शिविर,** सम्पर्क- ०१४५-२४६०१६४

जैसे मेघ वर्षा समय में अपने जल के समूह से सब पदार्थों को तृप्त करता हुआ उन्नति देता है वैसे ईश्वर भी योगाभ्यास करने वाले योगी पुरुष के योग को अत्यन्त बढ़ाता है।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ७.४०

ईश्वर का आश्रय न करके कोई भी मनुष्य प्रजा की रक्षा नहीं कर सकता। जैसे ईश्वर सनातन न्याय का आश्रय करके सब जीवों को सुख देता है, वैसे ही राजा को भी चाहिये कि प्रजा को अपनी न्याय व्यवस्था से सुख देवे।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ७.३९

www.thearyasamaj.org

वैदिक पुस्तकालय अजमेर
द्वारा प्रकाशित व उपलब्ध नये संस्करण

१. महर्षि दयानन्द का पत्र-व्यवहार (२ भाग में)

मूल्य - रु. ८००/- पृष्ठ संख्या - प्रथम व द्वितीय भाग-६९६+६९६

२. महर्षि दयानन्द का महत्त्वपूर्ण पत्र-व्यवहार

मूल्य - रु. ४००/- पृष्ठ संख्या - ६१६

ऐतिहासिक महत्त्व का ग्रन्थ है। इस संस्करण की यह विशेषता है कि पत्र और उसका उत्तर साथ-साथ दिये गए हैं। आर्य जाति और आर्यावर्त्त के उत्थान की महती आकांक्षा ऋषिवर के पत्रों में स्पष्ट झलकती है। माननीय डॉ. वेदपाल जी द्वारा सम्पादित यह ग्रन्थ पठनीय एवं संग्रहणीय है। साज-सज्जा और मुद्रण भी उत्तम है। समाप्त होने से पहले- पहले क्रय कर लेवें तो अच्छा रहेगा।

३. 'नवयुग की आहट',महर्षि दयानन्द सरस्वती का जीवन-चरित:

मूल्य - रु. ६०/- पृष्ठ संख्या- १९२

१०० से अधिक उपशीर्षकों एवं १३ अध्यायों में लिखा गया ऋषि का यह अनुपम जीवन चरित है। लेखक हैं- ऋषि मिशन के दीवाने, आर्यजाति के प्रहरी, दिल जले आर्य साहित्यकार प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु। पुस्तक में आप जान पायेंगे कि ऋषि का पाखण्ड-खण्डन, सामाजिक दोषों के निराकरण, स्त्री-शिक्षा, अछूतोद्धार, वेदोद्धार, सामाजिक पुनर्जागरण, राष्ट्र-उद्धार के क्षेत्र में क्या योगदान है तथा उनके समकालीन और परवर्ती महापुरुष उनके विषय में क्या कहते हैं।

४. इतिहास की साक्षी: लेखक- प्रा. राजेन्द्र जिज्ञास

मूल्य - रु. ५०/- पृष्ठ संख्या - ९६

९६ पृष्ठों की इस पुस्तक में विद्वान् लेखक ने महर्षि दयानन्द सरस्वती एवं पं. श्रद्धाराम फिल्लौरी के सम्बन्ध में तथ्यात्मक जानकारी दी है। श्रद्धाराम फिल्लौरी के हाथ के लिखे पत्र की एवं अन्य ऐतिहासिक दस्तावेजों की फोटो कापियाँ इसमें दी हैं, जो अन्यथा दुर्लभ हैं।

५. असली महात्मा (हिन्दी)

मूल्य - रु. २००/- पृष्ठ संख्या - २४७

यह पुस्तक मूलरूप से तेलुगु में लिखी गई है। लेखक श्री एम.वी.आर. शास्त्री ने जिस शोधपूर्ण ढंग से और जिस सरसता से इस पुस्तक को लिखा है, उससे दस्तावेजों में रुचि रखने वालों और उपन्यास में रुचि रखने वालों के लिये भी यह एक अतुलनीय ग्रन्थ है। हिन्दी में अनुवाद करते समय श्री जे.एल. रेड्डी ने लेखक के मूल भावों को जिस दक्षता से संजोया है, उससे हिन्दी पाठकों को ये ऐतिहासिक दृष्टि वाला ग्रन्थ किसी उपन्यास से कम नहीं लगेगा।

६. जिज्ञासा-विमर्श लेखक-आचार्य सोमदेव

मूल्य - रु. १००/- पृष्ठ संख्या - २५८

आध्यात्मिक क्षेत्र में सूक्ष्म दार्शनिक सिद्धान्तों के सम्बन्ध में उठने वाले प्रश्नों का शास्त्रीय एवं तर्क-सम्मत समाधान इस ग्रन्थ में किया गया है। आत्मा, परमात्मा, मोक्ष आदि विषयों से सम्बन्धित प्रश्न बहुत जटिल होते हैं। विद्वान् लेखक ने अपने विस्तृत स्वाध्याय एवं ऊहा के बल पर ऐसे सभी प्रकरणों में सम्यक् समाधान प्रस्तुत किया है। पुस्तक पठनीय एवं संग्रहणीय है। कालान्तर में सन्दर्भ हेतु काम आने वाला ग्रन्थ सिद्ध होगी, क्योंकि अधिकांश समाधान महर्षि कृत ग्रन्थों, वेदों एवं वेदानुकूल आर्ष ग्रन्थों के आधार पर किये गए हैं। वैदिक सिद्धान्तों की पुष्टि की दृष्टि से भी यह एक उपयोगी पुस्तक है।

वैदिक पुस्तकालय, अजमेर की पुस्तकों की राशि ऑनलाईन जमा कराने हेतु

बैंक का नाम - **पंजाब नेशनल बैंक, कचहरी रोड, अजमेर।**

बैंक बचत खाता (Savings) संख्या - **0008000100067176**

IFSC - PUNB0000800

www.thearyasamaj.org

वर्तमान के परिप्रेक्ष्य में आर्यसमाज का वेद-सम्बन्धी उत्तरदायित्व

-स्वामी सत्यप्रकाश सरस्वती

पं. गंगाप्रसाद उपाध्याय के सुपुत्र **स्वामी सत्यप्रकाश सरस्वती** आर्यसमाज के विद्वान् नेता एवं प्रतिष्ठित वैज्ञानिक थे। उनकी वैज्ञानिक योग्यता का एक उदाहरण यह है कि वे 'वर्ल्ड साइन्स कॉन्फ्रैन्स' के अध्यक्ष रहे हैं। उनकी लेखनी बड़ी बेबाक, मौलिक एवं सुलझी हुई थी। उनके द्वारा दिये गये विचार हमारे लिये आत्मचिन्तन के प्रेरक हैं। उनकी प्रत्येक बात पर सहमति हो- ये अनिवार्य नहीं है, परन्तु उनके विचार आर्यसमाज की वर्तमान व भावी पीढ़ी को झकझोरने वाले हैं। -**सम्पादक**

१. आप सम्भवतया मेरे विचारों से सहमत न होंगे, यदि मैं कहूँ कि ऋषि दयानन्द के सपनों का आर्यसमाज उस दिन मर गया, जिस दिन किन्हीं कारणों से स्वामी श्रद्धानन्द महात्मा गाँधी और काँग्रेस को छोड़कर महामना मालवीय-वादी हिन्दू महासभा के सक्रिय अंग बन गए। श्रद्धानन्द जी का गाँधी और कांग्रेस से अलग होना इतना दोष न था, पर हिन्दू महासभा की विचारधारा का पोषक हो जाना आर्यसमाज की मृत्यु थी। अगर सत्यार्थप्रकाश के ११ वें समुल्लास को फिर से ऋषि आज लिखते तो वे आज के आर्यसमाज को भी हिन्दुओं का एक सम्प्रदाय मानकर इसकी गतिविधियों की उसी प्रकार आलोचना करते जिस प्रकार अन्य हिन्दू सम्प्रदायों की उन्होंने की है। इसमें से आज प्राय: सभी इस बात को स्वीकार करेंगे कि आर्य समाज आज हिन्दुओं के अनेक सम्प्रदायों में से एक सम्प्रदाय है, अर्थात् वह सम्प्रदाय जो वेद और यज्ञों के नारे पर जीवित हो।

२. शायद हिन्दुओं के अन्य सम्प्रदायों की अपेक्षा आज का आर्यसमाज इन हिन्दुओं का वह सम्प्रदाय है, जो सबसे ज्यादा वेद की दुहाई देता है। यों तो तुलसीदासजी विष्णु के अवतार राम का चरित्र लिखने में पदे-पदे आगम-निगम की दुहाई देने में संकोच नहीं करते थे, पर आज का आर्यसमाज वैदिक संहिताओं की अन्य हिन्दू सम्प्रदायों की अपेक्षा सबसे अधिक दुहाई देता है।

३. स्वामी दयानन्द से पूर्व के भारतीय पण्डितों ने वेद की आज तक रक्षा की, और लेखन-मुद्रण-प्रकाशन की सुविधा न होते हुए भी उन्होंने वैदिक संहिताओं के पाठों को सुरक्षित रखा। वैदिक साहित्य की यह सुरक्षा भारतीयों का बहुत बड़ा चमत्कार माना जाता है।

४. मैं कई वर्ष हुए (संन्यास से पूर्व) लंदन के ब्रिटिश म्यूजियम की सैर कर रहा था, म्यूजियम के पुस्तकालय कक्ष में मैंने बाइबिल पर एक अद्‌भुत व्याख्यान सुना- व्याख्याता महोदय की वार्ता का विषय था-Bible in its Sources। वक्ता महोदय हम श्रोताओं को म्यूजियम के विविध कक्षों में ले गये। उन्होंने हमें बाइबिल की वे सुरक्षित प्रतियाँ साक्षात् करायीं जो तीसरी-चौथी-पाँचवीं सदी से लेकर १८वीं-१९वीं सदी की हस्तलिखित या मुद्रित थीं।

तब से मेरी इच्छा रही है कि ऋग्वेद की भी वे हस्तलिखित प्रतियाँ देखूँ जो पुरानी हैं। आपको आश्चर्य होगा-भूमण्डल के साहित्यों में सबसे पुराना ऋग्वेद है, पर इसकी हस्तलिखित प्रति शायद १३वीं-१४वीं शती से पूर्व की भी नहीं है। वेदों की हस्तलिखित प्रतियों पर मैं कभी फिर लिखूँगा पर निस्सन्देह, यह साहित्य आज तक सुरक्षित है, जो अनुक्रमणियाँ हमें प्राप्त हैं, वे बहुत पुरानी नहीं है। जैसे यजुर्वेद का सर्वानुक्रम सूत्र, शौनक का अनुवाकानुक्रमणी (ऋग्वेद की) या ऋक्-सर्वानुक्रमणी। शतपथ ब्राह्मण (१०/४/२/२३) में यहाँ तक उल्लेख है कि वेदों के समस्त अक्षरों की संख्या १२००० बृहती छन्दों की अक्षर संख्या के बराबर है अर्थात् १२,०००×३६=४,३२,००० अक्षर। (सातवलेकरजी ने ऋग्वेद के अक्षरों की संख्या एक संस्करण में दी है। वह संख्या ३,९४,२२१ है।)

५. जैसा मैं कह चुका हूँ, आज का आर्यसमाज हिन्दुओं का ही वेदानुरागी सम्प्रदाय है। हिन्दुओं के अन्य सम्प्रदाय धीरे-धीरे अब वेद को छोड़ते जा रहे हैं या वेद से दूर जा

www.thearyasamaj.org

रहे हैं। मेरे ऊपर शताधिकवर्षीय उदासी स्वामी गंगेश्वरानन्दजी का स्नेह रहा है। उन्होंने चारों वेद संहिताओं को एक जिल्द में सुन्दर अक्षरों में छपाया है। यह पाठ की दृष्टि से निर्दोष माना जा सकता है। स्वामीजी भारत से बाहर भी द्वीपद्वीपान्तरों में इस 'वेद भगवान्' को ले गये हैं और वहाँ इसकी निष्ठापूर्वक प्रतिष्ठा की है। स्वामी जी को हिन्दुओं से एक ही शिकायत है। कोई हिन्दू अब वेद में रुचि नहीं लेता-जो व्यक्ति लेते प्रतीत होते हैं, वे प्रत्यक्ष या परोक्ष में आर्यसमाज के हैं। सायण के दृष्टिकोण से पृथक् यदि किसी का कोई अन्य दृष्टिकोण है, तो वह आर्यसमाज की विचारधारा से पोषित या प्रभावित है।

६. वेद जीवन का प्रेरणास्रोत है। ऋषि दयानन्द से पूर्व मध्यकालीन युग में (ऐतरेय, शतपथ आदि के काल में कात्यायन, याज्ञवल्क्य, महीधर, उव्वट आदि के काल में) वैदिक संहितायें केवल कर्मकाण्ड की प्रेरिका रह गयीं। उसका परिणाम वही हुआ, जो समस्त सम्प्रदायों में कर्मकाण्ड का हुआ करता है-विनाश और सर्वथा विनाश। कर्मकाण्डी व्यक्ति (नेता या पुरोहित) तो यही समझता रहता है कि धर्म की 'प्रतिष्ठा' उसके कर्मकाण्ड के कारण है, पर वस्तुत: कर्मकाण्ड के परोक्ष में जो विनाश का अंकुर है, वह पनपता आता है। श्रीपाद दामोदर सातवलेकर हिन्दू सम्प्रदाय के अन्तिम वेदानुरागी व्यक्ति थे (आदरणीय स्वामी गंगेश्वरानन्दजी का राग केवल मंत्रभाग से है, न कि व्यक्तिगत या समाजगत नवनिर्माण से।)

७. १८ वीं शती के प्रारम्भ से यूरोपीय विद्वानों ने वेद में रुचि ली और वैदिक साहित्य पर उनकी तपस्या सराहनीय है। (क) उन्होंने भारतवर्ष से इस साहित्य की हस्तलिखित प्रतियाँ उपलब्ध कीं और इन प्रतियों को अपने पुस्तकालयों में कुशलता से सुरक्षित रखा। (ख) यूरोपीय (बाद को अमरीकी) विद्वानों ने वैदिक व्याकरण, प्रातिशाख्य, वैदिक छन्द, वैदिक स्वरों का अच्छा अध्ययन किया, (ग) छोटे-छोटे संकलनों पर भी ये वर्षों अध्ययनशील रहे, (घ) अध्ययन की एक नयी परम्परा को उन्होंने जन्म दिया, (ज) अपने देश में इन सम्पादित ग्रन्थों को नागरी और रोमन लिपियों में अति शुद्ध छपवाने का भी प्रयत्न किया। उन्होंने (रॉथ-बण्टलिंक के ग्रन्थों के समान) बड़े-बड़े कोश तैयार किए, (च) अध्ययन की सुविधा के लिए अनेक प्रकार के तुलनात्मक विश्वकोश भी तैयार हुए।

८. धीरे-धीरे भारतवर्ष में भी पाश्चात्य परम्परा पर अध्ययन और अनुशीलन करने के कुछ केन्द्र खुल गए (शब्दानुक्रमणीय पर कार्य स्वामी नित्यानन्द और स्वामी विश्वेश्वरानन्द जी ने प्रारम्भ किया)। इन केन्द्रों में सर विलियम जोन्स की एशियाटिक सोसायटी कलकत्ता, उसकी बम्बई वाली शाखा, गायकवाड़ संस्थान बड़ौदा, भाण्डारकर इन्स्टीट्यूट-पूना और विश्वबन्धु जी वाला विख्यात इन्स्टीट्यूट होशियारपुर और संस्कृत कॉलेज काशी ने भी अच्छा काम किया।

९. यह मैं पीछे कह चुका हूँ कि पुरानी परम्परा के हिन्दू विद्वान् वेद को छोड़ बैठे हैं और उनके हाथ से आर्यसमाज के विद्वानों ने वेद को एक प्रकार से छीन लिया है। अत: ऐसी स्थिति में आर्यसमाज की जनता का उत्तरदायित्व वेद के सम्बन्ध में बढ़ गया है। मैंने एक बार सान्ताक्रूज की आर्यसमाज में भी यह बात कही थी। यह उत्तरदायित्व निम्न दृष्टियों से महत्त्व का है-

१. मन्त्रों का उच्चारण

२. मन्त्रों का विनियोग

३. कर्मकाण्ड में मन्त्रों का प्रयोग

४. मन्त्रों के छोटे बड़े संकलन

५. मन्त्रों के भाष्य

पिछले वर्ष मैं नैरोबी गया था-मैंने वहाँ के आर्यसमाज में स्पष्ट कहा था-दिल्ली की हवा से नैरोबी आर्यसमाज को बचाओ। बम्बई की हवा से भी विदेशी आर्यसमाजों को हमें बचाना होगा।

इन देशों में किसी से भी पूछो-तुमने यह अशुद्ध उच्चारण कहाँ सीखा-वे यह उत्तर देते हैं-हम दिल्ली या बम्बई गये थे-हमने वहाँ ऐसा ही देखा या सुना था। ओं भूर्भव:, ओजो अस्तु-यह तो दिल्ली और बम्बई की हवा के साधारण उदाहरण हैं।

कई स्थानों पर जब मैं स्वस्तिवाचन और शान्ति प्रकरण के टेप सुनता हूँ, उनको सुनकर यह स्पष्ट लगता है कि ये टेप मेरे ऐसे अज्ञ उपदेशकों या पंडितों के हैं, जिन्हें न ऋक् पाठ आता है न यजु: पाठ-साम के मन्त्रों का पाठ सामवेद

का परिहास या उपहास है, जिसे आप किसी भी अवसर पर स्वस्तिवाचन (अग्न आ याहि वीतये) या शान्तिकरण (स न: पवस्व शं गवे) पाठ के अवसर पर सुन सकते हैं।

ऋषि दयानन्द ने ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका में स्पष्ट लिखा है कि ऋग्वेद के स्वरों का उच्चारण द्रुत अर्थात् शीघ्र वृत्ति में होता है। दूसरी-मध्यम वृत्ति, जैसे कि यजुर्वेद के स्वरों का उच्चारण ऋग्वेद के मन्त्रों से दूने काल में होता है। तीसरी विलम्बित वृत्ति है, जिसमें प्रथम वृत्ति से तिगुना काल लगता है, जैसा कि सामवेद के स्वरों के उच्चारण वा गान में, फिर इन्हीं तीनों वृत्तियों के मिलाने से अथर्ववेद का भी उच्चारण होता है, परन्तु इसका द्रुत वृत्ति में उच्चारण अधिक होता है।

मैंने दक्षिण भारत के पंडितों को ऋग्वेद का यथार्थ उच्चारण करते देखा है, किन्तु आर्यसमाज के लोगों के उच्चारणों पर आप विश्वास नहीं कर सकते। उच्चारण या तो गुरुमुख से सीखे जा सकते हैं, या परिवार की परम्परा से।

आर्यसमाज में नित्य नये विनियोग बनते जा रहे हैं। सबसे पुराना विनियोग शान्तिपाठ का है (द्यौ: शान्ति:), 'त्र्यंबकं यजामहे' की भी बीमारी चल पड़ी है। मरने के बाद संस्कारविधि के प्रतिकूल शान्ति-यज्ञ चल गए हैं, जिनमें शान्तिकरण के मन्त्र पढ़ना अनिवार्य सा हो गया है। प्रत्येक अग्निहोत्र का नाम यज्ञ पड़ गया है, जिसके बाद 'यज्ञरूप प्रभो' वाला भजन अवश्य गाना चाहिए। ऐसी नयी प्रथा चल पड़ी है। ऋग्वेद के अन्तिम सूक्त (दशम मंडल, १९१ वाँ सूक्त) का नाम संगठन-सूक्त रख दिया गया है। ऋग्वेद के इस सूक्त के प्रथम मन्त्र का देवता अग्नि है। शेष तीन मन्त्रों का देवता 'संज्ञानम्' है। समाज के साप्ताहिक अधिवेशनों में संगठन सूक्त के नाम पर चारों मन्त्र पढ़े जाने लगे हैं। क्या हम संगठन सूक्त का नाम 'संज्ञान-सूक्त' नहीं रख सकते?

इस प्रसंग में संज्ञान-सूक्त में केवल तीन ही मन्त्र हैं- (१) संगच्छध्वं (२) समानो मन्त्र:. और (३) समानी व आकूति:. प्रथम मन्त्र संसमिद्युवसे. मन्त्र तो इस प्रसंग में पढ़ना ही नहीं चाहिये।

आगे के वेदप्रेमी हमारा अनुकरण करेंगे, अत: हमें सावधानी बरतनी चाहिए।

परोपकारिणी सभा एवं आर्यवीर दल अजमेर के संयुक्त तत्त्वावधान में

बालक-बालिकाओं के सर्वांगीण विकास हेतु

सम्भाग स्तरीय आर्यवीर दल शिविर

का भव्य आयोजन

दिनांक : १४ मई २०१७ रविवार से २१ मई २०१७ रविवार तक

एवं

आर्य वीरांगना शिविर

दिनांक : २८ मई २०१७ रविवार से ०४ जून २०१७ रविवार तक

स्थान : ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर (राज.)

सम्पर्क सूत्र : ०९४६००१६५९०, ८८२३९४५९५६

जब तक सब की रक्षा करने वाला धार्मिक राजा वा आप्त विद्वान् न हो तब तक विद्या और मोक्ष के साधनों को निर्विघ्नता से पाने के योग्य कोई भी मनुष्य नहीं होता है और न मोक्षसुख से अधिक कोई सुख है।

-महर्षि . दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.५२

www.thearyasamaj.org

दयानन्द धर्मार्थ चिकित्सालय

परोपकारिणी सभा द्वारा संचालित ऋषि उद्यान में वर्ष २०१२ से आयुर्वेदिक चिकित्सालय चल रहा है। चिकित्सालय में उपलब्ध सभी औषधियाँ निःशुल्क दी जाती हैं। ऋषि उद्यान में रह रहे डॉ. रमेश मुनि जी चिकित्सक के रूप में इस चिकित्सालय का कुशलतापूर्वक कार्यभार सम्भाल रहे हैं।

दानी महानुभावों से सहयोग की भी अपेक्षा है।

खाताधारक का नाम - परोपकारिणी सभा, अजमेर (PAROPKARINI SABHA. AJMER)

१. बैंक का नाम- **भारतीय स्टेट बैंक, डिग्गी बाजार, अजमेर।**

बैंक बचत खाता **(Savings)** संख्या- **10158172715**

IFSC-SBIN0007959

२. बैंक का नाम- **आई.डी.बी.आइ**, पावर हाउस के सामने,

जयपुर रोड़, अजमेर।

बैंक बचत खाता **(Savings)** संख्या- **091104000057530**

IFSC-IBKL0000091

email : psabhaa@gmail.com

आस्था भजन (चैनल) पर आर्य विद्वानों के प्रवचन

स्वामी रामदेव जी जन-जन के कल्याण को ध्यान में रखते हुए वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार के लिए 'आस्था-भजन' चैनल पर प्रतिदिन सायं ७ से ९ बजे तक दो घण्टे के बीच वैदिक विद्वानों के प्रवचनों को प्रसारित करवा रहे हैं।

इस कार्य में परोपकारिणी सभा द्वारा भी महत्त्वपूर्ण योगदान दिया जा रहा है। परोपकारिणी सभा द्वारा प्रवचनों की आपूर्ति के लिए ऋषि उद्यान में रिकॉर्डिंग-यूनिट चल रही है और लगातार नित नये प्रवचनों की रिकॉर्डिंग की जा रही है। परोपकारिणी सभा ये प्रवचन आस्था-भजन (चैनल) को प्रदान कर रही है।

इन दिनों 'आस्था-भजन' (चैनल) पर प्रतिदिन सायं ७ से ७.२० बजे तक **आचार्य धर्मवीर** के वेद-प्रवचन, ७.३० से ७.५० तक **स्वामी विष्वङ्** के योगदर्शन प्रवचन, ८.३० से ८.५० तक **आचार्य सत्यजित्** के प्रवचन प्रसारित हो रहे हैं। इसी प्रकार आगे भी 'आस्था-भजन' पर प्रतिदिन सायं ७ से ९ बजे के बीच अन्य विद्वानों के व अन्य विषयों पर प्रवचन प्रसारित होते रहेंगे।

धर्मप्रेमी जन इन प्रवचनों का अधिकाधिक लाभ उठाएँ और अन्यों को भी अधिकाधिक सूचित करें।

'आस्था-भजन' (चैनल) डिश-टी.वी. और डी.टी.एच. पर उपलब्ध है, किन्तु टाटा-स्काई, वीडियोकोन, बिग-टी.वी. आदि पर नहीं आ रहा है। जिनके पास ये नहीं आ रहा है, वे अपने प्रसारक (सर्विस प्रोवाइडर) को बार-बार कह कर प्रेरित करते रहें, जिससे कि ये भी आस्था भजन को प्रसारित करने लगें। ऐसा करके वैदिक-धर्म के प्रचार-प्रसार में आप भी सहयोग प्रदान कर सकते हैं। जो केबल से देखते हैं, वे भी अपने केबल ऑपरेटर को कह कर आस्था भजन आरम्भ करवा सकते हैं।

www.thearyasamaj.org

अविद्या को दूर करना ही देशोन्नति का उपाय है

- सत्यवीर शास्त्री

पिछले अंक का शेष भाग....

इस ईश्वर की अनात्म जड़ मूर्ति पूजा ने राष्ट्र व समाज को, इस आर्यावर्त देश भारत को, जिसे विदेशी लोग सोने की चिड़िया के नाम से पुकारते थे, जिसके ज्ञान-विज्ञान के कारण इसको विश्व का गुरु माना जाता था, उस राष्ट्र की आज अत्यन्त गरीब देशों में गिनती है। चरित्रहीनता और भ्रष्टाचार में इसकी गिनती प्रथम दर्जे के देशों में की जाती है, क्योंकि गरीबी का मुख्य कारण महाभारत के उपरान्त अविद्या के उपरोक्त लक्षणों में फँसकर अन्धविश्वास के कारण राजाओं, महाराजाओं तथा अन्य धनवान् तथा सामान्य व्यक्तियों ने भी राष्ट्र की सम्पत्तियों का बहुत बड़ा हिस्सा इन पत्थर के भगवानों के मन्दिरों में समर्पित कर दिया तथा विदेशी लुटेरे आक्रमणकारी मन्दिरों से इकट्ठे किये धन को लूटते रहे। मुहम्मद गजनवी ने सत्रह बार हमला कर देश को लूटा। अकेले सोमनाथ के मन्दिर से जो धन लूटा गया, इस विषय में इतिहासवेत्ता आचार्य चतुरसेन के ही शब्दों में सुनें-अनेक राजा, रानी, राजवंशी, धनी, कुबेर, श्रीमंत, साहूकार यहाँ महीनों पड़े रहते थे और अनगिनत धन, रत्न, गाँव, धरती सोमनाथ के चरणों में चढ़ा जाते थे।

उसी अवर्णनीय, अतुलनीय वैभव से युक्त सोमनाथ के पतन की करुण कथा और मुहम्मद गजनवी के सत्रहवें आक्रमण की क्रूर कहानी 'सोमनाथ' पुस्तक में इस प्रकार वर्णित है- अब मुहम्मद ने कृष्ण स्वामी से धन, रत्नकोष की चाबियाँ तलब की। अछता-पछता कर कृष्ण स्वामी ने देवकोष मुहम्मद को सम . कर दिया। उस देवकोष की सम्पदा को देखकर मुहम्मद की आँखें फैली की फैली रह गईं। भूगर्भ स्थित कढ़ाओं, टोकरों में स्वर्ण, रत्न, हीरे, मोती, लाल, मणी, माणिक्य आदि भरे पड़े थे। उस दौलत का कोई अन्त नहीं था। उस अतुल सम्पदा को देखकर महमूद हर्ष से अपनी दाढ़ी नोंचने लगा। उसने तुरन्त कोषों को पेटियों में बन्द करवाकर अपने शिविरों में भेजना आरम्भ किया। अस्सी मन वजनी ठोस सोने की जंजीर जिसमें महाघण्ट लटकता था, तोड़ डाली। किवाड़ों चौखटों और छतों से चाँदी पत्तर उखाड़ लिये गये। कंगूरों से स्वर्ण पत्र उखाड़ लिये गये। मणिमय स्तम्भों (खम्भों) पर जड़े रत्न उखाड़ने में उसके हजारों बर्बर सैनिक जुट गये। सोने, चाँदी के सभी पात्र ढेर कर उसने हजारों ऊँटों पर लाद लिए। यह है अधूरा वर्णन महमूद के एक आक्रमण का, ऐसे-ऐसे आक्रमण उसने एक नहीं, दो नहीं, अपितु सत्रह बार किये और एक महमूद गजनवी नहीं, अनेक हमलावर यहाँ आये। मुहम्मद बिन कासिम, महमूद गौरी, तैमूर लंग, चंगेज खाँ, लगभग तीन सौ वर्षों तक अंग्रेज इस राष्ट्र को लूटते व चूसते रहे, जिस प्रकार व्यक्ति ईक्षुदण्ड (गन्ने) को चूसकर खोई को फैंक देता है। आज भी हम उन्हीं अंग्रेजों की शिक्षा संस्कृति के गुलाम होकर उनकी अंग्रेजी भाषा में अपनी शिक्षा पद्धति को अपनाये हुए हैं, जबकि अन्य स्वतन्त्र देश अपनी ही स्वदेशीय भाषा में ही शिक्षा प्रदान करते हैं। किन-किनके नाम गिनवाये जायें? इस देश में बल, वीरता, तेज व शौर्य की कमी नहीं थी। यहाँ पर विश्वासघात तथा उपरोक्त अविद्या अन्धकार ने इस राष्ट्र को कालग्रस्त कर दिया। आज भी इस देश में हजारों ऐसे प्राचीन मन्दिर उपस्थित हैं, जहाँ राष्ट्र की अरबों-खरबों की सम्पत्ति दबी हुई है, जिसके प्रयोग से राष्ट्र का विकास कर अरब जनसंख्या वाले इस विशाल राष्ट्र की गरीबी को दूर किया जा सकता है।

यही नहीं, इस '**अनात्मसु-आत्मख्यातिरविद्या**' दोष के कारण से जिस राष्ट्र में सीता, सावित्री, अनुसूया तथा गार्गी जैसी विदुषी पतिव्रता महिलाएँ हुईं तथा महाराणा प्रताप के कनिष्ठ भ्राता शक्ति की पुत्री देवी किरणमयी ने जैसे अपने सतीत्व की रक्षा के लिए बादशाह अकबर जैसे योद्धा को नवरत्तन-रोजा के मेले में पृथ्वी पर पटककर उसके मुख से पैर पकड़वाकर यह कहलवाया कि तुम मेरी धर्म बहन हो, मुझे क्षमा कर दो।

उसी राष्ट्र में जो किसी समय विद्या, बल व चरित्र के गुणों के कारण विश्व का गुरु कहलाता था, केचन (कुछ) धर्मद्रोही लोगों ने पत्थर के देवताओं के लिए इस राष्ट्र की

www.thearyasamaj.org

निर्मल गंगा के समान पवित्र बहन, बेटियों को देव-दासियों के रूप में मन्दिरों में स्थापित कर '**प्रवृत्ते भैरवीचक्रे सर्ववर्णा द्विजातीय**' का कथन करके दुराचार का जो नग्न नाच तथा बहन-बेटियों की चरित्रहनन का अनेक मन्दिरों में जो दुष्कृत्य किया जाता रहा, उसे लेखनी लिखने में समर्थ नहीं है। इसके पूर्ण विवरण के लिये सत्यार्थप्रकाश का ग्यारहवाँ समुल्लास तथा आचार्य चतुरसेन द्वारा लिखित 'सोमनाथ मन्दिर की लूट' नामक पुस्तक का अध्ययन करें।

इसके अतिरिक्त इस पत्थर के देवताओं के भोग और प्रसन्न करने के बहाने मांस-लोलुप मन्दिर के पुजारियों ने अपनी जिह्वा के रसास्वादन हेतु पशुओं को ही नहीं, मनुष्यों तक की बलि प्रथा आरम्भ करवाई, जिसके कारण राष्ट्र में वैदिक धर्म के विरुद्ध नास्तिक जैन व बौद्ध धर्म का प्रादुर्भाव हुआ। मेरे मन के एक कोने में यह भी बैठा हुआ है कि वेदविरुद्ध पत्थर की एकदेशीय मूर्ति को भगवान मानने के कारण ही १४०० वर्ष पूर्व इस्लाम का प्रादुर्भाव हुआ है, क्योंकि इस्लाम के आक्रमणों का मुख्य उद्देश्य मन्दिरों की मूर्तियाँ तोड़ना रहा है। आज भी राजस्थान के अनेक मुस्लिम परिवार सैकड़ों-सैकड़ों गउओं का पालन करते हैं, केवल मात्र कट्टरपंथी मुस्लिम गोहत्या करते हैं। वे लोग भी हिन्दुओं की सहायता से ही इस घृणित पापकर्म में लिप्त हैं। आज भी देश में सैंकड़ों मन्दिरों तथा कलकत्ता की काली देवी के समक्ष प्रतिदिन निर्दोष, बेजुबान हजारों पशुओं की बलि दी जाती है और वर्तमान की खबर सुनो! जो समाज को दिशा-निर्देश देने वाले अभिनेता माने जाते हैं, वे भी इस वैज्ञानिक युग में उपरोक्त अविद्या के अन्धविश्वास में फँसकर समाज को विपरीत दिशा में ले जा रहे हैं। कुछ वर्ष पूर्व प्रसिद्ध अभिनेता अमिताभ बच्चन बीमार (अस्वस्थ) हो गये थे। उनके स्वास्थ्य के सुधार हेतु झोटे (भैंसे) की बलि दी गई थी।

दैनिक जागरण, १६ नवम्बर, २०१४ एटा उत्तरप्रदेश थाना क्षेत्र सिढ़पुरा के गाँव चान्दपुर में प्रात: शनिवार के दिन दिल दहलाने वाली घटना हुई। एक अन्धविश्वासी बाप ने अपने तीन वर्षीय मासूम बेटे की बलि दे दी तथा खून से सने हाथों से मन्दिर में दुर्गा एवं शंकर की मूर्तियों का तिलक किया एवं खून के हाथों के छापे भी लगाए। जब तक विज्ञान विरुद्ध अन्धविश्वासी धर्म के आधार पर समाज चलेगा, तब तक इन भयंकर कुकृत्यों को रोका नहीं जा सकता। जब तक महापुरुषों को ईश्वर का अवतार माना जायेगा, तब तक रामपालदास, रामरहीम, आशाराम तथा नित्यानन्द जैसे अनेक चरित्रहीन लोग ईश्वर का अवतार लेते रहेंगे, अत: अवतार प्रथा पर प्रतिबन्ध लगना चाहिए।

जिस प्रकार वर्तमान समय में रामपालदास के आश्रम बरवाला (हिसार) से अवैध हथियारों का जखीरा, शिक्षित कमाण्डो, अश्लील सामग्री, नशीले पदार्थ, विदेशी शराब, ए.के. सैंतालीस जैसे भयंकर हथियार, तेजाब व पेट्रोल बम्ब, माँ-बहन-बेटियों के चरित्रहनन हेतु बहनों के नग्न चित्रों के लिये उनके स्नानागारों में अप्रत्यक्ष रूप से कैमरे फिट करना, बेसुध कर बहन-बेटियों का चरित्रहनन करना आदि अवैध कार्य इसके बरवाला (हिसार) स्थित आश्रम में होते रहे, उसी प्रकार करौंथा (रोहतक) स्थित इसके आश्रम में भी होते रहे हैं, जिसके प्रत्यक्ष गवाह उस समय के सभी समाचार पत्र हैं।

१२ जून, २००६ में इस स्वयंभू भगवान् तथा इसके अनुयायियों ने सोनू नामक एक होनहार युवक की गोली मारकर हत्या की तथा लगभग साठ व्यक्तियों को गोलियों से घायल किया। २०१३ में करौंथा (रोहतक) आश्रम के निकट इसके अनुयायियों तथा पुलिस की गोलियों से संदीप (शाहपुर, आर्य बाल भारती स्कूल, पानीपत), आचार्य उदयवीर (आर्य गुरुकुल लाढौत, रोहतक) तथा बहन प्रोमिला देवी करौंथा (रोहतक) की गोली मारकर हत्या कर दी गई तथा लगभग ११० व्यक्तियों को गोलियों से घायल किया गया। इसके अतिरिक्त हरियाणा पुलिस ने अनेक खाप पंचायतों के नेताओं तथा आर्यसमाज, जिसकी स्थापना १८७५ में हुई थी तथा जिसके संस्थापक एवं अनुयायी १८५७ के प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम से लेकर आज तक राष्ट्रहित एवं समाजहित के सभी बड़े आन्दोलनों में अपनी अग्रणी भूमिका निभाते रहे हैं, उसके कार्यकर्त्ताओं को भी लाठियों की चोटों से भयंकर रूप से घायल किया। २०१३ में भी करौंथा स्थित इसके आश्रम में उपरोक्त सभी

www.thearyasamaj.org

अवैध सामग्री की जाँच पड़ताल इसको तथा इसके अनुयायियों को बचाने के लिए नहीं की गई तथा इसको पंजाब की तर्ज पर दूसरा भिण्डरावाला बनाने का कार्य किया। उन सबकी गहराई से जाँच होनी चाहिए। उसके उपरान्त भी उस समय की शासित पार्टी के राजनेताओं के ये वक्तव्य कि 'हरियाणा की वर्तमान सरकार ने सूझबूझ, शान्ति व धैर्य से काम नहीं लिया।' हमें पढ़कर खेद व आश्चर्य होता है। उस समय के शासित राजनेता आत्म अवलोकन नहीं करते कि उस समय किस प्रकार से निहत्थे, निर्दोष लोगों को तथा साधु-संन्यासियों को लाठियों से घायल कर गोलियों से मृत्यु शैय्या पर पहुँचाया था।

वर्तमान समय में हरियाणा सरकार ने अत्यन्त सूझबूझ, शान्ति तथा धैर्य का प्रमाण देते हुए इतने बड़े ऑपरेशन के उपरान्त भी किसी को भी हताहत नहीं होने देना। वर्तमान मुख्यमन्त्री खट्टर साहब की सरकार की साधुवादिता व दूरदर्शिता है, अतएव हरियाणा सरकार साधुवाद की पात्र कही जाएगी।

हृदय की गहराई से राष्ट्र के इस अधोपतन का दु:ख विशेषकर महाभारत के उपरान्त किसी एक व्यक्ति ने अनुभव किया है तो वे एकमात्र ऋषि दयानन्द हैं। जब वे यमुना नदी के तट पर समाधि में बैठे हुए थे, तब इस राष्ट्र की एक बेटी अपने गोदी के लाल के शव को नदी में बहाने के लिए तट पर पहुँची। शव को पानी में डालने की आवाज से ऋषि जी की समाधि टूट गई। उन्होंने देखा कि एक बच्चे के शव को नदी में बहाकर उसके शरीर के एकमात्र कफन को उतार कर एक बहन वापिस जा रही है। ऋषि ने आवाज देकर बहन को निकट बुलाकर पूछा- बहन! तुमने बच्चे के शव से कफन क्यों उतार लिया? उस समय बहन की आँखों में अश्रुधारा बहने लगी और बोली- बाबा, तुम्हें सांसारिक दु:ख-सुखों का ज्ञान नहीं है और न ही मेरे दु:खों का आपके पास कोई समाधान है, अत: आप यह क्यों पूछ रहे हो? तब बाबा दयानन्द ने कहा-बहन, यह तो बताना ही पड़ेगा। तब बेटी ने दु:खी हृदय से कहना आरम्भ किया- बाबा, यह मेरा इकलौता पुत्र था, बीमार हो गया और पैसे के अभाव में मैं इसका इलाज नहीं करवा सकी, जिसके कारण इसकी मृत्यु हो गई। बाबा, इसके शरीर को ढँकने के लिए मेरे पास केवल मात्र एक यही साड़ी है। इसमें से आधी साड़ी को फाड़कर मैंने अपने लाल के लिए कफन तैयार किया था। बाबा, यदि मैं इस कफन को वापिस नहीं ले जाती हूँ तो मैं इस शरीर को कैसे ढँक पाऊँगी और अपनी लाज की रक्षा कैसे कर पाऊँगी? यह कहकर बहन फफक-फफक कर रोने लग गई। जिस दयानन्द की आँखों में अपने प्यारे चाचा की मृत्यु तथा लाड़ली बहन की असमय मृत्यु पर एवं धन-धान्य से सम्पन्न घर-परिवार एवं स्नेहमयी माता-पिता के त्यागने पर दु:ख नहीं हुआ, परन्तु इस घटना ने उनके हृदय को अत्यन्त व्यथित कर दिया और कहा- मैंने पारसमणि पत्थर सुना है, लेकिन होता नहीं है, यदि कोई पारसमणि पत्थर था तो यह आर्यावर्त देश ही था, जिसको छूकर विश्व के कंकर, पत्थर के सदृश गरीब देश धनधान्य से सम्पन्न हो गये। हा, आज उस सोने की चिड़िया कहे जाने वाले राष्ट्र की यह दूरावस्था हो गई है कि यहाँ की बहन-बेटियों और माताओं को अपनी लाज की रक्षा के लिये वस्त्र भी नसीब नहीं तथा संस्कार के लिए समिधाएँ (लकड़ियाँ) तथा कफन तक उपलब्ध नहीं है। पाठक मन्थन करें कि उस समय उस राष्ट्रभक्त ऋषि के हृदय में वेदना की क्या सभी सीमाएँ पार नहीं कर गई होंगी?

मैं राष्ट्र के कर्णधारों, राष्ट्रपति तथा प्रधानमन्त्री नरेन्द्र मोदी, जिस पर आज पूर्ण भारत विश्वास कर रहा है, उनसे अपील करता हूँ कि वे निम्नलिखित विषय पर गंभीरता से कदम उठायें। कुछ समय पूर्व रेडियो, टी.वी. तथा समाचार-पत्रों में एक बहस चली थी कि साम्प्रदायिक हिंसा पर लोकसभा में बहस होनी चाहिये। मेरा इस विषय में यह कथन है कि वृक्ष के पत्तों और डालियों पर पानी छिड़कने से वह लाभ नहीं होता जो कि वृक्ष की मूल जड़ों में पानी देने से होता है, अत: भारत सरकार लोकसभा में प्रत्येक धर्म के एक-एक, दो-दो उच्च कोटि के विद्वानों को बुलाये और एक-एक विद्वान् से अपने-अपने धर्म की विशेषताओं की व्याख्या सुने तथा तदुपरान्त यह निश्चय करे कि कौन धर्म विज्ञानसम्मत, तर्कपूर्ण तथा युक्तियुक्त है तथा यह भी निश्चय करे कि किस धर्म का प्रादुर्भाव किस सन् या संवत् में हुआ? मान लो, किसी धर्म या सम्प्रदाय का प्रादुर्भाव

www.thearyasamaj.org

दो-ढाई हजार वर्ष पूर्व हुआ है तो दो-ढाई हजार वर्ष से पहले भी तो उस धर्म के बिना मानव तथा प्राणिमात्र का कार्य चल रहा था, तो चिन्तन किया जाये कि आज उसके बिना कार्य क्यों नहीं चल सकता? इसी प्रकार जाति, भाषा पर भी बहस होनी चाहिये। वैसे तो जितनी अधिक भाषाओं का ज्ञान मनुष्य को होगा, उतना ही ज्ञान-विज्ञान की वृद्धि में लाभ होगा, उसके उपरान्त भी राष्ट्र में एक ऐसी भाषा तो अवश्य ही होनी चाहिये, जिसे राष्ट्र के जन पूर्व से पश्चिम तथा उत्तर से दक्षिण तक बोल सकें और समझ सकें। जब राष्ट्र का एक धर्म होगा, एक जाति होगी, एक भाषा होगी, सभी हाथों को काम होगा, सबके लिये देश में अपनी शिक्षा, अपनी संस्कृति होगी, तब महाराज अश्वपति के समान इस देश का राष्ट्रपति, प्रधानमन्त्री तथा देश के अन्य राजनेता यह घोषणा करने में समर्थ होंगे कि-

न मे स्तेनो जनपदे न कदर्यो न च मद्यपः।
नानाहिताग्निर्नाविद्वान् न स्वैरी स्वैरिणी कुतः।।

मेरे समस्त देश में कोई चोर नहीं है, कोई कंजूस व अदानी नहीं है, कोई शराबी नहीं है, यज्ञ व सन्ध्या न करने वाला कोई नहीं है, मूर्ख कोई नहीं है। जब कोई चरित्रहीन पुरुष ही नहीं है, तो स्त्री के दुराचारिणी होने का प्रश्न ही नहीं उठता। ऐसा होने पर न ही साम्प्रदायिक दंगे होंगे, न कोई रेप केस होगा, न ही भ्रष्टाचार होगा, न ही देश का धन विदेश में जायेगा तथा न काला बाजारी ही होगी।

अब लेख के अन्त में उपरोक्त वेदमन्त्रों में जो रहस्य है, वह प्रकाशित करना चाहूँगा। वेदमन्त्र में कहा है कि जो व्यक्ति विद्या और अविद्या दोनों के स्वरूप को साथ-साथ जानता है, वह विद्वान् अविद्या द्वारा मृत्यु से तैरकर विद्या द्वारा अमृत पद (मोक्ष) को प्राप्त करता है। प्रश्न यहाँ पर यह पैदा होता है और इस मन्त्र में यही रहस्य है कि जब अविद्या से दुःख की प्राप्ति होती है तो उससे मृत्यु से कैसे पार हो सकता है? इसका उत्तर व रहस्य यह है कि जो इस अनित्य संसार को जिसे वेद ने अविद्या कहा है, उसको वैसा ही अनित्य मानकर आचरण करता है तथा अविद्या के दूसरे लक्षण अपवित्र शरीर व भौतिक पदार्थ को अपवित्र मानता है तो ऋषि पतञ्जलि के अनुसार- **'शौचात्स्वाङ्जुगुप्सा परैरसंसर्गः'** वैराग्यवान् व्यक्ति अपने शरीर की गन्दगी और अपवित्रता को देखकर तद्वत् अन्य के शरीर को भी अपवित्र देखकर अन्य के शरीर के संसर्ग से बच जाता है और पवित्र ईश्वर की तरफ उन्मुख हो जाता है। तीसरे, अविद्या के लक्षण काम, क्रोध, लोभ तथा अहंकार आदि के परिणामों को समझकर वैराग्यवान् योगी व्यक्ति इस अविद्या से बच जाता है।

इसी प्रकार चौथे विद्या के लक्षण अनात्म जड़ पदार्थ को आत्मा मानने के उपरोक्त दोषों को समझकर योगी- सच्चिदानन्दस्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान्, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्त्ता ईश्वर की ही उपासना करता है। अतः अविद्या के इन लक्षणों को जानकर योगी अविद्या से मृत्यु को पार कर जाता है तथा विद्या के द्वारा ऋषि पतञ्जलि के अनुसार-

'तपः स्वाध्यायेश्वर-प्रणिधानानि क्रियायोगः'

तप, स्वाध्याय तथा ईश्वर के प्रति अपने-आपको समर्पित करके योग लीन हो अमृत पद मोक्ष को प्राप्त करता है। उपरोक्त वेदमन्त्र इस रहस्य द्वारा **'मृत्योर्मामृतं गमयः'** मृत्यु से अमरता की ओर ले जाता है।

अतिथि यज्ञ के होताओं से अनुरोध

अतिथि यज्ञ के होताओं से उनकी वैवाहिक वर्षगाँठ अथवा जन्मदिन व विभिन्न अवसरों पर ५१०० रु. प्रतिवर्ष सभा को प्राप्त होते रहते हैं। जो महानुभाव संकल्प के साथ इस पुनीत कार्य से जुड़े हुए हैं, उनसे हमारा अनुरोध है कि वे अपनी राशि भेजते समय जन्मतिथि/वैवाहिक वर्षगाँठ आदि व दूरभाष संख्या सूचित करना न भूलें। साथ ही यह भी अवश्य सूचित करा देवें कि पहले से भिजवा रहे हैं अथवा नया शुरू किया है। आप अपनी राशि सभा के बैंक खाते में नकद अथवा चैक द्वारा जमा करा सकते हैं।

यू-ट्यूब पर वीडियो प्रवचन उपलब्ध

वेद एवं आर्ष-साहित्य में रुचि रखने वाले आर्यजगत् एवं धार्मिक जनों को यह जानकर प्रसन्नता होगी कि अब यू-ट्यूब पर अनेक वैदिक आर्य विद्वानों के सैंकड़ों नये-नये प्रवचन उपलब्ध हैं। विश्व में कहीं पर भी इन्टरनेट से जुड़कर ये प्रवचन निःशुल्क सुने-देखे तथा डाउनलोड किये जा सकते हैं। आप जहाँ भी हैं, यदि आपको वैदिक आर्ष-ज्ञान की पिपासा है, वेद एवं आर्ष ग्रन्थों के स्वाध्याय के साथ आप इन पर विद्वानों के प्रवचन भी सुनना चाहते हैं, तो इन्टरनेट से जुड़कर सरलता से सुन सकते हैं।

इसके लिए you tube पर जाकर playlist of paropkarini sabha लिखकर सर्च करें, तो आपको अनेक प्लेलिस्ट मिलेंगी, यथा- वेद प्रवचन, योग दर्शन, ईशोपनिषद् आदि। इनमें इच्छानुसार जाकर लाभ उठाया जा सकता है। आप अपने परिचितों को यह सूचना देकर उन्हें भी लाभ उठाने को प्रेरित कर सकते हैं। भविष्य में अन्य भी नये-नये प्रवचन इस सूची में उपलब्ध कराये जाते रहेंगे।

परोपकारी के सुधी पाठकों के लिए आवश्यक सूचना

परोपकारी शुल्क भेजते समय नये या पुराने ग्राहक के उल्लेख के साथ-साथ ग्राहक संख्या अवश्य लिखें, अन्यथा व्यक्ति के नाम से शुल्क जमा करने में कठिनाई आती है। फलस्वरूप पाठकों के पास पत्रिका नहीं पहुँच पाती है। ऐसे ही अपना नाम हटवाते व जुड़वाते समय दूरभाष संख्या सहित अपना पूरा विवरण लिखकर भेजें। ई.एम.ओ. के द्वारा शुल्क भेजने वाले ग्राहक भी सन्देश के साथ अपनी ग्राहक संख्या सहित पूरा विवरण भेजें। परोपकारिणी सभा आप सभी का सहयोग चाहती है।

धनराशि भेजने हेतु सूचना

चैक, ड्राफ्ट, धनादेश (मनीआर्डर) द्वारा राशि भेजने वाले उन पर '**मन्त्री, परोपकारिणी सभा**' अवश्य लिख दें। दानी महानुभाव ऑनलाइन भी राशि जमा करवा सकते हैं। भारतीय स्टेट बैंक में एक सहस्र तक की राशि जमा कराने वाले २५ रु. **बैंक सेवा शुल्क के रूप में अतिरिक्त** जमा करवाने की कृपा करें। कृपया, राशि निम्नांकित बैंकों में ऑनलाइन भिजवाकर, जमा कराई गई स्लिप के साथ उद्देश्य लिखकर सभा कार्यालय को सूचित करवाने का कष्ट करें।

खाताधारक का नाम - परोपकारिणी सभा, अजमेर (PAROPKARINI SABHA AJMER)

१. बैंक बचत खाता (Savings) संख्या-09110400005753O बैंक का नाम-आई.डी.बी.आई. बैंक, पावर हाउस के सामने, जयपुर रोड, अजमेर।

IFSC - IBKL0000091

२. बैंक बचत खाता (Savings) संख्या - 10158172715 बैंक का नाम - भारतीय स्टेट बैंक, डिग्गी बाजार, अजमेर।

IFSC - SBIN0007959

विद्वान् स्त्रियों को योग्य है कि अच्छी परीक्षा किए हुए पदार्थ को जैसे आप खायें वैसे ही अपने पति को भी खिलावें कि जिससे बुद्धि, बल और विद्या की वृद्धि हो और धनादि पदार्थों को भी बढ़ाती रहे।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.४२

वैचारिक क्रान्ति के लिए सत्यार्थ प्रकाश पढ़ें।

www.thearyasamaj.org

अतिथि यज्ञ के होता बनें

महर्षि दयानन्द सरस्वती की उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा आर्य जगत् की एकमात्र ऐसी संस्था है जो सामूहिक सहयोग से ऋषि द्वारा निर्धारित लक्ष्यों की पूर्ति हेतु कृत संकल्प है।

सभा निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर है। निरंतर अबाध गति से ऋषि उद्यान को आकर्षक एवं जन उपयोगी बनाने हेतु नव निर्माण करा रही है, वेद प्रचार पूरे देश में संचालित कर रही है, वेदों का एवं ऋषि ग्रंथों का प्रकाशन निरंतर जारी है।

प्रातः एवं सायं दैनिक यज्ञ- प्रवचन, वेद-पाठ, उपनिषद्, दर्शनादि शास्त्रों की कथा द्वारा वैदिक धर्म का कार्य नियमित रूप से आश्रम में चलता है। ***गुरुकुल***- आर्ष पद्धति से संचालित गुरुकुल में पढ़ रहे ब्रह्मचारी जो साधना एवं समाज सुधार का लक्ष्य लेकर अध्ययनरत हैं उनकी सभी आवश्यकताओं की पूर्ति निःशुल्क की जाती है। ***अतिथि सेवा***- अतिथियों को यथोचित सुविधा प्रदान करने हेतु सभा पूर्णरूपेण प्रयासरत है एवं सभी सुविधाएँ आवास, प्रातराश, भोजन की व्यवस्था निःशुल्क की जाती है। ***गोशाला***- गोशाला में चालीस के लगभग पशु हैं। इससे अधिक का स्थान नहीं है। आश्रमवासियों को गोशाला में उत्पादित दुग्ध का निःशुल्क वितरण किया जाता है। ***वानप्रस्थ एवं संन्यास आश्रम***- वानप्रस्थ एवं संन्यास आश्रम में रहकर साधनारत वानप्रस्थियों एवं संन्यासियों की सभी प्राथमिक आवश्यकताओं की पूर्ति सभा द्वारा निःशुल्क की जाती है। स्वाध्याय एवं साधना की व्यवस्था है। ***विशाल पुस्तकालय***- इसमें दुर्लभ ग्रंथों का संग्रह है, सभा द्वारा शोधकर्ता छात्रों को शोध कार्य हेतु ग्रंथ निःशुल्क प्रदान किए जाते हैं जिनका लाभ स्वाध्यायशील व्यक्ति भी उठा सकते हैं। ***व्यायामशाला***- योग्य शिक्षक द्वारा नगर के युवाओं को ऋषि उद्यान में निःशुल्क व्यायाम प्रशिक्षण दिया जाता है। सभा द्वारा नियुक्त व्यायाम शिक्षक आसपास के गांवों में भी आर्यवीर दल का प्रशिक्षण शिविरों में प्रदान करते हैं।

ये सभी क्रियाकलाप आपके पावन उदार सहयोग से ही संभव हैं। जैसा कि सर्वविदित है कि सभा का आधार ही आकाशीय दानवृत्ति है। आपको प्रतिदिन अतिथि मिलना संभव नहीं फिर अतिथि यज्ञ कैसे किया जाय इसका उपाय है, कुछ राशि प्रतिदिन अतिथि यज्ञ के नाम से निकाल ली जाये और उसको एकत्र कर अतिथि सत्कार में गुरुकुल में भोजन आदि के सहयोग में दे दी जाय।

सभा के धार्मिक क्रियाकलापों एवं आवासीय स्थल ऋषि उद्यान में उपर्युक्त पावन क्रियाकलाप लम्बे समय तक अबाध चलते रहें इसके लिए सभा की योजना है कि प्रतिदिन १० रुपये अथवा प्रतिवर्ष ५ हजार की राशि प्रदान करने वाले उदार यशस्वी दानदाताओं का नाम अतिथि यज्ञ के स्थायी सदस्यों में अंकित किया जाता है ऐसे सज्जनों के नाम का परोपकारी में प्रकाशन भी किया जाता है।

अनेक 'अतिथि यज्ञ के होता' सदस्यों का आग्रह है, निश्चित तिथि जन्मदिन, विवाह वर्ष गांठ या विशेष अवसर पर वे अपनी ओर से संस्था में भोजन कराना चाहते हैं। ऐसे महानुभावों से निवेदन है कि वे अतिथि यज्ञ के होता के रूप में एक दिन के भोजन व्यय की राशि पाँच हजार एक सौ रुपये भेजते हुए इच्छित दिन का विवरण सूचित करेंगे तो उसका उल्लेख आश्रम के सूचना पट्ट पर किया जा सकेगा।

यह अल्प राशि आप दैनिक संचय घट में जमा भी कर सकते हैं, वर्ष में लोग अरबों रुपए आग में पटाखे जलाकर व्यय करते हैं, असावधानी से बिजली जलती छोड़ इसे गंवा देते हैं आदि ऐसी छोटी-छोटी असावधानियों को रोक कर हम उसकी बचत राशि इस पावन कृत्य हेतु सभा को वर्ष में आसानी से दे सकते हैं।

सभा शिविरों के आयोजन द्वारा जन सामान्य को ऋषियों की जीवन प्रणाली सिखा रही है। आप इस योजना में स्थायी सदस्य बनकर ऋषि का संकल्प *संसार का उपकार* की पूर्ति में एक स्तम्भ बनकर सभा को सम्बल प्रदान कर सकते हैं।

यदि अपने सामर्थ्य के अनुसार राशि को न्यूनाधिक करना चाहें तो आपकी स्वतन्त्रता है अधिक से अधिक लोग परोपकारिणी सभा से जुड़ सकें, आप ऐसा करके ऋषि दयानन्द के कार्यों को आगे बढ़ाने में सहायक होंगे इसलिए ऐसी राशि निश्चित की है। आप से प्रार्थना है अपना नाम पता और संकल्प लिखकर अवगत करायें और अतिथि यज्ञ के होता बनें। अपनी राशि प्रतिमाह अथवा सुविधानुसार मनीआर्डर/डीडी/चैक द्वारा अथवा स्वयं उपस्थित होकर कार्यालय में जमा करा सकते हैं। आपका दान ८०जी (आयकर की धारा) के अंतर्गत कर मुक्त होगा।

अतः आपसे निवेदन है कि आप भी अतिथि यज्ञ के होता बनिये। जिन महानुभावों ने हमारा निवेदन स्वीकार कर यज्ञ में अपनी आहुति दी है, उनके नाम यहाँ प्रकाशित किये जा रहे हैं।

www.thearyasamaj.org

अतिथि यज्ञ के होता

(०१ से १५ फरवरी २०१७ तक)

१. श्रीमती उर्मिला/श्री जयदेव अवस्थी, जोधपुर २. श्रीमती ममता/श्री अरविन्द अवस्थी, जोधपुर ३. श्री विजयसिंह जादौन, अजमेर ४. श्री राजदीप सिंह जादौन, इन्दौर ५. श्री श्याम कँवर गोयल, सूरत ६. डॉ. रितु माथुर, अजमेर ७. डॉ. प्रवीण माथुर, अजमेर ८. श्री देवमुनि, अजमेर ९. श्रीमती उर्मिला उपाध्याय, अजमेर १०. श्री किशोर काबरा, अजमेर ११. माता कौशल्या, अजमेर १२. सुश्री कंचन आर्या, अजमेर १३. श्री गौतम कुमार, सिक्किम १४. श्रीमती दीपा कोरानी, अजमेर १५. श्री सिद्धार्थ पारीक, अजमेर १६. डॉ. बद्रीप्रसाद पंचोली, अजमेर १७. श्री व्रतमुनि, अजमेर १८. डॉ. रमेश मुनि/श्रीमती उषा, अजमेर १९. श्री पुष्पेन्द्र देव उपाध्याय, प्रतापगढ़ २०. श्री धर्मपाल, दिल्ली २१. श्री मोहनलाल गंगवार, अजमेर २२. श्री अवनीश कपूर, नई दिल्ली २३. श्री पुष्कर गोयल, मुजफ्फरनगर २४. श्री विजयसिंह गहलोत व श्रीमती कंचन गहलोत, अजमेर २५. श्री श्याम बाबू/श्रीमती उषा आर्या, गाजियाबाद २६. श्री माँगीलाल गोयल, अजमेर २७. श्री वृद्धिचन्द गुप्त, जयपुर २८. श्रीमती रश्मि कोरानी, अजमेर २९. श्री राजेश त्यागी, अजमेर ३०. स्वास्तिकामा चेरिटेबिल ट्रस्ट, अमरावती ३१. श्री प्रतीश रमना, हिसार ३२. सूबेदार श्री विक्रम सिंह आर्य, रेवाड़ी ३३. श्रीमती अरुणा पारीक, अजमेर ३४. श्रीमती कौशल्या बीकानेर ३५. श्री दिनेश कुमार अग्रवाल, रुड़की ३६. श्री हरफूल सिंह राठी व श्रीमती उर्मिला राठी, रुड़की ३७. श्री धर्मपाल, दिल्ली ३८. श्री जयपाल, गाजियाबाद ३९. श्री अशोक कुमार गुप्ता, दिल्ली।

- परोपकारिणी सभा, अजमेर।

गौभक्तों से निवेदन

ऋषि-उद्यान में परमार्थ हेतु गौशाला संचालित है। गौशाला की गौवों के दूध का वितरण सभी गुरुकुलवासियों, संन्यासियों एवं आगन्तुक अतिथियों में निःशुल्क किया जाता है। आप सभी गौ-भक्तों एवं उदारमना दानदाताओं से सभा का निवेदन है कि गौवों को उत्तम चारा मिले, इसके लिए जो भी सज्जन चारा दान देना चाहें, उनका स्वागत है। यदि आप दूरस्थ प्रदेश के हैं तो कृपया चारे हेतु अनुमानित राशि सभा को ड्राफ्ट/चैक/नगद भेज सकते हैं। यशस्वी दानदाताओं के नाम परोपकारी पत्रिका में प्रकाशित किए जाएँगे। आपका दान गौवों के संवर्धन में सहायक होगा।

ऋषि उद्यान में संचालित गौशाला के दानदाता

(०१ से १५ फरवरी २०१७ तक)

१. श्रीमती उर्मिला उपाध्याय, अजमेर २. श्री अंकित जिन्दल, नसीराबाद ३. श्री दलजीत सिंह आर्य, हिसार ४. श्री दिनेश शर्मा, पुष्कर ५. श्री जी.के. शर्मा, जोधपुर ६. कु. स्तुति आर्य, नोएडा ७. श्री नकुल पलक आर्य, अजमेर ८. डॉ. बद्रीप्रसाद पंचोली व श्रीमती कमला देवी, अजमेर ९. डॉ. रमेश मुनि व श्रीमती उषा आर्या, अजमेर १०. श्रीमती शान्ति देवी, जयपुर ११. श्रीमती पूनम शर्मा, दिल्ली १२. श्री मोहनलाल गंगवार, अजमेर १३. श्री राधेश्याम शर्मा, अजमेर १४. श्री वीरसेन शास्त्री, झुन्झुनु १५.श्री विजय सिंह गहलोत व श्रीमती कंचन गहलोत, अजमेर १६. श्रीमती शशिप्रभा, दिल्ली १७. श्री वृद्धिचन्द गुप्त, जयपुर १८. श्री शान्तिस्वरूप टिक्कीवाल, जयपुर १९. श्री राजेश त्यागी, अजमेर २०. श्री प्रेम दुग्गल, सूरत २१. श्री भोलेशंकर गर्ग, अजमेर २२. श्रीमती निर्मला देवी, अजमेर २३. श्रीमती अरुणा पारीक, अजमेर २४. श्री दीपाराम आर्य, पीपाड़ शहर २५. श्री धर्मपाल, दिल्ली २६. श्री सुशील कुमार, दिल्ली २७. डॉ. मनोज गुप्ता, बीकानेर २८. श्रीमती पुष्पा गुप्ता, अजमेर २९. श्रीमती किरण सिंह धामा, मेरठ ३०. श्री आर्येश्वर कुमार, अजमेर ३१. श्रीमती प्रेमलता शर्मा, अजमेर ३२. श्री चन्द्रप्रकाश झँवर, भीलवाड़ा ३३. श्री युवराज झँवर, भीलवाड़ा ३४. श्री राधेश्याम बूँदी ३५. श्री दिनेश कुमार गोरा, अजमेर ३६. श्रीमती सत्या मल्होत्रा, नई दिल्ली।

- परोपकारिणी सभा, अजमेर।

www.thearyasamaj.org

संस्था - समाचार

- लेखराम आर्य

१ फरवरी बुधवार को बसन्त पंचमी के अवसर पर **आचार्य सत्यजित् जी** ने कहा कि प्रकृति में हो रहे परिवर्तनों के साथ स्वयं को जोड़ने के लिये पर्व मनाये जाते हैं। प्रकृति में सृजन का क्रम चलता रहता है। इस ऋतु में पेड़-पौधों में नए पत्ते, फूल आते हैं। यह पर्व हम सबके जीवन में नया उल्लास लाता है। प्रकृति के इस नयेपन को देखकर हमारी दृष्टि व्यापक होती है। इस परिवर्तन को देखकर संसार के रचयिता परमात्मा का ध्यान आता है। मनुष्य द्वारा निर्मित किसी भी वस्तु के मूल पदार्थ प्रकृति में है। प्रकृति में जो निरन्तर परिवर्तन, उत्पादन हो रहे हैं, उसे एक मनुष्य या सब मनुष्य मिलकर भी नहीं कर सकते। उन मूल पदार्थों का निर्माता ईश्वर ही है। वह सदा प्रयत्नशील है। उसकी व्यवस्था से ही संसार गतिशील है। इस ऋतु में आयुर्वेद की दृष्टि से कफ का प्रकोप होता है। उसके शमन के लिये शहद का प्रयोग करना चाहिये।

वर्तमान में गुरुकुलीय शिक्षा प्रणाली के चलाये रखने और उसे उपयोगी बनाने में क्या-क्या बाधायें हैं और उसका क्या समाधान है? जिन गुरुकुलों में आधुनिक शिक्षा के पाठ्यक्रम संचालित हो रहे है क्या वे गुरुकुल माने जायें? नये-नये गुरुकुल कैसे खुलें? यहाँ से निकलने वाले विद्यार्थी अधिक योग्य कैसे हों? इस विषय पर चर्चा करते हुए **आचार्य सत्यजित् जी** ने कहा कि इस सम्बन्ध में पहले भी गुरुकुल सम्मेलन, गोष्ठियाँ, आचार्यों की बैठकें हुई हैं। हम सब गुरुकुल से जुड़े हुए हैं इसलिये इससे सम्बन्धित आशायें, अपेक्षायें, चिन्तायें हमारे अन्दर स्वाभाविक हैं। गुरुकुल से निकलने के बाद योग्य विद्यार्थियों को जीविका की कोई समस्या नहीं होती है। श्रेष्ठ वैदिक विद्वान्, उपदेशक, प्रचारक तैयार करना गुरुकुल का मुख्य उद्देश्य है। विद्यार्थियों को कार्यक्षेत्र में जाने की शीघ्रता न करके धैर्य रखना चाहिये। जिन गुरुकुलों में परीक्षा पद्धति है और विद्यार्थी परीक्षा देकर गुरुकुल से निकलने के बाद विद्यालयों, महाविद्यालयों तथा विश्वविद्यालयों में अध्यापन करते हैं, पुरोहित, उपदेशक बन जाते हैं। उनके द्वारा भी वेद प्रचार होता है। आर्ष पद्धति के गुरुकुल जहाँ परीक्षा प्रणाली नहीं हैं वहाँ केवल आध्यात्मिक उन्नति और सामाजिक कार्य की इच्छा रखने वाले साधक ही पढ़ते हैं। राष्ट्र के लिये श्रेष्ठ आचरण वाले त्यागी, तपस्वी, ईश्वरभक्त और बलिदानी विद्वान् तैयार करना आर्ष गुरुकुलों का प्रमुख उद्देश्य है। आदर्श गुरुकुल में थोड़े विद्यार्थी हों लेकिन वे प्रतिभावान् और परिश्रमी हों। विद्यार्थियों की संख्या गुणवत्ता पर आधारित हो। गुरुकुल के अध्यापकों को शासन की ओर से सम्मान मिलना चाहिये। जिससे वे प्रोत्साहित हों।

आचार्य कर्मवीर जी ने कहा कि वर्तमान में लॉर्ड मैकाले की शिक्षा पद्धति गुरुकुलों की प्रगति और संचालन में सबसे बड़ी बाधा है। अंग्रेजी पढ़े हुए लोग प्रशासन के उच्च पदों तक पहुँच जाते हैं और संस्कृत पढ़े हुए विद्वान् नहीं पहुँच पाते हैं, इसलिये माता-पिता अपने बच्चों को गुरुकुलों में संस्कृत न पढ़ाकर पब्लिक स्कूलों में अंग्रेजी पढ़ाना अच्छा समझते हैं। इतिहास में हम पढ़ते हैं कि गुरुकुल में पढ़कर बड़े-बड़े ऋषि-महर्षि, राम, कृष्ण, चाणक्य जैसे महापुरुष, राजा, महाराजा, सेनापति, मंत्री आदि हुए हैं। साधारण लोग भी गुरुकुलों में ही पढ़ते थे। हमारे देश में विदेशी आक्रमण से पहले सभी जगह गुरुकुल होते थे। विदेशियों ने गुरुकुलों को नष्ट कर दिया। पुस्तकालयों को जला दिया। संस्कृत भाषा को नष्ट करने का पूरा प्रयास किया। संस्कृत के महत्त्व को जानते हुए आर्य समाज आन्दोलन करके सरकार पर दबाव बनाये और संस्कृत का स्तर अंग्रेजी से ऊँचा उठावे, तभी गुरुकुलों की प्रतिष्ठा बढ़ेगी। गुरुकुलों में केवल रोजगारपरक शिक्षा ही नहीं होना चाहिये किन्तु मनुष्य को मनुष्य बनाने वाली शिक्षा भी होनी चाहिये। अध्यात्म, यज्ञ, योग आदि गुरुकुलों के मुख्य विषय होना चाहिये जिससे मनुष्य जीवन के सर्वोच्च लक्ष्य को प्राप्त किया जा सके।

अपने विचार प्रकट करते हुए **ब्र. सत्यव्रत जी** ने

www.thearyasamaj.org

कहा कि वैदिक ऋषियों और वर्तमान महर्षि दयानन्द जी द्वारा प्रतिपादित शिक्षा पद्धति जो मनुष्य को यथार्थ मनुष्य बनाये, उसे देव और ऋषि कोटि तक ले जाकर मोक्ष प्राप्ति के योग्य बनाये उसे ही गुरुकुल शिक्षा पद्धति कहते हैं। आचार्यों और व्यवस्थापकों में धनलोलुपता नहीं होनी चाहिये, कई जगह गुरुकुलों की जमीनें धन के लालच में बेच दी जाती हैं। प्रतिभाशाली व योग्य ब्रह्मचारियों को ही गुरुकुलों में प्रवेश देना चाहिये। गुरुकुलों में केवल व्याकरण और दर्शन आदि शास्त्र पढ़ाकर ब्राह्मण ही नहीं बनाना चाहिये, आयुर्वेद और गणित, विज्ञान आदि विद्या भी पढ़ानी चाहियें। समाज के लिये उपयोगी अन्य विद्या तथा सामाजिक व्यवहार की शिक्षा भी गुरुकुलों में मिलनी चाहिये। गुरुकुलों का संगठन और आपसी तालमेल होना चाहिये। विश्व स्तरीय प्रचार के लिये विदेशी भाषाओं को सिखाने का पाठ्यक्रम हो। एक ही गुरुकुल में संभव न हो तो भिन्न-भिन्न गुरुकुलों के माध्यम से समस्त विद्याओं का समावेश होना चाहिये। शिक्षा समाप्ति पर विद्यार्थियों का दीक्षांत समारोह हो। दीक्षांत समारोह में अभिभावकों और समाज के अन्य लोगों को भी आमन्त्रित करना चाहिये जिससे उन पर गुरुकुल शिक्षा का प्रभाव पड़े। वेदों और यज्ञ पर निरन्तर अनुसंधान होना चाहिये। **ब्र. वेदप्रकाश जी** ने कहा कि गुरुकुल में पढ़े हुए विद्यार्थियों को प्रशासन और जनता द्वारा जीविकोपार्जन हेतु साधन प्राप्त होना चाहिये। वेद, वेदांगों का पूरे विश्व में प्रचार होना चाहिये, जिससे वेदविरुद्ध मतों के प्रचार-प्रसार को रोका जा सके। कन्या गुरुकुलों में योग्य अध्यापिकाओं की व्यवस्था हो। महर्षि दयानन्द द्वारा प्रतिपादित पाठविधि के सभी ग्रन्थों को पढ़ाने की व्यवस्था हो। वेदांगों का क्रियात्मक अध्ययन हो। सभी गुरुकुलों की पाठविधि में समानता हो। वैदिक विद्वान् अपने बच्चे भी गुरुकुलों में ही पढ़ायें। **ब्र. भूदेव जी** ने कहा कि गुरुकुल में अध्ययन काल के अतिरिक्त भी विद्यार्थियों के साथ आचार्यों, प्रबन्धकों का परस्पर व्यवहार, वार्तालाप, भाषण आदि संस्कृत में ही होना चाहिये। संसार में उद्योग आदि के विषय में होने वाले नये-नये खोजों की जानकारी गुरुकुलों में दी जाये और वैदिक शिक्षा के प्रचार-प्रसार के लिये आधुनिकतम तकनीकों का प्रयोग किया जाये। गुरुकुलों में शास्त्रार्थ करने की विद्या पढ़ाई जाये। श्रेष्ठ विद्वानों द्वारा शासन व्यवस्था को नियन्त्रित किया जाना चाहिये। **ब्र. रामप्रकाश जी** ने कहा कि महर्षि दयानन्द द्वारा वर्णित प्राचीन गुरुकुलीय परम्परा के अनुसार आज एक भी गुरुकुल, आचार्य और ब्रह्मचारी नहीं हैं। ग्राम व नगर से दूर निर्जन एकांत स्थान में गुरुकुल नहीं हैं, यदि हैं तो वहाँ पर्याप्त साधन और व्यवस्था नहीं हैं। इसलिये वर्तमान में देश, काल तथा परिस्थिति के अनुकूल गुरुकुल को परिभाषित करना होगा। **स्वामी सोमानन्द जी** ने कहा कि वैदिक ग्रन्थों का पठन-पाठन ही गुरुकुल का उद्देश्य है। सांसारिक विद्या और आध्यात्मिक विद्या एक ही गुरुकुल में सम्भव नहीं है। इसलिये आर्ष शिक्षा वाले गुरुकुलों में डिग्री वाली पढ़ाई नहीं होना चाहिये। डिग्री देने वाले गुरुकुल का अलग रहना उचित है। **ब्र. अंकुश जी** ने कहा कि जनसंख्या तेजी से बढ़ने के कारण आधुनिक शिक्षा प्राप्त करने वालों के लिये भी रोजगार की कमी हो रही है। जो आजीवन ब्रह्मचारी रहकर आध्यात्मिक उन्नति करना चाहते हैं उनके लिए ऐसे गुरुकुल हों, जहाँ डिग्री मिले या न मिले पर उनके लिए आत्मिक उन्नति के और समाज सेवा का अवसर हो। जो दर्शन आदि उच्च शिक्षा प्राप्त ब्रह्मचारी रहें, उन्हें दो-तीन अन्य भाषाओं की जानकारी करवायें जिससे वे देश-विदेश में जाकर वैदिक मान्यताओं का प्रचार-प्रसार कर सकें। इस प्रकार का तन्त्र स्थापित करें कि गुरुकुल शिक्षा प्रणाली को आगे बढ़ाने के लिये राजनीतिक इच्छा शक्ति के साथ राजनेताओं और शासन व्यवस्था पर दबाव बना सके जिससे सरकार हमारे काम में पूरा सहयोग दे न कि बाधा उत्पन्न करे।

महर्षि दयानन्द जन्मोत्सव पर **आचार्य सोमदेव जी** ने कहा कि कोई मनुष्य मरना नहीं चाहता, लेकिन मृत्यु एक अटल सत्य है। स्वामी दयानन्द को अपनी बहन और चाचा की मृत्यु को देखकर वैराग्य हो गया। उन्होंने उसी समय मृत्यु से बचने के उपाय जानने का निश्चय किया। मृत्यु का कारण जानने और उसे दूर करने की उनकी दृढ़ इच्छा ने उन्हें साधारण मनुष्य से योगी, तपस्वी और ऋषि बना दिया। अन्य महापुरुषों की तुलना में ऋषियों को अपना आदर्श मानना और उनके बताये रास्ते पर चलना

www.thearyasamaj.org

अधिक हितकर होता है, क्योंकि वेद के अनुसार ऋषिगण भद्र की इच्छा करते हैं, अनुसरण करते हैं। अभद्र से दूर रहते हैं। ऋषियों का अनुकरण करने से जीवन में दुःख कम और सुख अधिक मिलता है।

सभा मंत्री **श्री ओममुनि जी** ने कहा कि विश्व के इतिहास में स्वामी दयानन्द जैसा कोई दूसरा महापुरुष नहीं है, जिन्होंने विष देने वाले अपने हत्यारे को जीवनदान दिया हो। केवल दयानन्द के गीत गाने से कोई लाभ नहीं होगा बल्कि उनके गुणों को अपने जीवन में उतारना होगा।

श्री रमेश मुनि जी ने गीत सुनाया-'दुनिया वालों देव दयानन्द दीप जलाने आया था.....' स्वामी दयानन्द जी के जन्मदिन पर कवि **श्री नन्दकिशोर काबरा जी** ने स्वरचित कविता सुनाई- मन की गाँठ नहीं खुलती है, गुरुडम के गलियारे में। उसे खोलना है तो जानो, दयानन्द के बारे में।। **ब्र. रोशन जी** ने गीत सुनाया- 'अगर ऋषिवर की बातों पर जमाना चल गया होता....' **ब्र. रविशंकर जी** ने कहा कि महर्षि दयानन्द का नाम ही हमारे लिये स्फूर्तिदायक है, प्रेरणादायक है। ईश्वर भक्ति, वेदों के प्रति निष्ठा, निर्भीकता, दया, परोपकार, वैराग्य, तप आदि उनके गुणों को हम अपने जीवन में विशेषता से अपनायें। **ब्र. दिलीप जी** ने गीत सुनाया-'हे अद्भुत योगी दयानन्द प्यारे, लाखों के तूने जीवन संवारे....' **ब्र. भूदेव जी** ने कहा कि ऋषि दयानन्द जी ने थोड़े समय में बहुत कार्य किया। ईश्वरभक्ति, राष्ट्रभक्ति, वेदविद्या, आर्ष ग्रन्थों में आस्था त्याग, तपस्या आदि गुणों के कारण वे महान् थे। उन्होंने लुप्त हुई वेद विद्या और आर्ष ग्रन्थों को खोजकर हम सबके लिये प्रकाशित किया।

शनिवार सायंकालीन प्रवचन में **श्री मुमुक्षु मुनि जी** ने शतपथ ब्राह्मण के उद्धरण सुनाते हुए बताया कि प्रजापति अर्थात् आत्मा की दो संताने हैं- देव और असुर। अग्निहोत्र यज्ञ से जड़ देवताओं की शुद्धि होती है। आसुरी वृत्तियों का नाश होता है और दैवी वृत्ति बढ़ती है। यज्ञ में पढ़े जाने वाले वेदमन्त्रों का भाव जानना चाहिये, उससे दुर्गुणों, दुर्व्यसनों और दुःखों का नाश होता है। देवपूजा, संगतिकरण और दान से पारिवारिक, सामाजिक उन्नति होती है।

ऋषि उद्यान गुरुकुल के पूर्व स्नातक वर्तमान में पुणे स्थित भारतीय सेना के शान्ति क्षेत्र में धर्मशिक्षक नियुक्त **श्री दीपक जी** ने बताया कि सेना में सभी मत सम्प्रदाय के अनुयायी होते हैं, इसलिये सभी धर्मों का सम्मान करते हुए धर्मसम्बन्धी व्याख्यान होते हैं। लगभग ५०० सैनिकों पर एक धर्मशिक्षक नियुक्त किया जाता है। यदि उनमें २५० किसी एक मत के ही हैं तो उस मत के विद्वान् धर्मशिक्षक होते हैं। सभी को युद्ध सम्बन्धी अनिवार्य प्रशिक्षण दिया जाता है। समय-समय पर वैदिक संस्कार और यज्ञ आदि होते हैं। सैनिकों के शहीद होने पर उनके धर्म के अनुसार अंतिम संस्कार किया जाता है।

वर्षगांठ- ०१ फरवरी को श्री पुष्पेन्द्र देव जी उपाध्याय-श्रीमती पार्वती उपाध्याय और श्री अंकुश जी-श्रीमती शिल्पा जी अपने विवाह वर्षगाँठ पर ऋषि उद्यान के दैनिक यज्ञ में यजमान के रूप में ऋषि उद्यान आए। इसी प्रकार ०६ फरवरी को श्री हरफूल सिंह जी राठी-श्रीमती उर्मिला राठी जी की विवाह वर्षगाँठ पर विशेष यज्ञ किया गया। ०६ फरवरी को ही वानप्रस्थी श्री रमेश मुनि जी का ७३ वाँ जन्म दिवस मनाया गया। ०८ फरवरी को श्री अखिलेश जी-श्रीमती कुमुदिनी जी की विवाह वर्षगाँठ मनाई गई। इस अवसर पर सभी संन्यासियों, वानप्रस्थियों और गुरुकुल के आचार्यों ने सभी यजमानों को आशीर्वाद देते हुए उनके दीर्घायुष्य की कामना की।

*** आचार्य सोमदेव जी का प्रचार कार्यक्रमः-**

सम्पन्न कार्यक्रमः-

(क) १७-१८ फरवरी २०१७: रोजड़, गुजरात।

(ख) १८-२२ फरवरी २०१७: होशंगाबाद में श्री रामावतार के घर पर ऋग्वेद पारायण यज्ञ।

(ग) २३-२६ फरवरी २०१७: आर्यसमाज बिहारीपुर, बरेली।

(घ) २७, २८ फरवरी, १ मार्च २०१७: बांदीकुई में सामवेद पारायण यज्ञ।

आगामी कार्यक्रमः-

(क) १७-१९ मार्च २०१७: आर्य समाज, पलवल।

(ख) २०-२६ मार्च २०१७: आर्य समाज कीर्तिनगर, नई दिल्ली।

(ग) २७-२९ मार्च २०१७: आर्य समाज कुचेरा, जि. नागौर।

www.thearyasamaj.org

आर्यसमाज – समस्या और समाधान

– धर्मवीर

आर्यसमाज से सम्बन्ध रखने वाले, आर्यसमाज का हित चाहने वाले लोग समाज की वर्तमान स्थिति से चिन्तित हैं। उन्हें दु:ख है कि एक विचारवान्, प्राणवान् संगठन निष्क्रिय और निस्तेज कैसे हो गया? इसके लिए वे परिस्थितियों को दोषी मानते हैं, आर्यों की अकर्मण्यता को कारण समझते हैं। यह सब कहना ठीक है, परन्तु इसके साथ ही इसके संरचनागत ढांचे पर भी विचार करना आवश्यक है, जिससे समस्या के समाधान का मार्ग खोजने में सहायता मिल सकती है।

स्वामी दयानन्द जी ने अपने समय की सामाजिक परिस्थितियों को देखकर ऐसा अनुभव किया कि धार्मिक क्षेत्र में गुरुवाद ने एकाधिकार कर रखा है, उसके कारण उनमें स्वेच्छाचार और उच्छृंखलता आ गई है। इनके व्यवहार पर कोई अंगुली नहीं उठा सकता, इस परिस्थिति का निराकरण करने की दृष्टि से इसके विकल्प के रूप में प्रजातन्त्र को स्वीकार करने पर बल दिया। मनुष्य के द्वारा बनाई और स्वीकार की गई कोई भी व्यवस्था पूर्ण नहीं होती, जिस प्रकार अधिनायकवादी प्रवृत्ति दोषयुक्त है, उसी प्रकार प्रजातान्त्रिक पद्धति में दोष या कमी का होना स्वाभाविक है।

शासन में यह पद्धतियों का परिवर्तन चलता रहता है, परन्तु स्वामी दयानन्द की यह विशेषता है कि उन्होंने धार्मिक क्षेत्र में उसे चलाने का प्रयास किया जबकि धार्मिक क्षेत्र आस्था से संचालित होता है, जिसका बहुमत अल्पमत से निर्धारण सम्भव नहीं होता, परन्तु स्वामी जी का धर्म केवल भावना या मात्र आस्था का विषय नहीं अपितु वह ज्ञान और बुद्धि का भी क्षेत्र है। इसी कारण वे इसे प्रजातन्त्र के योग्य समझते हैं।

इससे पूर्व गुरु परम्परा की सम्भावित कमियों को देखकर गुरु गोविन्द सिंह सिक्ख सम्प्रदाय के दशम गुरु ने अपना स्थान पंचायत को दे दिया था, यह भी धार्मिक क्षेत्र की अधिनायकवादी प्रवृत्ति के निराकरण का प्रयास था। स्वामी दयानन्द सरस्वती ने उसे और अधिक विस्तार दिया और समाज के सदस्यों को बहुमत से फैसला करने का अधिकार दिया।

यह प्रजातन्त्र का नियम आर्यसमाज के संस्थागत ढांचे का निर्माण करता है। समाज के सदस्यों की संख्या बहुमत के आधार पर उसके अधिकारियों का चयन करती है। अत: बहुमत जिसका होगा, वह प्रधान और मन्त्री बनेगा, मन्त्री बनने की कसौटी अच्छा या बुरा होना नहीं अपितु संख्या बल का समर्थन है, इसलिए अच्छे व्यक्ति अधिकारी बनें, यह सोच गलत है। अच्छा या बुरा होना अधिकारी बनने की वैधानिक परिधि में नहीं आता। अच्छे और बुरे का फैसला भी तो अन्तत: कानून के आधीन है। अत: जैसे सदस्यों की संख्या अधिक होगी, वैसे ही अधिकारी बनेंगे।

आर्यसमाज का सदस्य कौन होगा, जो आर्य हो, स्वामी दयानन्द द्वारा बनाये गये नियमों और सिद्धान्तों में विश्वास रखता हो तथा तदनुसार आचरण करता हो। चरित्र नैतिकता का क्षेत्र है, वह अमूर्त है, इसका फैसला कौन करेगा? अन्तिम फैसला सभा के सदस्य करेंगे, जिसका बहुमत होगा वह चरित्रवान् होगा, जिसका समर्थन कम होगा, वह चरित्रवान् नहीं कहलायेगा, जैसा कि आजकल संगठन हो रहा है, हम भली प्रकार जानते हैं।

सामाजिक संगठन की रचना सदस्यों के द्वारा होती है, सदस्यता चन्दे से प्राप्त होती है। जिसने भी चन्दा दिया है, वह आर्यसमाजी है, अन्य नहीं। ऐसी परिस्थिति में आप जब तक चन्दा देते हैं या जब तक संगठन आपका चन्दा स्वीकार करता है, आप आर्यसमाजी है, अन्यथा नहीं। इसी प्रकार आपके परिवार का कोई सदस्य चन्दा देता है, तो आर्यसमाजी हैं, अन्यथा नहीं, ऐसी स्थिति में जिसके स्वयं के आर्यसमाजी होने का भरोसा नहीं, उसके परिवार और समाज के आर्यसमाजी बनने की बात वैधानिक स्तर पर कैसे सम्भव होगी, यह एक संकट की स्थिति है।

www.thearyasamaj.org

बोधगीत

- देवनारायण भारद्वाज 'देवातिथि'

शिव शोध बोध प्रति पल पागो।
जागो रे व्रतधारक जागो।।
जब जाग गये तो सोना क्या,
बैठे रहने से होना क्या।
कर्त्तव्य पथ पर बढ़ जाओ,
तो दुर्लभ चाँदी सोना क्या।।
मत तिमिर ताक श्रुति पथ त्यागो।
जागो रे व्रतधारक जागो।।१।।
बन्द नयन के स्वप्न अधूरे,
खुले नयन के होते पूरे।
यही स्वप्न संकल्प जगायें,
करें ध्येय के सिद्ध कँगूरे।।
संकल्प बोध उठ अनुरागो।
जागो रे व्रतधारक जागो।।२।।
शिव निशा जहाँ मुस्काती है,
जागरण ज्योति जग जाती है।
संकल्पहीन सो जाते हैं,
धावक को राह दिखाती है।।
श्रुति दिशा छोड़कर मत भागो,
जागो रे व्रतधारक जागो।।३।।
बोध मोद का लगता फेरा,
मिटता पाखण्डों का घेरा।
शिक्षा और सुरक्षा सधती,
हटता आडम्बर का डेरा।।
बोध गोद प्रिय प्रभु से माँगो।
जागो रे व्रतधारक जागो।।४।।
कुल फूल मूल शिव सौगन्धी,
शंकर कर्षण सुत सम्बन्धी।
रक्षा, संचेत अमरता से,
हों जन्म उन्हीं के यश गन्धी।।
योग-क्षेम के क्षितिज छलाँगो।
जागो रे व्रतधारक जागो।।५।।

- अलीगढ़, उ.प्र.

बलिदान पर्व ६ मार्च पर विशेष

वाह! प्यारे वीर पं. लेखराम

(**विशेष टिप्पणी**:- ७२ वर्ष पूर्व पं. त्रिलोकचन्द जी शास्त्री रचित यह सुन्दर गीत आर्य मुसाफिर के विशेषाङ्क में छपा था। पूज्य पण्डित जी सात भाषाओं के विद्वान्, तीन भाषाओं के सिद्धहस्त लेखक तथा कवि थे। सर्वाधिक पत्रों के सम्पादक रहे। तीन आर्यपत्रकारों १. स्वामी दर्शनानन्द जी, २. पं. त्रिलोकचन्द्र जी, एवं ३. पं. भारतेन्द्रनाथ पर आर्यसमाज को बहुत अभिमान है। आपने उर्दू-हिन्दी में कविता लिखनी क्यों छोड़ दी? यह कभी बताया नहीं। जीवन के अन्तिम वर्षों में केवल संस्कृत में ही काव्य रचना करते थे। पं. लेखराम जी पर उनकी यह ऐतिहासिक रचना, यह अमर गीत पाठकों को सादर भेंट है-'**जिज्ञासु**')

रौदाय तालीम पं. लेखराम।
लायके ताज़ीम पं. लेखराम।।
अज़मते लासानी ज़ाहिर दर जहाँ।
दौर अज़ तफ़सीर पण्डित लेखराम।।
उलफ़ते तसदीके वेद पाक थी।
मखज़ने तफ़सीर पण्डित लेखराम।।
दूर की सारी बतालत कुफ्र की।
असद-तकफ़ीर पण्डित लेखराम।।
अय मुबल्लिग़ मुफ़स्सिर वेद के।
माहिरे तहरीर पण्डित लेखराम।।
जुल्मे ज़ालिम झेलकर भी उफ़ न की।
वाह! प्यारे वीर पं. लेखराम।।
रफ़्ता रफ़्ता वेद के कायल हुए।
सुन तेरी तकरीर पण्डित लेखराम।।
अबद तक कायम रहेगा नामे तू।
तू 'अमर' अय वीर पण्डित लेखराम।।

- पं. त्रिलोकचन्द्र जी 'अमर' शास्त्री
लेखराम नगर (कादियाँ), पंजाब।

www.thearyasamaj.org

राष्ट्र निर्माता : स्वामी दयानन्द सरस्वती
(१८२४-१८८३)

- हरिकिशोर

विश्व में जिन महापुरुषों ने इस धरा को धन्य किया, उनमें स्वामी दयानन्द सरस्वती का स्थान बहुत ऊँचा है। सामान्यतया लोग उन्हें समाज-सुधारक के रूप में ही याद करते हैं, जबकि वास्तविकता यह है कि उनका व्यक्तित्व बहु-आयामी था। उन्होंने विभिन्न क्षेत्रों में जागृति उत्पन्न करने का प्रयास किया। उस युग में स्वतन्त्रता, स्वराज्य और जनतान्त्रिक व्यवस्था की बात करने वाले तो वे सर्वप्रथम और एकमात्र महापुरुष थे। इसी कारण महात्मा गाँधी ने निम्नलिखित शब्दों में उनका योगदान स्वीकार किया- ''जनता से सम्पर्क, सत्य, अहिंसा, जन-जागरण, लोकतन्त्र, स्वदेशी-प्रचार, हिंदी, गोरक्षा, स्त्री-उद्धार, शराब-बंदी, ब्रह्मचर्य, पंचायत, सदाचार, देश-उत्थान के जिस-जिस रचनात्मक क्षेत्र में मैंने कदम बढ़ाए, वहाँ दयानन्द के पहले से ही आगे बढ़े कदमों ने मेरा मार्गदर्शन किया।'' सत्य को सत्य कहना और असत्य को असत्य कहना महापुरुषों का चरित्र होता हैं। स्वामी जी का उद्देश्य मनुष्य को सच्चे अर्थों में मनुष्य बनाना (मनुर्भव) था, इसलिए उन्होंने धर्म के नाम पर प्रचलित पाखंड, आडम्बर, अत्याचार, शत्रुता, मार-काट को रोकने का साहसिक कार्य किया।

भारत में राष्ट्रीयता का उदय दो शब्दों से संभव हो सका-एक बंकिमचन्द्र चटर्जी का 'वन्दे मातरम्', दूसरा स्वामी दयानन्द का 'स्वराज्य'। आज की राजनैतिक स्वतन्त्रता इन्हीं शब्दों के कारण मिली है। महर्षि दयानन्द का समस्त चिंतन राष्ट्रीयता से ओतप्रोत रहा। एक भाषा, एक धर्म और एक राष्ट्र के लिए दयानन्द ने अथक परिश्रम किया था। स्वयं गुजराती होते हुए भी उन्होंने हिंदी भाषा को राष्ट्रभाषा के रूप में देखा। भारतीय नवजागरण के आन्दोलन में स्वामी दयानन्द की भूमिका अत्यन्त महत्त्वपूर्ण रही।

स्वामी जी ने अपने समय में एकता स्थापित करने के लिए तीन ऐसे कार्य किये, जिन्हें इतिहास में उचित स्थान न मिल सका। प्रथम, हरिद्वार कुम्भ मेले में संन्यासियों के मध्य वेदों पर आधारित धार्मिक विचार रखे, ताकि मतभेद दूर होकर एकता स्थापित हो सके, परन्तु संन्यासीगण अपने स्वार्थों, अखाड़ों की परम्पराओं और व्यवहारों के कारण स्वामीजी के विचारों से सहमत न हो सके। दूसरा, शास्त्रार्थ द्वारा सत्य और असत्य का निर्णय कर विद्वानों को संगठित करना, ताकि सत्य को ग्रहण और असत्य को त्यागा जा सके, परन्तु विद्वानों का अहंकार और रोजी-रोटी का लालच इस प्रयास में बाधा बना। स्वामीजी का यह मानना था कि विद्वानों के संगठित होते ही राष्ट्र जीवित हो उठेगा। तीसरा, सन् १८७७ ई. में हुए दिल्ली दरबार के समय समाज-सुधारकों (सर सय्यद अहमद खाँ, केशवचन्द्र सेन आदि) को आमंत्रित कर सर्वसम्मत कार्यक्रम बनाकर समाज-सुधार किया जाए, परन्तु समाज-सुधारक कोई सर्वसम्मत कार्यक्रम न बना सके।

स्वामी जी चाहते थे कि धर्म, समाज और राष्ट्र के लिए संन्यासी, विद्वान् एवं सुधारक मिलकर कार्य करें। संन्यासियों, विद्वानों और समाज-सुधारकों से मिलकर भी अच्छे परिणाम न मिले तो स्वामी जी ने सीधे जनता से लोक-सम्पर्क करना प्रारम्भ कर दिया। उनके प्रवचन एवं उपदेशों से जनता जाग्रत हो गयी। जो काम संन्यासी, विद्वान् और सुधारक न कर सके, वह काम जनता ने अपने हाथ में ले लिया। स्वामी दयानन्द की सफलता लोक-सम्पर्क के कारण संभव हो सकी। किसानों को राजाओं का राजा कहने वाले दयानन्द जन सामान्य के हृदय में स्थान बना गए।

भारतीय इतिहास में १९ वीं शताब्दी का समय पुनर्जागरण का काल माना जाता है। दयानन्द इसी काल के ऐसे महापुरुष हैं, जिन्होंने धर्म, समाज, संस्कृति तथा राष्ट्रीय जीवन के सभी क्षेत्रों में नवचेतना का संचार किया। नवजागरण काल का नेतृत्व उन्होंने भारतीय तत्त्व चिंतन तथा वैदिक-दर्शन के आधार पर किया। स्वामी दयानन्द आधुनिक युग के प्रकांड विद्वान् तथा महान् ऋषि थे। वेदों का हिंदी में भाष्य करने का महान् श्रेय स्वामीजी को जाता है।

www.thearyasamaj.org

वे वेद-शास्त्रों के गंभीर विद्वान्, महान् समाज सुधारक, राष्ट्रवादी और प्रगतिशील चिन्तक होने के साथ-साथ अपने समय के श्रेष्ठ साहित्यकार थे। १९ वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में उन्होंने विशाल साहित्य का सृजन किया। उनका गद्य संस्कृतमय है जिसमें ओज, हास्य एवं व्यंग्य पर्याप्त मात्रा में विद्यमान है। उनका मानना था 'हितेन सह सहितं, तस्य भाव: साहित्यं' अर्थात् साहित्य के भीतर हित की भावना प्रबल होती है, इसलिए उन्होंने अपने लेखन और प्रवचन में प्राणी मात्र का हित सर्वोपरि रखा। उन्होंने हिंदी को फारसी सहित विदेशी भाषाओं के प्रभाव से मुक्त कर संस्कृत से जोड़ दिया, इससे हिंदी सशक्त एवं नए शब्दों की जननी बन सकी। हिंदी के स्वरूप को साहित्यिक स्तर और स्थिरता प्रदान करना स्वामीजी का अद्‌भुत कार्य था।

ऋषि दयानन्द ने प्राचीन, किन्तु जो हिंदी भाषा में नहीं थे, ऐसे शब्दों का प्रचलन किया-जैसे आर्य, आर्यावर्त, आर्यभाषा तथा नमस्ते। सर्वप्रथम स्वामी जी ने 'नमस्ते' का शब्दरत्न भारतीय समाज को दिया, जो आज भारत का राष्ट्रीय अभिवादन बन चुका है। राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त ने अपनी रचना 'भारत भारती' में तो ऋषि दयानन्द के सभी सुधारों का प्रबल समर्थन किया है। द्विवेदी युग, भारतेंदु युग और छायावादी युग के हिंदी साहित्य में दयानन्द की सुधारवादी भावना का प्रभाव स्पष्ट देखा जा सकता है। स्वामी जी का समस्त साहित्य समाजवाद, राष्ट्रवाद, मानववाद, यथार्थवाद और सुधारवाद से पूर्ण है।

स्वामीजी ने उच्च कोटि के ग्रन्थ लिखे, जो मानव मात्र के लिए सदैव उपयोगी रहेंगे। इनमें प्रमुख हैं-संस्कार विधि, पंचमहायज्ञ विधि, ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका, आर्याभिविनय, वेद-भाष्य का नमूना, चतुर्वेद विषय सूची, यजुर्वेद भाष्य, आर्योद्देश्यरत्नमाला, व्यवहारभानु, गोकरुणानिधि, संस्कृत वाक्य प्रबोध, वर्णोच्चारण शिक्षा, अष्टाध्यायी भाष्य, वेदांग प्रकाश.....आदि। स्वामी जी की सर्वोत्तम कृति है 'सत्यार्थप्रकाश', जिसे क्रन्तिकारियों की गीता भी कहा गया। अंडमान की सेल्युलर जेल (कालापानी) से लेकर विदेशी जेलों तक में बंद हमारे देशभक्त क्रान्तिकारी इस ग्रन्थ से मार्गदर्शन पाते रहे। यह पुस्तक जीवन के हर क्षेत्र में आने वाली समस्याओं के स्थिर एवं सकारात्मक समाधान खोजने में सहायक सिद्ध हुई है।

स्वामीजी की स्पष्ट घोषणाएं

सब मनुष्य आर्य (श्रेष्ठ) हैं। वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है, अत: वेदों की ओर लौट चलो। ईश्वर निराकार और सर्वशक्तिमान है। श्रेष्ठ कर्म, परोपकार तथा योगाभ्यास से ईश्वर को प्राप्त किया जा सकता है। मूर्तिपूजा वेद-विरुद्ध है, जो भारत की पराधीनता का कारण भी बनी। जन्मजात जाति-व्यवस्था गलत, परन्तु कर्मानुसार वर्ण-व्यवस्था उचित है। कोई वर्ण ऊँचा या नीचा नहीं है, अपितु सारे वर्ण समान हैं। स्त्री, शूद्रों सहित सभी को वेद पढ़ने-पढ़ाने का अधिकार स्वयं वेद देता है-यथेमां वाचं कल्याणीमावदानि जनेभ्य:। (यजुर्वेद) स्वराज्य सर्वोत्तम होता है। विदेशी राजा हमारे ऊपर कभी शासन ना करें। हिंदी द्वारा सम्पूर्ण भारत को एकसूत्र में पिरोया जा सकता हैं। गणित ज्योतिष सत्य लेकिन फलित ज्योतिष असत्य है। मनुष्य का आत्मा सत्य और असत्य का जानने वाला है। अपनी भाषा, संस्कृति और भारतीयता पर गर्व होना चाहिए। संसार का उपकार करना आर्यसमाज का मुख्य उद्देश्य है। मनुर्भव अर्थात् मनुष्य को सच्चे अर्थों में मनुष्य बनना चाहिए।

स्वामी जी के योगदान को देश-विदेश के महापुरुषों ने अलग-अलग रूप में देखा। जहाँ लोकमान्य तिलक उन्हें 'स्वराज्य का प्रथम संदेशवाहक' मानते हैं, वहीं नेताजी सुभाषचन्द्र बोस 'भारत का निर्माता'। लाला लाजपत राय 'पिता तुल्य' दयानन्द के उपकारों का अनुभव करते हैं तो सरदार पटेल 'भारत की स्वतन्त्रता की नींव' रखने वाले दयानन्द को उसका पूरा श्रेय देते हैं। पट्टाभि सीतारमैय्या को वे राष्ट्र-पितामह लगे, मैडम ब्लेवेट्स्की को 'आदि शंकराचार्य के बाद बुराई पर सबसे निर्भीक प्रहारक', परन्तु बिपिनचन्द्र पाल को तो वे 'स्वतन्त्रता के देवता तथा शान्ति के राजकुमार' प्रतीत हुए। जब स्वामी जी ने 'भारत भारतीयों के लिए' की घोषणा की तो श्रीमती एनी बेसेन्ट को ऐसी घोषणा करने वाला प्रथम व्यक्ति मिल गया। फ्रैंच लेखक रोमा रोलां ने 'राष्ट्रीय भावना और जन-जागृति को क्रियात्मक रूप देने में' स्वामी दयानन्द को सदैव प्रयत्नशील

www.thearyasamaj.org

पाया। रवीन्द्रनाथ टैगोर ने भी अपने हृदय के भाव व्यक्त करते हुए कहा- 'मेरा सादर प्रणाम हो उस महान् गुरु दयानन्द को, जिसकी दृष्टि ने भारत के इतिहास में सत्य और एकता को देखा'। सर सैयद अहमद खाँ के लिए 'वे ऐसे व्यक्ति थे, जिनका अन्य मतावलम्बी भी सम्मान करते थे'। **कस्तूरी बाइ** इससे भी एक कदम आगे बढ़कर, उन्हें आर्यसमाजियों के लिए ही नहीं वरन सारी दुनिया के लिए पूज्य मानती रहीं। सद्गुरुशरण अवस्थी मानते हैं कि 'सामाजिक, दार्शनिक तथा राजनैतिक विषयों पर सबसे पहले स्वामी जी की लेखनी खुली।' प्रो. हरिदत्त वेदालंकार हिंदी सेवा की दृष्टि से स्वामी दयानन्द का स्थान 'सर्वप्रथम' मानते हैं। भारतेंदु हरिश्चंद्र, विष्णु प्रभाकर, मुंशी प्रेमचन्द, प्रताप नारायण मिश्र, अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' और पंडित राहुल सांकृत्यायन जैसे पूज्य विद्वान् लेखक दयानन्द के सुधारवादी और प्रगतिवादी विचारों से ऊर्जा लेकर साहित्य सेवा में जुटे रहे। डॉ. रघुवंश के अनुसार कुछ समन्वयवादियों और अंतर्राष्ट्रवादियों ने दयानन्द को कट्टरपंथी और खंडन-मंडन करने वाले सुधारक के रूप में प्रस्तुत करने की चेष्टा की है, परन्तु वस्तुस्थिति यह है कि उनके जैसा उदार मानवतावादी नेता दूसरा नहीं रहा है। यह दयानन्द की उदारता ही थी कि उनके अनुयायी स्वामी श्रद्धानन्द दिल्ली की जामा मस्जिद में **'त्वं हि नः पिता वसो त्वं माता'**.... इस वेद मन्त्र का उच्चारण कर सके और मुस्लिम विद्वान् गुरुकुल काँगड़ी की यज्ञशाला के पास नमाज़ पढ़ सके।

जीवन में दो पक्ष होते हैं-सत्य एवं स्वार्थ। दयानन्द सत्य के साथ और सत्य दयानन्द के साथ था। वे अपनी 'विजय' के लिए नहीं, अपितु सत्य की स्थापना के लिए तत्पर रहे। उनकी कठोरता बुराइयों को नष्ट करने के लिए थी। जिस प्रकार एक सच्चा डॉक्टर मरीज को स्वस्थ रखने के लिए कठोर किन्तु उचित निर्णय लेता है, उसी प्रकार दयानन्द भी सत्य के मंडन के लिए असत्य का खंडन अनिवार्य समझते थे। मानव मात्र के उत्थान और राष्ट्र के कल्याण के लिए अपना सर्वस्व बलिदान करने वाले ऋषि दयानन्द के मंतव्य और उद्देश्य आज भी हम सब के लिए प्रेरणा के स्रोत हैं।

आवश्यक-सूचना

परोपकारिणी सभा की रसीद-बुक (रसीद संख्या ४५५१ से ४६०० तक) ऋषि मेले के समय खो गई है, जिसमें संख्या ४५५१ से ४५८८ तक की रसीदें कटी हुई हैं। इन संख्याओं की रसीदें जिन भी महानुभावों के नाम से काटी गई हों वे कृपया अपनी रसीद की एक फोटो कॉपी सभा के पते पर अवश्य भेज देवें।

- मन्त्री

आचार्य धर्मवीर जी की स्मृति में स्थिर-निधि

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने परोपकारिणी सभा की स्थापना करते समय तीन उद्देश्य रखे थे-

१. वेद और वेदांगादि शास्त्रों के प्रचार अर्थात् उनकी व्याख्या करने-कराने, पढ़ने-पढ़ाने, सुनने-सुनाने, छापने-छपवाने आदि में, २. वेदोक्त-धर्म के उपदेश और शिक्षा अर्थात् उपदेशक-मण्डली नियत करके देश-देशान्तर और द्वीप-द्वीपान्तर में भेजकर सत्य के ग्रहण और असत्य के त्याग कराने आदि में ३. आर्यावर्तीय अनाथ और दीन मनुष्यों के संरक्षण, पोषण और सुशिक्षा में व्यय करें और करावें।

इन कार्यों को करने के लिये सभा का वर्तमान मासिक व्यय लगभग १२ लाख रुपये है, जो कि आर्यजनों के दान पर ही निर्भर है। परोपकारिणी सभा के कार्यकारिणी अधिवेशन सं. २२९ एवं साधारण अधिवेशन सं. १२० के प्रस्ताव १३ में आचार्य धर्मवीर जी द्वारा प्रारम्भ किये गये बृहत् प्रकल्पों (प्रकाशन, प्रचार, अध्यापन आदि) के लिये आचार्य धर्मवीर जी की स्मृति में एक करोड़ रुपये की स्थिर-निधि बनाने का संकल्प लिया गया है। आर्यजनों से निवेदन है कि इस पुनीत कार्य में अपना अधिक से अधिक सहयोग प्रदान कर आचार्य जी को श्रद्धाञ्जलि अर्पित करें।

आप अपना दान चैक, ड्राफ्ट या सभा के खाते में सीधे भी भेज सकते हैं। कृपया, राशि भेजने के पश्चात सभा में दूरभाष या पत्र द्वारा अवश्य सूचित कर दें।

- मन्त्री

www.thearyasamaj.org

आर्यसमाज की आवश्यकता

- उत्तमचन्द शरर

प्राय: जनसाधारण में यह कहने का फैशन सा बन गया है कि अब आर्यसमाज की कोई आवश्यकता नहीं, इसके सुधार सम्बन्धी सभी कार्य या तो पूरे हो चुके और समाज ने उन्हें स्वीकार कर लिया अथवा कुछ अन्य संस्थाओं ने उन्हें अपने हाथ में ले लिया है। स्त्री-शिक्षा का कार्य तो प्राय: सभी ने स्वीकार कर लिया है, दलितोद्धार के सम्बन्ध में सरकार ने कानून बना दिया, हरिजनों की उन्नति में सरकार स्वयं प्रयत्नशील है, नौकरी में उनके अधिकारों का आरक्षण हो रहा है, विभिन्न राजनैतिक पार्टियाँ मण्डल आयोग की होड़ में एक-दूसरे से आगे आने के प्रयत्न में हैं और इस सत्य से किसे इन्कार हो सकता है कि हरिजनों की उन्नति के लिये जो कुछ सरकार कर सकती है, आर्यसमाज का कार्य उसके सम्मुख कितना हो सकता है? जन्म की वर्ण-व्यवस्था भी अब नाम मात्र है, शुभकर्मों के महत्त्व को कौन नहीं मानता? ब्राह्मण नामधारी यदि विद्वान् नहीं तो उसे कौन पूछता है, इसी प्रकार मूर्तिपूजा भी अब दिखने को अधिक है, परन्तु मूर्ति को ईश्वर मानकर उसके भरोसे पर आज राष्ट्र के अस्तित्व को कोई दाँव पर लगाने को तैयार नहीं।

यह दृष्टिकोण कई स्थानों पर तो आर्यों में भी पाया जाता है। परन्तु यदि ध्यान से देखा जाये, तो सारा कार्य अधूरा सा लगता है। नारी-जाति आज भी पददलित है, दहेज का दानव उसे निगल रहा है, आज भी जवान लड़की जीवित जला दी जाती है। हरिजन नाम ने पिछड़ी जातियों को सदैव पिछड़ा कहलाने पर विवश कर दिया है। उनके आरक्षण के प्रलोभन ने ब्राह्मण का कार्य करने वालों को भी अपनी जन्म की जाति चमार आदि लिखवाने पर मजबूर कर दिया है, यदि वे ऐसा न करें, तो असैम्बली की सीट नहीं मिलती है। मूर्तिपूजा का प्रचार तो सरकार तथा दूरदर्शन धमाके से कर रहे हैं। कभी गाँधी जी की समाधि पर फूल चढ़ाये जाते हैं तो कभी विवेकानन्द के चित्रों पर। राजनैतिक नेता प्राय: फलित ज्योतिष के चक्कर में हैं। कई नामधारी संन्यासी और तथाकथित ब्रह्मचारी राष्ट्र-नेताओं का पथ-प्रदर्शन तान्त्रिक विद्या से कर रहे हैं। वास्तविकता यह है कि आर्यसमाज का यह सुधार-सम्बन्धी कार्य तो पहले से भी जटिल हो गया है। परन्तु मैं तो एक और तथ्य की ओर पाठकों का ध्यान आकर्षित करना चाहता हूँ। वैदिक संस्कृति इस देश का मूलाधार है और स्वयं वेद के सम्बन्ध में आर्यसमाज के अतिरिक्त और किसी को सोचने का अवसर ही नहीं। आर्यसमाज अपनी शक्ति अनुसार इस बृहत् कार्य को लिये हुए है, वेद सम्बन्धी अनुसन्धानात्मक पुस्तकें, वेदों का विभिन्न भाषाओं में अनुवाद, वेद-प्रचार आदि यह केवल आर्यसमाज का ही कार्य है। राजनैतिक सभाएँ तो इस 'सम्प्रदायवाद' में उलझने से रहीं। जो लोग अपने वोटों के लिये स्वामी श्रद्धानन्द के राष्ट्रीय स्वरूप को प्रस्तुत करने से डरते हैं, दूरदर्शन पर उसकी चर्चा से भी भयभीत हैं, वे वेदों के सम्बन्ध में क्या करेंगे? वेदों से अधिक सम्प्रदायवाद से ऊँचा कोई ग्रन्थ नहीं, परन्तु स्वयं को सम्प्रदायवाद से दूर कहलाने वाले इस पवित्र ग्रन्थ की शिक्षाओं के प्रसार से जनता को वंचित कर रहे हैं, यह कैसी विडम्बना है? रहे सनातनधर्मी, वे बेचारे तुलसी रामायण से ही मुक्ति नहीं पा सके, दौड़ लगाएँगे तो गीता तक, वह भी केवल पूजा-अर्चना के लिये, अनुसन्धान की बात उनका क्षेत्र नहीं। इस्लाम तथा ईसाईमत, कुरान तथा बाइबल के पक्षधर हैं। उनमें से प्राय: लोग वेदों के दर्शन ही नहीं कर पाये। जो कुछ जानते हैं, वे मजहबी वातावरण में सत्य को सत्य कहने का स्वयं में साहस नहीं कर पाते। आखिर वेदों का तथा कुरान बाइबल का मुकाबला ही क्या?

ऐसी विषम परिस्थिति में आर्यसमाज के अतिरिक्त को वेदानुद्धरिष्यति?

आज तथाकथित धार्मिक एवं राजनैतिक सभाएँ अंधविश्वास से जनता को लूट रही हैं। भाजपा के अध्यक्ष भी अपने राजनैतिक लाभ के लिए अपनी एकता यात्रा के आरम्भ में यज्ञ तथा भैंसे की बलि देने से नहीं घबराते। भाजपा में रहने वाले आर्य बन्धुओं की वह दशा है जो आज कम्युनिज्म के गढ़ रूप की समाप्ति पर भारत के

www.thearyasamaj.org

कम्युनिस्टों की है, वे बेचारे जैसे-तैसे जोशी जी के कृत्य को उचित सिद्ध करने का प्रयास करते हैं। एक भाजपा के आर्यसमाजी कार्यकर्ता ने उत्तर में कहा "यह सारा दोष भाजपा का नहीं, आर्यसमाज का है, उसने उस क्षेत्र में प्रचार क्यों नहीं किया? क्या विचित्र उत्तर है! जैसे उत्तर-दाता स्वयं आर्यसमाजी नहीं है? ऐसे तो प्रत्येक सम्प्रदाय अपने ऊलजलूल वेद-विरुद्ध कृत्यों का दोष आर्यसमाज पर मढ़ सकता है। वस्तुतः पाखण्ड के विनाश के लिये केवल एक संस्था है, जिसका नाम आर्यसमाज है और जिसे न तो हिन्दू या मुसलमान से वोट लेने का प्रलोभन है, न संस्कृतिविहीन पाखण्डों में फंसे हिन्दू के संगठन द्वारा दुकान चमकाने का शौक है। उसका तो लक्ष्य है- 'अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि।' वह किसी एक वर्ग के पाखण्ड का मोहवश पक्षधर नहीं हो सकता। आर्यसमाज जानता है कि यदि अन्धविश्वास से ग्रस्त हिन्दू समाज के हाथ में राज्य कभी आ भी गया, तो कोई मुहम्मद बिन कासिम या महमूद गजनवी उसे परास्त कर सकता है।

आओ, हम आर्यसमाज के महत्व को समझें और अपने अहं को बलि देकर भी इसे सुदृढ़, सशक्त तथा संगठित बनावें, ऋषि के इन वचन को न भूलें "जो उन्नति चाहते हो, तो आर्यसमाज के साथ मिलकर कार्य करो, नहीं तो कुछ हाथ न लगेगा।"

विशेष सूचना

परोपकारी-पत्रिका के सभी पाठकों एवं आर्यजनों से निवेदन है कि डॉ. धर्मवीर जी से सम्बन्धित कोई पत्र, चित्र, ऑडियो, वीडियो आदि आपके पास हों तो कृपया सभा के पते पर अवश्य ही भिजवा देवें।

डॉ. धर्मवीर जी के जीवन पर प्रकाशित होने वाले विशेषांक के लिए जिन भी महानुभावों के पास उनसे सम्बन्धित कोई भी संस्मरण या कविता आदि हों, वे भी अतिशीघ्र सभा को भेजने का कष्ट करें, ताकि आपके लेख विशेषांक में प्रकाशित किये जा सकें।

ई-मेल-psabhaa@gmail.com

मन्त्री, परोपकारिणी सभा, दयानन्द आश्रम, केसरगंज,

अजमेर-३०५००१ (राज.)

मनुष्यों को चाहिये कि अपने पुरुषार्थ से सुवर्ण आदि धन को इकट्ठा कर घोड़े आदि उत्तम पशुओं को रक्खें क्योंकि जब तक इस सामग्री को नहीं रखते तब तक गृहाश्रमरूपी यज्ञ परिपूर्ण नहीं कर सकते इसलिये सदा पुरुषार्थ से गृहाश्रम की उन्नति करते रहें। -महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.६३

राजा और प्रजा जन परस्पर सम्मति से समस्त राज्य व्यवहारों की पालना करें।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ६.२६

जैसे वेद के वेत्ता विद्वान् लोग वेदानुकूल मार्ग से परमेश्वर को जानकर उत्तम ज्ञान से उसका सेवन करते हैं, वैसे ही जगदीश्वर सब को उपासनीय अर्थात् सेवन करने के योग्य है, वैसे ज्ञान के विना ईश्वर की उपासना कभी नहीं हो सकती क्योंकि विज्ञान ही उसकी अवधि है।

- महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.४१

www.thearyasamaj.org

जीने की हकीकत

-सोमेश पाठक

जो सोच भी सोच सकी न कभी
वो सोच ही आज ये सोचती है,
कि जीने के लिये तो दुनिया में मरने की जरूरत होती है।
जो जीकर न जी पाये वो मरकर भी क्या जी पायेंगे,
मरकर के जी पाना ही तो जीने की हकीकत होती है।।
जीवन-जीवन रटते हैं सब ये तो बस बहता पानी है,
जो रुके एक पल भी न कभी इसकी बस यही कहानी है।
जीवन को जीवन कहने का गर मोल है कुछ तो इतना ही,
मृत्यु जो इक सच्चाई है...जीवन की बदौलत होती है।।
मरकर के जी........

क्या मिला और क्या छूट गया? क्या जुड़ा और क्या टूट गया?
बुलबुला एक पानी का था बन ना पाया और फूट गया।
हँसना-रोना, जगना-सोना ये खेल रंगमंचों के हैं,
क्या मृत्यु से बढ़कर भी दुनिया में कोई दौलत होती है।।
मरकर के जी........

जिस मौत के बाद जिन्दगी हो उस मौत को क्यूँ हम मौत कहें?
जिस मौत के बाद ही मुक्ति हो उस मौत को क्यूँ हम मौत कहें?
दु:खों से छुड़ाती है मृत्यु, ईश्वर से मिलाती है मृत्यु,
मरकर के जी.........

हे धर्मवीर! हे आर्यपुत्र! हे कुलभूषण निर्-अभिमानी!
हे वेदविज्ञ! हे जगत् रत्न! हे दयानन्द के सेनानी!
सिखलाकर जो तुम चले गये, बतलाकर जो तुम चले गये,
जनजीवन के नवजीवन की ये ही तो जरूरत होती है।।
मरकर के जी पाना ही तो....

प्रार्थना

- नाथूराम शर्मा 'शङ्कर'

।।१।।

द्विज वेद पढ़ें, सुविचार बढ़ें, बल पाय चढ़ें, सब ऊपर को,
अविरुद्ध रहें, ऋजु पन्थ गहें, परिवार कहें, वसुधा-भर को,
ध्रुव धर्म धरें, पर दु:ख हरें, तन त्याग तरें, भव-सागर को,
दिन फेर पिता, वरदे सविता, करदे कविता, कवि शंकर को।

।।२।।

विदुषी उपजें, क्षमता न तजें, व्रत धार भजें, सुकृती वर को,
सधवा सुधरें, विधवा उबरें, सकलंक करें, न किसी घर को,
दुहिता न बिकें, कुटनी न टिकें, कुलबोर छिकें, तरसें दर को,
दिन फेर पिता, वरदे सविता, करदे कविता, कवि शंकर को।

।।३।।

नृपनीति जगे, न अनीति ठगे, भ्रम-भूत लगे, न प्रजाधर को,
झगड़े न मचें, खल-खर्ब लचें, मद से न रचें, भट संगर को,
सुरभी न कटें, न अनाज घटें, सुख-भोग डटें, डपटें डर को,
दिन फेर पिता, वरदे सविता, करदे कविता, कवि शंकर को।

।।४।।

महिमा उमड़े, लघुता न लड़े, जड़ता जकड़े, न चराचर को,
शठता सटके, मुदिता मटके, प्रतिभा भटके न समादर को,
विकसे विमला, शुभ कर्म-कला, पकड़े कमला, श्रम के कर को,
दिन फेर पिता, वरदे सविता, करदे कविता, कवि शंकर को।

।।५।।

मत-जाल जलें, छलिया न छलें, कुल फूल फलें, तज मत्सर को,
अघ दम्भ दबें, न प्रपंच फबें, गुरु मान नबें, न निरक्षर को,
सुमरें जप से, निखरें तप से, सुर-पादप से, तुझ अक्षर को,
दिन फेर पिता, वरदे सविता, करदे कविता, कवि शंकर को।

इस बात का निश्चय है कि ब्रह्मचर्य्य उत्तम शिक्षा विद्या शरीर और आत्मा का बल आरोग्य पुरुषार्थ ऐश्वर्य सज्जनों का संग आलस्य का त्याग यम-नियम और उत्तम सहाय के विना किसी मनुष्य से गृहाश्रम धारा जा नहीं सकता।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.३१

www.thearyasamaj.org

आर्यजगत् के समाचार

१. आवश्यकता- आर्यसमाज सरदार पटेल मार्ग, खलासी लाइन, सहारनपुर, उ.प्र. को सम्पूर्ण वैदिक संस्कारों हेतु विद्वान्, गृहस्थी पुरोहित की आवश्यकता है। इच्छुक व्यक्ति सम्पर्क करें। सम्पर्क सूत्र- ९३५८६९७०३५

२. योग शिविर- महात्मा चैतन्यमुनि की अध्यक्षता एवं माँ सत्यप्रियायति के सान्निध्य में दिनांक ९ से १६ अप्रैल २०१७ तक नि:शुल्क योग-ध्यान-साधना शिविर का आयोजन किया गया है, जिसमें अनुभवी आचार्यों एवं महात्माओं द्वारा उपासना, प्राणायाम, योगासन आदि कराएँ जाएंगे तथा उपनिषद्-पठनपाठन की भी व्यवस्था है। शिविर में साधक अपनी शंकाओं का समाधान भी कर सकेंगे। इच्छुक साधक अपना स्थान आरक्षित करने के लिए दूरभाष संख्या ०९४१९१०७७८८ व ०९४१९१९८४५१ पर सम्पर्क करें।

३. व्यक्तित्व विकास शिविर- आर्य समाज खेड़ा अफ़गान, सहारनपुर के ११९वें वर्ष में उत्सव एवं व्यक्तित्व विकास शिविर का आयोजन चैत्र शुक्ल पंचमी व षष्ठी सम्वत् २०७४, १ व दो अप्रैल २०१७ को किया गया है। इस अवसर पर आचार्य सोमदेव आर्य अजमेर से, श्री सुमित आर्य भजनोपदेशक-लुढ़ी आदि वैदिक विद्वानों द्वारा अपने जीवन के अनसुलझे प्रश्नों का उत्तर पाकर वास्तविक सफलता की ओर बढ़ने का मार्ग प्रशस्त करें। आर्यसमाज खेड़ा अफगान द्वारा मकर संक्रान्ति पर्व पर आयोजित यज्ञ में श्री राकेश कुमार यजमान रहे तथा भजन श्री अमित आर्य द्वारा प्रस्तुत किये गये। सम्पर्क सूत्र- ९६२७१८७५४०

४. संगोष्ठी- आर्य प्रतिनिधि सभा मुम्बई के सौजन्य से, वैदिक मिशन मुम्बई के द्वारा आर्यसमाज सान्ताक्रुज मुम्बई में 'वेदों में चिकित्सा विज्ञान' विषय पर सम्मेलन (संगोष्ठी) का आयोजन दि. १८ से १९ मार्च २०१७ तक किया गया है, जिसमें हृदय रोग, मधुमेह, रक्तचाप, कैंसर एवं मानसिक रोगों के कारण, लक्षण और इनको दूर करने के उपाय आदि विषयों पर चिकित्सक अपना गहन चिन्तन एवं अनुभव से श्रोताओं को लाभान्वित करेंगे। अत: आप उपस्थित होकर स्वास्थ्य लाभ प्राप्त करें। सम्पर्क सूत्र- ०२२-२६६०२८००, २६६०२०७५

५. वार्षिक महोत्सव सम्पन्न- गुरुकुल हरिपुर, जुनानी, जि. नुआपड़ा, ओडिशा का सप्तम चतुर्वेद पारायण महायज्ञ एवं त्रिदिवसीय वार्षिक महोत्सव २८ से ३० जनवरी २०१७ को सम्पन्न हुआ। महोत्सव में ओडिशा प्रदेश के लगभग २६ जिलों से एवं झारखण्ड, दिल्ली, छत्तीसगढ़, राजस्थान, महाराष्ट्र, पं. बंगाल, आन्ध्रप्रदेश आदि प्रान्तों से साहस्राधिक संख्या में श्रद्धालु आर्यजन पधारे। यह समस्त कार्यक्रम गुरुकुल के संचालक डॉ. सुदर्शन देव आचार्य के सान्निध्य एवं गुरुकुल के समस्त हितैषियों के पुरुषार्थ से सम्पन्न हुआ।

६. आर्यसमाज की प्रगति- आर्यसमाज सांचौर, जिसकी भूमी श्री जेठूसिंह ने दान में दी थी। श्री चतुर्भुज चौबे, श्री प्रदीप आर्य, श्री देवचन्द सोनी आदि की सक्रियता से इस स्थान पर जीवन्तता आई। अब ओम जी-आबु पर्वत, दुर्गाराम आर्य आदि के सहयोग से आर्यसमाज में चारदीवारी, पानी की टंकी व भवन निर्माण का कार्य भी हो चुका है। उल्लेखनीय है कि उक्त समाज के निर्माण हेतु आचार्य धर्मवीर एवं श्री ओममुनि (प्रधान एवं मन्त्री परोपकारिणी सभा) के अथक प्रयासों की महत्वपूर्ण भूमिका रही है।

७. यजुर्वेद पारायण यज्ञ व रामकथा सम्पन्न- आर्यसमाज कुन्हाड़ी, कोटा, राज. द्वारा ७ दिवसीय यजुर्वेद पारायण यज्ञ एवं संगीतमय वाल्मीकि रामायण पर रामकथा व वेदोपदेश का कार्य ०९ से १५ जनवरी २०१७ तक आयोजित कराया गया। यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य शिवदत्त पाण्डे व गुरुकुल के वेदपाठियों के द्वारा यज्ञ कार्य सम्पन्न कराया गया। वाल्मीकि रामायण पर संगीतमय रामकथा भजनोपदेशक पं. दिनेशदत्त आर्य द्वारा सम्पन्न कराई गई। इसके अतिरिक्त आर्यसमाज के नियम सुनाने की प्रतियोगिता आयोजित की।

८. दो दिवसीय राष्ट्रकथा सम्पन्न- दि. २९ व ३० जनवरी २०१७ तक मध्यप्रदेश के शिवपुरी नगर में आचार्य सोमदेव आर्य द्वारा 'गाथा मेरे राष्ट्र की' शीर्षक की राष्ट्रकथा का आयोजन वहाँ की आर्य संस्था 'वैदिक संस्थान' और 'पब्लिक पार्लियामेन्ट' द्वारा किया गया। यह दो दिवसीय राष्ट्रकथा पाँच सत्रों में सम्पन्न हुई।

९. पाठशाला का शुभारम्भ- दि. ०८ जनवरी २०१७ से भीलवाड़ा शहर (राज.) में वैदिक प्रारम्भिक पाठशाला (मातृ-पितृ छाया) का शुभारम्भ वैदिक रीति से ऋषि उद्यान, अजमेर से पधारे उपाचार्य सत्येन्द्र जी व मुमुक्षु मुनि द्वारा ओ३म् पताका फहराकर व यज्ञानुष्ठान के द्वारा प्रारम्भ हुआ।

www.thearyasamaj.org

यहाँ कक्षा १ से ५वीं तक की शिक्षा बालकों के लिए वस्त्र, भोजन व शिक्षा पूर्णतः निःशुल्क है, हिन्दी, अंग्रेजी, संस्कृत और उर्दू भाषा का प्रारम्भिक ज्ञान प्राप्त कराया जायेगा। इस शुभ अवसर पर पधारें राजस्थान पत्रिका के मुख्य अतिथियों को ऋषि मिशन परिवार की ओर से सत्यार्थ प्रकाश भेंट किये गये। सम्पर्क- ०९३१४३९४४२१

१०. वार्षिकोत्सव सम्पन्न- आर्यसमाज रावतभाटा का ५०वाँ वार्षिक उत्सव दिनांक ११ व १२ फरवरी २०१७ को स्वर्णजयन्ती समारोह के रूप में मनाया गया। इस अवसर पर आचार्य यशवीर-गुरुग्राम भजनोपदेशक मोहित कुमार शास्त्री-बिजनौर एवं स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती-सांसद सीकर पधारे।

११. वार्षिक उत्सव सम्पन्न- दि. ७ व ८ जनवरी २०१७ को डॉ. सुदर्शनदेव आचार्य संचालक-गुरुकुल हरिपुर के सान्निध्य में व डॉ. कैलाशचन्द्र शास्त्री के ब्रह्मत्व में द्विदिवसीय वार्षिक महोत्सव अनेक उपलब्धियों के साथ सम्पन्न हुआ। महोत्सवीय अवसर पर गुरुकुल आश्रम आमसेना के सहयोग से पचास निर्धन परिवार को कम्बल वितरण किये गये।

१२. सांस्कृतिक कार्यक्रम सम्पन्न- स्वतन्त्रता सेनानी लाल छोटेलाल हाता में, लाला रामसरन छोटेलाल मेमोरियल ट्रस्ट के तत्वावधान में ट्रस्ट की संस्थापक श्रीमती कृष्णा देवी की स्मृति में प्रत्येक वर्ष की भांति मकर संक्रान्ति पर आर्यसमाज बड़गाँव के सहयोग से यज्ञ एवं विविध सांस्कृतिक कार्यक्रम के साथ सम्पन्न हुआ।

१३ यज्ञ-अभिनन्दन समारोह- महर्षि दयानन्द शिक्षण केन्द्र झज्जर में स्व. माता धापा देवी की पुण्यतिथि के अवसर पर यज्ञ, भजन, प्रवचन, अभिनन्दन समारोह का आयोजन किया गया। यज्ञ की ब्रह्मा कु. सुशीला आर्या-दिल्ली रहीं। पं. रमेशचन्द्र वैदिक ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की।

वैवाहिक

१४. वधु चाहिये- आर्य परिवार, संस्कारित, आयु-२९ वर्ष, कद- ५ फूट ७ इंच, शिक्षा- होटल मैनेजमेंट, एम.बी.ए., आई.आर.सी.टी.सी. में सेवारत, गौर वर्ण युवक हेतु आर्यसमाजी परिवार की समकक्ष संस्कारित युवती चाहिए। **सम्पर्क** - ०७०१४३३१५८४ ई-मेल- udayanpatra@gmail.com

१५. वधु चाहिये- आर्य परिवार, संस्कारित, आयु-२७ वर्ष, कद- ५ फूट १० इंच, शिक्षा- बी.टेक., साफ्टवेयर कम्पनी में सेवारत, गौर वर्ण युवक हेतु आर्यसमाजी परिवार की समकक्ष संस्कारित युवती चाहिए। **सम्पर्क** - ०९८४९०९५१५०

पाठकों की प्रतिक्रिया

आदरणीय सम्पादक जी! जनवरी प्रथम २०१७ का अंक मिला। श्री गंगाप्रसाद उपाध्याय का लेख 'पितृपक्ष' पढ़ा। इस अन्ध परम्परा से हमारा टापू भी ग्रसित है। आर्यसमाज की तीन संस्थायें हैं। जन्म के आधार पर और पौराणिक संस्थाओं के तले काफी समाज संगठित हैं। इस पुरानी परम्परा को अपना परम कर्त्तव्य मानते हैं। बड़े लोग करते आये हैं तो हमें भी करना ही है। जीवित पितरों के लिए आश्रमों की कमी नहीं है। काफी लोग इस विचार से बन्धे हैं कि उनका दिया अन्न-जल और फल-फूल उन्हें मिल ही जाता है। वहाँ पर तो ऐसी सुविधा है कि रेडियो और टी.वी. पर अपने विचार खुल्लमखुल्ला व्यक्त कर सकते हैं। भेड़ के समान सिर झुकाये खाड़ी में गिरते जा रहे हैं।

एक पंडित ने जोरदार शब्दों में कहा कि श्राद्ध में दिया अन्न अवश्य पितरों को मिलता है। उनका जन्म किसी भी योनि में क्यों न हुआ हो। उनका कहना है कि हमारे बच्चे या परिवार दूसरे देशों में बसे हैं या पढ़ते हैं, उन्हें पैसे की आवश्यकता है तो हम उन्हें भेजते हैं। जैसे हमारे देश की मुद्रा रुपया है और जहाँ पैसे भेजना है वहाँ की मुद्रा डालर या पाउण्ड है, हम बैंक द्वारा रुपया ही भेजते हैं और जहाँ वे रहते हैं, वहाँ डालर या पाउण्ड चलते हैं, उन्हें पैसे वहाँ की मुद्रा में मिल जाते हैं तो वैसे ही पितरों को जो हम अन्न-जल या पकवान अलग निकालते हैं तो यदि हमारे पितर का जन्म बकरी की योनि में, साँप की योनि में या अन्य जीव जन्तुओं में हुआ हो तो उनके खाने की वस्तुएँ बदलकर वह अन्न-जल उन्हें मिल जाता है। यह पंडित जी का दावा है। कहा गया है कि हम भी किसी के पूर्वज रहे होंगे, पर हम कभी यहाँ के घर परिवार और कुटुम्ब को छोड़कर नहीं गये। हमें जाना चाहिए था। अनुभव होना चाहिए था। कुछ नहीं जानते हैं। पुरानी परम्परा को निभाते-निभाते कितना पिछड़ रहे हैं, सोचने की बात है। और एक बात है कि भगवान् हिन्दू पितरों को एक समय में छोड़ते हैं। मुसलमान के पितर को किसी दूसरे महीने में और ईसाई को किसी और महीने में। भगवान् के दरबार में भी ऐसे कटघरे हैं पितरों के निवास के लिए। शोचनीय बात है। - **सोनालाल नेमधारी**

ऋषि मेले पर आयोजित गुरुकुल सम्मेलन

आचार्य ज्ञानचन्द्र आर्य (अध्यापक- गुरुकुल ऋषि उद्यान, अजमेर) एवं
आचार्य सत्यजित् आर्य (आचार्य-गुरुकुल ऋषि उद्यान, अजमेर)

आचार्य वेदनिष्ठ आर्य (गुरुकुल ऋषि उद्यान, अजमेर)

www.thearyasamaj.org

आर जे/ए जे/80/2015-2017 तक | प्रेषण : २८ फरवरी, २०१७ | आर.एन.आई. ३९५९/५९

बलिदान दिवस ६ मार्च

अमर बलिदानी

धर्मवीर पं. लेखराम

यह चित्र गुरुकुल करतारपुर, पंजाब के कार्यालय में लगा हुआ है। करतारपुर ऋषि दयानन्द के गुरु स्वामी विरजानन्द दण्डी जी की जन्मस्थली भी है। परोपकारिणी सभा के सम्मानित विद्वान् एवं सदस्य आचार्य पं. विरजानन्द दैवकरणि जी द्वारा सभा को प्राप्त हुआ है।

प्रेषक:
परोपकारिणी सभा
दयानन्द आश्रम, केसरगंज,
अजमेर (राजस्थान) ३०५००१

सेवा में,